शंका समाधान

(भाग-5)

-: लेखक-संग्राहक :-

परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय

रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

शंका-समाधान

भाग-5

लेखक-संग्राहक

परम शासन प्रभावक, व्याख्यान वाचस्पति
दीक्षा युग प्रवर्तक पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजय
रामचंद्रसूरीश्वरजी म.सा. तेजस्वी शिष्यरत्न बीसवीं सदी
के महान् योगी, भावाचार्य तुल्य पूज्यपाद पंन्यासप्रवर
श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य के
कृपापात्र चरम शिष्यरत्न, मरुधररत्न, गोड़वाड़ के गौरव,
जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर पूज्य आचार्यदेव
श्रीमद् विजय **रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.**

261

प्रकाशन

दिव्य सन्देश प्रकाशन
C/o. सुरेन्द्र जैन, Office No. 304, 3rd Floor,
बे.व्यु. बिल्डींग, विंग-ईस्ट बे,
डॉ.एम.बी. वेलकर स्ट्रीट, कालबादेवी, मुंबई-400 002.
Cell 84 84 84 84 51 (only whatsapp)

आवृत्ति : प्रथम • **मूल्य :** 160/- रुपये • **प्रतियाँ :** 1500
विमोचन तिथि : 25-12-2025
विमोचन स्थल : आराधना भवन, सादडी, (राज.)
• **Website :** Divyasandesh.online

आजीवन सदस्य योजना

आजीवन सदस्यता शुल्क - 4000/- रु.

• आप जैन धर्म के रहस्य, जैन इतिहास, जैन तत्त्वज्ञान, जैन आचार मार्ग, प्रेरणादायी कथाएँ आदि का अध्ययन करना चाहते हों तो आज ही आप **दिव्य संदेश प्रकाशन** मुम्बई की आजीवन सदस्यता प्राप्त कर लें। सदस्य बनते ही अध्यात्मयोगी निःस्पृह शिरोमणि स्व. पूज्यपाद पंन्यासप्रवर **श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्यश्री** एवं उन्हीं के चरम शिष्यरत्न प्रवचन प्रभावक परम पूज्य ***आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.*** सा. द्वारा लिखित उपलब्ध 7 पुस्तकें दी जाएंगी और **अर्हद् दिव्य संदेश** मासिक तथा भविष्य में हिन्दी भाषा में प्रकाशित पुस्तकें (Open Book Exam साधु–साध्वी उपयोगी पुस्तकें एवं पुनः मुद्रित पुस्तकों को छोड़कर) घर बैठे प्राप्त होगी। आप आजीवन सदस्यता शुल्क मुंबई या बैंगलोर के पते पर दिव्य संदेश प्रकाशन-मुंबई के नाम से चैक व ड्राफ्ट से भेजें।

प्राप्ति स्थान

1. चेतन हसमुखलालजी मेहता
भायंदर (M.S.)
M. 9867058940

2. प्रवीण गुरुजी
C/o. श्री आत्म कमल लब्धिसूरि जैन पुस्तकालय
श्री आदिनाथ जैन टेंपल,
चिकपेठ, बेंगलोर-560 053.
M. 9036810930

3. चंदन एजेन्सी
607, चीरा बाजार,
मुंबई-400 002.
M.9820303451

आजीवन सदस्यता शुल्क
Rs. 4000/- भिजवाने का पता एवं पुस्तक-प्राप्ति-स्थान :

(1) दिव्य संदेश प्रकाशन
C/o. सुरेन्द्र जैन, Office No. 304, 3rd Floor, बे व्यु बिल्डिंग,
विंग-ईस्ट बे, डॉ. एम.बी. वेलकर स्ट्रीट, कालबादेवी,
मुंबई-400 002. Mobile : 84 84 84 84 51 (only whatsapp)

(2) प्रकाश बड़ोल्ला,
52, 3rd Cross, शंकरमट रोड, शंकरपुरा,
बैंगलोर-560 004. M. 8971230600

प्रकाशक की कलम से...

मरुधर रत्न, गोड़वाड़ के गौरव, मधुर-प्रवचनकार एवं जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर **पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** संयम जीवन के स्वर्णिम वर्ष में मंगल प्रवेश की अनुमोदनार्थ उन्हीं के द्वारा हिन्दी भाषा में आलेखित **261वीं पुस्तक `शंका-समाधान-भाग-5'** का प्रकाशन करते हुए हमें अत्यंत ही हर्ष हो रहा है ।

स्वाध्याय के पाँच प्रकार में दूसरा भेद है—पृच्छना !

पृच्छना अर्थात् अपनी जिज्ञासाओं का समाधान करना ।

अपने भीतर रही शंकाओं का समाधान हो जाने पर अपना ज्ञान सुदृढ़ हो जाता है ।

प्रवचन में कई श्रोता मूक प्रेक्षक बनकर सिर्फ प्रवचन का श्रवण करते हैं, जबकि कई श्रोता अपने भीतर उठती शंकाओं का प्रश्न पूछकर समाधान प्राप्त करते हैं ।

मरुधररत्न पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा. प्रति वर्ष चातुर्मास दरम्यान सप्ताह में एक दिन `प्रश्नोत्तरी' प्रवचन भी रखते हैं । उस प्रवचन दरम्यान वे श्रोताओं के दिलो-दिमाग में रही शंकाओं का पूर्ण समाधान भी देते हैं ।

प्रश्नोत्तरी प्रवचन खूब रोचक होते हैं । क्योंकि प्रतिदिन प्रवचन नियत विषय पर होता है; जबकि प्रश्नोत्तरी में विषय की विविधता होती है ।

प्रस्तुत पुस्तक में पूज्यश्री ने आबाल-गोपाल श्रोताओं लोगों के मन-मस्तिष्क में उठती शंकाओं का यथाशक्य समाधान किया है ।

इसके पूर्व पूज्यश्री की शंका-समाधान संबंधी चार पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं ।

हमें पूर्ण विश्वास है कि पूर्व प्रकाशनों की भाँति यह प्रकाशन भी पाठकों को लिए खूब उपयोगी सिद्ध होगा ।

Introduction

लेखक-संग्राहक का संक्षिप्त-जीवन परिचय

गृहस्थ नाम	: राजु (राजमल चोपड़ा)
माता का नाम	: चंपाबाई
पिता का नाम	: छगनराजजी गेनमलजी चोपड़ा
जन्मभूमि	: बाली (राज.)
जन्म तिथि	: भादो सुद-3, संवत् 2014 दि. 16-9-1958
बचपन में धार्मिक अभ्यास	: पंच प्रतिक्रमण-नवस्मरण आदि
ब्रह्मचर्यव्रत स्वीकार	: 18 जून 1974
व्यावहारिक अभ्यास	: 1st year B.Com. (पार्श्वनाथ उम्मेद कॉलेज फालना-राज.)
दीक्षा दाता	: पू.पं. श्री हर्षविजयजी गणिवर्य
गुरुदेव	: अध्यात्मयोगी पू. पंन्यास **श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य**
दीक्षा दिन	: माघ शुक्ला 13, संवत् 2033 दि. 2-2-1977
समुदाय	: शासन प्रभावक पू.आ. **श्री रामचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.**
दीक्षा दिन विशेषता	: भारत भर में लगभग 50 ऊपर दीक्षाएँ
108 मुमुक्षु वरघोड़ा	: 9 जनवरी 1977, मुंबई
दीक्षा स्थल	: न्याति नोहरा-बाली राज.
दीक्षा समय उम्र	: 18 वर्ष
बड़ी दीक्षा	: फाल्गुन शुक्ला 12, संवत् 2033
बड़ी दीक्षा स्थल	: घाणेराव (राज.)
प्रथम चातुर्मास	: संवत् 2033 पाटण पू.पं. श्री हर्षविजयजी के सान्निध्य में ।

- **अभ्यास :** प्रकरण, भाष्य, 6 कर्मग्रंथ, कम्मपयडी, पंचसंग्रह, न्याय, काव्य, कोश, संस्कृत-प्राकृत व्याकरण, संस्कृत-प्राकृत साहित्य वाचन, ज्योतिष, आगम वाचन आदि ।
- **भाषा बोध :** हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती, राजस्थानी, संस्कृत, प्राकृत, मराठी आदि ।
- **प्रथम प्रवचन प्रारंभ :** फागुन सुदी 14, संवत् 2034 पाटण (गुजरात) ।
- **चातुर्मासिक प्रवचन प्रारंभ :** बाली संवत् 2038 ।

- **विहार क्षेत्र :** राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, कर्णाटक तामिलनाडू आदि ।
- **पादविहार :** लगभग 49,000 कि.मी. ।
- **अंजन शलाका एवं प्रतिष्ठायें :** मंड्या (कर्णाटक) वलवण, कामसेट, भायंदर (महा.) राजपुरा, भोपाल सागर, राजसमंद आदि में अंजनशलाका प्रतिष्ठा, जयपुर (राज.), बेंगलोर में 3 गृह जिनालय, पूना तथा कोयम्बत्तुर में एक-एक गृह जिनालय।
- **(छ'री पालित संघ में मार्गदर्शन-प्रवचन) :** बरलूट से शत्रुंजय, गोदन से जैसलमेर, वल्लभीपुर से पालीताणा, लुणावा से राणकपुर पंचतीर्थी ।
- **छ'री पालक निश्रादाता :** उदयपुर से केशरियाजी, गिरधरनगर से शंखेश्वर, धूलिया से नेर, कराड़ से कुंभोज, सोलापुर से बार्शी, भिवंडी से महावीर धाम, कर्जत से मानस मंदिर, हस्तगिरि से शत्रुंजय होकर गिरनार, शत्रुंजय बारह गाऊ, सेवाडी से राणकपूर पंचतीर्थी, बेंगलोर से सुशीलधाम, कोयम्बत्तूर से अव्वलपुंदरी, उदयपुर से दयालशा किल्ला ।
- **प्रथम पुस्तक आलेखन :** **``वात्सल्य के महासागर''** वि.सं.संवत् 2038 ।
- **अद्यावधि प्रकाशित पुस्तकें :** 262 ।
- **शिष्य-प्रशिष्य : स्व.मु. श्री उदयरत्नविजयजी म.,**
  स्व.मुनि श्री केवलरत्नविजयजी म.,
  स्व.मुनि श्री कीर्तिरत्नविजयजी म.,
  मुनि श्री प्रशांतरत्नविजयजी म., मुनि श्री शालिभद्रविजयजी म.,
  मुनि श्री स्थूलभद्रविजयजी म., स्व. मुनि श्री यशोभद्रविजयजी म.,
  मुनि श्री विमलपुण्यविजयजी म., मुनि श्री निर्वाणभद्रविजयजी म.
  मुनि श्री पुण्यबलविजयजी म.
- **उपधान निश्रा दाता :** कुर्ला, धुले, येरवडा, आदीश्वर धाम (दो), कर्जत, विक्रोली, मोहना, पालीताणा (दो बार), सेसली, कीर्तिस्तंभ (घाणेराव), नासिक, सुशीलधाम (बेंगलोर), मैसूर, महावीर धाम (मुंबई), लोढा धाम, सुखधाम (राज.), महावीर जैन विद्यालय-उदयपुर ।
- **गणि पदवी :** वैशाख वदी-6, विक्रम संवत् 2055, दि.7-5-1999 चिंचवड गाँव, पूना ।
- **पंन्यास पदवी :** कार्तिक वदी-5, विक्रम संवत् 2061,
  दि.2-12-2004 श्रीपालनगर, मुंबई ।
- **आचार्य पदवी :** पोष वदी-1, विक्रम संवत् 2067, दि. 20-1-2011 थाणा ।

गोडवाड के गौरव एवं मरुभूमि के रत्न
परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय श्री
रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा. का

संक्षिप्त परिचय

परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय श्री रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा. गोड़वाड़ के गौरव, मरुभूमि के रत्न, बाली संघ की शान, चोपड़ा कुल के भूषण तथा पिता श्रीमान् छगनराजजी एवं माताजी श्रीमती चंपाबाई के कुल- दीपक हैं। इनका सांसारिक नाम राजमल चोपड़ा था, परन्तु इन्हें 'राजू' के लाड़ले नाम से पुकारा जाता था। आज भी वे गोड़वाड़ की जनता के लिए तो **'राजू महाराज'** के नाम से ही प्रख्यात है।

पूज्यश्री का जन्म भादों सुदी 3 दिनांक 16-9-1958 के शुभ दिन हुआ था। माता का नाम चंपाबाई और पिता का नाम छगनराजजी चोपड़ा था।

इनकी प्रारंभिक शिक्षा हायर सैंकडरी तक बाली में तथा 1st Year, B.Com. का शिक्षण S.P.U. College फालना में हुआ था। राजू को धार्मिक शिक्षण व संस्कार मिले थे श्रीमान् आनंदराजजी गेमावत से। बचपन से ही सूक्ष्म व तीक्ष्ण प्रज्ञा के कारण व्यावहारिक शिक्षण में उनका हमेशा प्रथम स्थान रहा था। ई. सन् 1975 में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय-बाली में 600 विद्यार्थियों के बीच राजू को **'सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी'** का पारितोषिक मिला था। जिला-स्तरीय निबंध-वक्तृत्व आदि स्पर्धाओं में भी विशेष स्थान प्राप्त किया था। इसके साथ ही धार्मिक पाठशाला में भी

हमेशा प्रथम स्थान रहा था। तत्त्वज्ञान विद्यापीठ-पूना की प्रारंभिक परीक्षा में भारत भर में पहला स्थान प्राप्त किया था।

बचपन में राजू के दिल में महत्त्वाकांक्षा थी **'आगे चलकर C.A. करना, उद्योगपति या राजनेता बनना।'** परंतु अपने ही पड़ौसी पूर्ण स्वस्थ भीकमचंदजी बद्दाजी परमार की अकालमृत्यु तथा नदी के पानी में डूबने से हुई दो बाल मित्रों की करुण मौत के दृश्यों को देखकर राजू को आयुष्य की क्षणभंगुरता के प्रत्यक्ष दर्शन हुए और उसके मन में वैराग्य भाव का बीजारोपण हो गया। अध्यात्मयोगी पूज्य गुरुदेवश्री के वचनामृत, सत्संग एवं उनके द्वारा प्रदत्त **'शांतसुधारस'** की अनित्य एवं अशरण भावना के हिन्दी विवेचन के स्वाध्याय तथा **'धर्मदेशना'** पुस्तक में वर्णित चार गतियों के भयंकर दुःखों का वर्णन पढ़ने से राजू की वैराग्य भावना और दृढ़ बनती गई।

एक वर्ष के कॉलेज शिक्षण दरम्यान भी राजू की वैराग्य भावना लेश भी खंडित नहीं हुई, बल्कि कॉलेज के साथ पूज्य गुरुदेवश्री के समागम से उसकी वैराग्य भावना तीव्र-तीव्रतर होती गई।

वि.सं. 2030 में बाली में मुमुक्षु कमलाबहन की भागवती दीक्षा का महोत्सव चल रहा था। रात्रि में संघ की ओर से आयोजित मुमुक्षु के बहुमान समारोह में राजू भी उपस्थित था। मुमुक्षु के वैराग्यपूर्ण संवाद आदि को सुनकर राजू के मन में तीव्र वैराग्य भाव पैदा हुआ।

राजू ने अपने दिल की बात **पू.मुनि श्री प्रद्योतनविजयजी म.** को कही। पूज्य मुनिराजश्री ने राजू की भावना को प्रोत्साहित किया और इस संदर्भ में विशेष मार्गदर्शन हेतु राजू को घाणेराव में बिराजमान **अध्यात्मयोगी निःस्पृहशिरोमणि पूज्यपाद पंन्यासप्रवर श्री भद्रंकरविजयजी म.सा.** के पास भेजा।

अध्यात्मयोगी महापुरुष के दर्शन-वंदन कर राजू का हृदय खुशी से नाच उठा। मानवजीवन को सफल बनाने एवं

संयम की निर्मल साधना हेतु पूज्य पंन्यासजी म.सा. ने राजु को सुंदर मार्गदर्शन दिया।

धार्मिक पाठशाला में राजु ने पंच प्रतिक्रमण आदि का अभ्यास तो किया ही था, इसके साथ **प.पू. विद्वद्वर्य मुनि श्री जितेन्द्रविजयजी म.सा.** एवं **प.पू. विद्वद्वर्य मुनि श्री गुणरत्नविजयजी म.सा.** की तारक निश्रा में आयोजित `ग्रीष्मकालीन आध्यात्मिक ज्ञान शिविर में दो बार भाग लेकर जैनदर्शन के तत्त्वज्ञान, आवश्यक क्रिया के सूत्र रहस्य, जैन इतिहास, जैन भूगोल, कर्मवाद आदि का ज्ञान प्राप्त किया। इसके फलस्वरूप राजू की वैराग्य भावना और दृढ़ बनी।

यद्यपि दीक्षा के लिए घर में अनुकूल वातावरण नहीं था, फिर भी दृढ़ मनोबल से वैराग्यमार्ग में आनेवाले अवरोधों का सामना किया, जिसके फलस्वरूप आखिर में राजु के माता-पिता ने पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में रहने के लिए अपनी सम्मति प्रदान की।

वि.सं. 2031 व 2032 में पूज्य गुरुदेवश्री के बेड़ा एवं लुणावा चातुर्मास में साथ में रहकर ज्ञानाभ्यास किया और संयमजीवन की ट्रेनिंग ली। डेढ़ वर्ष के अपने मुमुक्षु पर्याय में उपधान तप, वर्धमान तप का पाया एवं 12 ओली, 20 दिवसीय एक लाख नवकार जापसाधना, पैदल-विहार के साथ साथ चार प्रकरण, तीन भाष्य, छह कर्मग्रंथ, तत्त्वार्थ सूत्र, वीतराग स्तोत्र, योगशास्त्र, पंच सूत्र, संस्कृत की दो बुक आदि का भी सुंदर अभ्यास किया।

राजु के दिल में उत्कट वैराग्य था तो दूसरी ओर माता-पिता के अन्तर्मन में रहे मोह के बंध को तुड़वाना सरल काम नहीं था, इस भगीरथ कार्य में सफलता पाने के लिए राजु ने भी दृढ संकल्प किया था, मोह के बंधन को तोड़ने में राजु के सफल मार्गदर्शक बने थे **अध्यात्मयोगी पूज्यपाद पंन्यासप्रवर श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य।** उनका मार्गदर्शन और आशीर्वाद न होता तो शायद राजु को सफलता नहीं मिल पाती।

दि. 6 जनवरी 1977 के शुभ दिन मुमुक्षु राजु अपने पिताजी **शा छगनराजजी चोपड़ा** और पंडितजी हिम्मतभाई (जो बाली में साधु-साध्वीजी को संस्कृत-प्राकृत और न्याय सीखाते थे।) के साथ बाली से बस द्वारा लुणावा आए। उस समय अध्यात्मयोगी **पूज्य पंन्यासप्रवर श्री भद्रंकरविजयजी म.सा.** लुणावा में विराजमान थे।

वंदनविधि और औपचारिक बातचीत के बाद मुमुक्षु राजु के पिताजी का एक ही सुर था-कि राजु की दीक्षा 1-2 वर्ष बाद की जाय।

उस समय भविष्यदृष्टा पूज्यश्री ने अपना मौन तोड़ते हुए कहा, **'राजु अब तैयार हो चुका है, अब ज्यादा विलंब करने जैसा नहीं है।'**

महापुरुष के थोड़े से शब्दों में भी अपूर्व शक्ति रही होती है। वे बोलते कम हैं और काम ज्यादा होता है।

बस, अध्यात्मयोगी युगमहर्षि महापुरुष के अल्प शब्दों ने छगनराजजी के मन पर जादुई असर किया और उन्होंने परिवार के अन्य किसी भी सदस्य से बातचीत किये बिना तत्काल ही पूज्यश्री को अपने सुपुत्र की भागवती-दीक्षा के लिए अपनी सहमति प्रदान कर दी ! यह था पुण्यपुरुष के अल्पशब्दों का गजब का प्रभाव ! और उसी समय पूज्य गुरुदेवश्री ने दीक्षा का मुहूर्त भी प्रदान कर दिया। माघ शुक्ला त्रयोदशी 2033 दि. 2-2-1977 के शुभ दिन मुमुक्षु राजु की भागवती दीक्षा निश्चित की गई।

पूज्य गुरुदेवश्री की असीम कृपा से जन्मभूमि बाली में **वर्धमान तपोनिधि पू. पंन्यासप्रवर श्री हर्षविजयजी म.** के वरदहस्तों से मुमुक्षु ने भागवती दीक्षा अंगीकार की। वे अध्यात्मयोगी पूज्य गुरुदेवश्री के अंतिम शिष्य बने और वे **मुनिश्री रत्नसेनविजयजी म.** के नाम से पहचाने जाने लगे।

दीक्षा अंगीकार करने के बाद परम तपस्वी **पू.पं. श्री हर्षविजयजी म.सा.** के सान्निध्य में लगभग 3 वर्ष तक

पाटण में ग्रहण व आसेवन शिक्षा प्राप्त की। संस्कृत-प्राकृत व्याकरण के साथ न्याय, काव्य, प्रकरण ग्रंथ, कर्मग्रंथ, विविध दर्शन, जैन-आगम आदि का गहन अभ्यास किया।

प्रभावक प्रवचन शैली : विक्रम संवत् 2033 में उनकी भागवती दीक्षा हुई। ठीक 13 मास के बाद वर्धमान तपोनिधि **पूज्य पंन्यासप्रवर श्री हर्षविजयजी म.सा.** की शुभ निश्रा में वि.सं. 2034 फाल्गुण शुक्ला चतुर्दशी के दिन पाटण में उनका सबसे पहला प्रवचन हुआ। पूज्य गुरुदेवश्री के शुभाशिष उनके साथ थे, अतः वह प्रवचन अत्यंत ही प्रभावक रहा। उसके बाद वि.सं. 2036 से उनकी पर्युषण प्रवचनमाला एवं वि.सं. 2038 में बाली में उनके चातुर्मासिक प्रवचन प्रारंभ हो गए। वह प्रवचन-गंगा आज भी निरंतर बह रही है।

श्रोताओं की अंतरंग योग्यता को परखकर, शास्त्रीय पदार्थ को खूब सरल व रोचक शैली में समझाने की कला उन्हें हासिल हुई है। इसके द्वारा वे अनेक के जीवन-परिवर्तन में निमित्त बने हैं।

प्रभावक साहित्य–सर्जन : वि.सं. 2038 में पूज्य मुनिश्री ने अपने स्वर्गस्थ गुरुदेवश्री के जीवन-परिचय के रूप में **'वात्सल्य के महासागर'** पुस्तक का आलेखन किया था, तब से उनकी लेखन-यात्रा निरंतर जारी है। उनकी लेखनी में सरलता है, रोचकता है और धाराप्रवाह है। उनके द्वारा आलेखित साहित्य पाठकों के अन्तर्मन को इस प्रकार छू लेता हैं कि एक बार पुस्तक प्रारंभ करने के बाद उसे छोड़ने का मन ही नहीं होता है। साहित्य के विविध विषयों पर उनकी लेखनी चली है, जो आज भी गतिमान है।

परम पूज्य उपकारी गुरुदेवश्री के कालधर्म के बाद पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य भगवंत, एवं समतानिधि पू. पंन्यासश्री वज्रसेनविजयजी म.सा. की आज्ञानुसार पाली, रतलाम, अहमदाबाद, पिंडवाड़ा, उदयपुर, जामनगर, गिरधरनगर,

सुरेन्द्रनगर, थाणा, कल्याण, दादर, सायन, धूलिया, कराड, चिंचवड़ स्टे., भायंदर, पूना, येरवड़ा, कालाचौकी (मुंबई) श्रीपालनगर मुंबई, कर्जत, (जिला रायगढ़ M.S.), भिवंडी, रोहा, भायंदर, पालीताणा, बाली, घाणेराव, नासिक, बेंगलोर, मैसूर, कोयमत्तूर, चैन्नई, बीजापूर (कर्णाटक), भायंदर आदि क्षेत्रों में चातुर्मास कर दैनिक व जाहिर प्रवचनों के माध्यम से अनेकविध आराधनाएँ कराई हैं।

पूज्य मुनिश्री की प्रेरणा से थाणा में 109 सिद्धितप व 160 सामुदायिक वर्षीतप की आराधनाएँ हुई थीं।

अपनी प्रवचन-कुशलता के साथ-साथ मात्र 24 वर्ष की उम्र में **'वात्सल्य के महासागर'** से प्रारंभ हुई उनकी लेखनी अबाधगति से आगे बढ़ रही है। पूज्य आचार्यजी म.सा. की अभी तक 262 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं और अभी भी वह सर्जन-यात्रा चालू ही है।

तप-साधना में पूज्य मुनिश्री अपने 50 वर्ष के संयमपर्याय में लगभग नियमित एकाशना करते हैं और प्रत्येक सुद पंचमी को ज्ञान की आराधना निमित्त उपवास करते हैं।

पिंडवाड़ा, गिरधरनगर, थाणा, कल्याण, दादर, सायन, धूलिया, कराड़, भायंदर, बेंगलोर, चिंचवड़ स्टे. पूना, येरवडा, श्रीपालनगर तथा भिवंडी, बेंगलोर, कोयमत्तूर आदि में वाचना-श्रेणी का आयोजन कर सैकड़ों नवयुवकों के जीवन को संस्कारित किया है।

'अर्हद् दिव्य संदेश' मासिक के माध्यम से पूज्य मुनिश्री के चिंतनात्मक लेख-प्रवचन-उपदेश पिछले 38 वर्षों से नियमित प्रकाशित हो रहे हैं।

अनेक को धर्मबोध देने वाले **पूज्य मुनिश्री रत्नसेनविजयजी म.सा.** को शासनप्रभावक प्रशांतमूर्ति पूज्यपाद **गच्छाधिपति आचार्यदेव श्रीमद् विजय महोदयसूरीश्वरजी म.सा.** की आज्ञानुसार वैशाख वदी 6, वि.सं. 2055 को चिंचवड़ में गणिपद से अलंकृत किया गया और शासनप्रभावक पूज्य

गच्छाधिपति आचार्यदेव श्रीमद् विजय हेमभूषणसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुसार कार्तिक वदी 5 वि.सं. 2061 के शुभ दिन श्रीपालनगर मुंबई में पंन्यास पद से अलंकृत किया गया था।

अत्यंत ही सरल, रोचक व प्रभावपूर्ण प्रवचनशैली के द्वारा वे श्रोताओं के अन्तर्मन को छू लेते हैं। उनके उपदेश से अनेक भूले भटके युवानों को सही दिशा प्राप्त हुई है।

वाचनाश्रेणी आदि के माध्यम से उन्होंने तरुण पीढ़ी के जीवन को सुसंस्कारों से सुवासित किया है।

वे कुशल विवेचनकार भी हैं : सामायिक सूत्र, चैत्यवंदन सूत्र, आलोचना सूत्र, श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र, आनंदघन चौबीसी, आनंदघनजी के पद, पू. यशोविजयजी म. की चौबीसी, अमृतवेल की सज्झाय, समकित के 67 बोल की सज्झाय आदि पर उन्होंने खूब सुंदर व सरलशैली में विवेचन भी किया है।

वे कुशल अवतरणकार भी हैं : जैन रामायण और महाभारत पर दिए गए उनके, जाहिर प्रवचनों का उन्होंने स्वयं ने आलेखन भी किया है। तथा अपने गुरुदेव एवं प्रगुरुदेव के प्रवचनों का सुंदर शैली में अवतरण भी किया है।

वे कुशल भावानुवादक हैं : शांत सुधारस, श्राद्धविधि, गुणस्थानक क्रमारोह, एक से छह कर्मग्रंथ, तीन भाष्य, जीवविचार, नवतत्त्व, दंडक, लघु संग्रहणी आदि प्राचीन ग्रंथों का उन्होंने सरस भावानुवाद एवं विवेचन भी किया है।

वे प्रभावक कथा-आलेखक भी हैं : कर्मन् की गत न्यारी (महाबल-मलयासुंदरी चरित्र) आग और पानी (समरादित्य चरित्र) कर्म को नहीं शर्म (भीमसेन चरित्र) तब आँसू भी मोती बन जाते हैं (सागरदत्त चरित्र) कर्म नचाए नाच (तरंगवती चरित्र) जैसे

अनेक चरित्रग्रंथों की धारावाहिक कहानी का उपन्यास शैली में आलेखन भी किया है ।

वे प्रसिद्ध चिंतक भी हैं : प्रवचन मोती, प्रवचन रत्न, चिंतन मोती, प्रवचन के बिखरे फूल, अमृत की बूँदें, युवा चेतना जैसे प्रकाशनों में उनके हृदयस्पर्शी चिंतन भी प्रस्तुत हुए हैं ।

वे कुशल प्रवचनकार भी हैं : सफलता की सीढ़ियाँ, श्रावक कर्तव्य, श्रावकाचार प्रवचन, नवपद प्रवचन, प्रवचन वर्षा, प्रवचन-धारा, आनंद की शोध, पांच प्रवचन, जैन पर्व प्रवचन, प्रेरक प्रवचन, गुणानुवाद आदि में उनके प्रवचनों का सुंदर संकलन है ।

वे प्रसिद्ध कहानीकार भी हैं : प्रिय कहानियाँ, मनोहर कहानियाँ, ऐतिहासिक कहानियाँ, मधुर-कहानियाँ, प्रेरक कहानियाँ, सरस कहानियाँ, सरल कहानियाँ, आदर्श कहानियाँ आदि में उन्होंने अत्यंत ही सुंदर हृदयस्पर्शी कहानियों का आलेखन किया है ।

जैनशासन के ज्योतिर्धर, महान् ज्योतिर्धर, तेजस्वी सितारें, गौतमस्वामी-जंबुस्वामी, महावीर प्रभु की पट्टधर परंपरा भाग 1 से 4 आदि में उन्होंने जैनशासन के महान् प्रभावक पुरुषों के जीवनचरित्रों का सुंदर आलेखन भी किया है ।

वे कुशल संपादक भी हैं : युवाचेतना विशेषांक, जीवननिर्माण विशेषांक, आहारविज्ञान विशेषांक, श्रावकाचार विशेषांक, श्रमणाचार विशेषांक, सन्नारी विशेषांक, राजस्थान तीर्थ विशेषांक, दीक्षा विशेषांक, तीर्थयात्रा विशेषांक जैसे अनेक विशेषांकों का सफल संपादन भी किया है ।

उनके उपदेश से अनेक संघों में अनेकविध तपश्चर्याएँ, अनेकविध भाव-यात्राएँ, तप-जप आदि अनुष्ठान, उपधान, अंजन शलाका, दीक्षाएं, प्रतिष्ठा, छ'री पालित संघ, उद्यापन, जीवित महोत्सव

आदि संपन्न हुए हैं । उनके द्वारा आलेखित साहित्य भारत भर के हिन्दीभाषी क्षेत्रों में खूब चाव से पढ़ा जाता है ।

सन्मार्ग की राह बतानेवाला उनका साहित्य अनेक के लिए सफल मार्गदर्शक बना है । उनका साहित्य नूतन प्रवचनकारों के लिए भी खूब उपयोगी बना है ।

समुदाय के ज्येष्ठ पूज्यों के निर्णयानुसार एवं निःस्पृह शिरोमणि विद्वद्वर्य **पू.पंन्यासप्रवर श्री वज्रसेनविजयजी गणिवर्य श्री** की आज्ञा एवं आशीर्वाद से कोंकण शत्रुंजय थाणा तीर्थ में पौष वद-1, वि.सं. 2067, दि. 20-1-2011, गुरुवार के शुभदिन गुरु पुष्यामृतसिद्धियोग में आठ दिन के ऐतिहासिक महामहोत्सव के साथ शासनप्रभावक **पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजय कनकशेखरसूरीश्वरजी म.सा.** के वरद हस्तों से **प.पू. मरुधररत्न गोड़वाड़ के गौरव पूज्य पंन्यासप्रवर श्री रत्नसेनविजयजी म.सा.** को **`गुरु गौतम नगरी** (शिवाजी मैदान) में हजारों की जनमेदिनी के बीच **आचार्य पद** पर प्रतिष्ठित किया गया, तब से वे **पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** के नाम से जाने-पहिचाने लगे हैं ।

आचार्य पदारूढ़ होने के बाद पूज्यश्री के वरद हस्तों से जैन-शासन की सुंदर आराधना-प्रभावना हो रही है ।

प्रश्न 1 :– सिर्फ दही में बने थेपले कितने दिन चलते हैं ?

उत्तर :– तीन दिन और दो रात ।

प्रश्न 2 :– भूमि पर नीचे गिरे फूल प्रभु को वापस चढा सकता हैं ?

उत्तर :– नहीं ।

प्रश्न 3 :– प्रभु पूजा के पुराने कपडे सामायिक में उपयोग में ले सकते हैं ?

उत्तर :– पुराने कपडे यदि सूती हो तो सामायिक में उपयोग कर सकते हैं, परंतु रेशमी हो या रंगीन हो तो नहीं । उन्हें अन्य किसी गृहकार्य में उपयोग में लेने में कोई बाध नहीं है ।

प्रश्न 4 :– मंदिर में प्रवेश व बाहर निकलते समय घंट बजाने की विधि हैं ?

उत्तर :– प्रभु दर्शन का आनंद व्यक्त करने के लिए मंदिर प्रवेश समय घंट बजाते है ।

'मुझे दर्शन हुए' इस आनंद को व्यक्त करने के लिए मंदिर से बाहर निकलते समय घंट बजाना चाहिए ।

प्रश्न 5 :– शाम के प्रतिक्रमण में 'नमोऽस्तु वर्धमानाय' जोर से और सुबह प्रतिक्रमण में 'विशाललोचनदलं मंद स्वर से क्यों बोलना चाहिए ?'

उत्तर :– प्रातः अन्य लोग निद्राधीन हो और अपनी आवाज से जगकर सांसारिक प्रवृत्तियों में न जुडे, इसलिए सुबह **विशाल लोचन** मंदस्वर से बोलते है ।

शाम को तो लोग जगे हुए होने से जोर से बोलने में कोई आपत्ति नहीं है ।

प्रश्न 6 :– शाश्वत पदार्थों का माप किस अंगुल से मापा जाता है ?

उत्तर :– शाश्वत पदार्थ प्रमाण अंगुल से और शरीर की ऊंचाई आदि उत्सेध अंगुल से मापी जाती है ।

प्रश्न 7 :– सिद्धशिला का वर्ण कौनसा है ?

उत्तर :– सिद्धशिला सफेद सुवर्णमय स्फटिक की तरह निर्मल है ।

प्रश्न 8 :– नंदन ऋषि के भव में 11,80,645 मासक्षमण कैसे घटते हैं ?

उत्तर :– नंदनऋषि ने 24 लाख वर्ष बाद दीक्षा ली और 1 लाख वर्ष संयम पाला ।

1 लाख को 366 से गुणने पर 3,66,00,000 दिन होते है उनमें मासक्षमण + 1 पारणा के 31 दिन का भाग देने पर 11,80,645 आते हैं और 5 दिन शेष बचते है ।

प्रश्न 9 :– चक्रवाल सामाचारी में चक्रवाल का क्या अर्थ है ?

उत्तर :– चक्रवाल अर्थात् प्रतिदिन करने योग्य कर्म ।

प्रश्न 10 :– चरण व करण (सित्तरि) में क्या भेद है ?

उत्तर :– चरण अर्थात् नित्य अनुष्ठान । करण अर्थात् प्रासंगिक अनुष्ठान ।

प्रश्न 11 :– कालवेला में उवसग्गहरं की माला स्वाध्याय में गिन सकते हैं ?

उत्तर :– हाँ !

प्रश्न 12 :– नूतनवर्ष के मांगलिक में नमिऊण-कल्याणमंदिर बोल सकते हैं ?

उत्तर :– उनमें उपसर्गों का वर्णन होने से प्रथा नहीं है परंतु बोले तो भी बाध नहीं है । कालवेला में भी गिन सकते है ।

प्रश्न 13 :– किस कर्म के उदय से स्वप्न आते हैं ?

उत्तर :– दर्शनावरणीय कर्म के उदय से ।

प्रश्न 14 :– रात्रि में साधु को रजोहरण कहाँ रखना चाहिये ?

उत्तर :– दाई ओर रखे !

रात्रि में सोते समय डंडी का भाग मस्तक की ओर तथा दस्सी का भाग पैर की ओर रखें ।

प्रश्न 15 :– धनिये मे या पोदिना की चटणी में चने के दालिये डाले हो तो वह कब तक चलती है ?

उत्तर :– एक ही दिन !

प्रश्न 16 :– त्रिफला के पानी का काल कितना हैं ?

उत्तर :– गर्म पानी जितना है ।

प्रश्न 17 :– अज्ञान के तीन भेद कौन से है ?

उत्तर :– (1) मति अज्ञान (2) श्रुत अज्ञान और (3) विभंग ज्ञान (अवधि अज्ञान) ।

प्रश्न 18 :– पंचेन्द्रिय तिर्यंच के तीन भेद कौन से है ?

उत्तर :– जलचर, स्थलचर और खेचर ।

प्रश्न 19 :– वैराग्य के तीन भेद कौनसे है ?

उत्तर :– (1) दु:ख गर्भित (2) मोह गर्भित (3) ज्ञान गर्भित ।

प्रश्न 20 :– तीन प्रकार के स्थविर कौन से हैं ?

उत्तर :– (1) पर्याय स्थविर (2) वय स्थविर (3) ज्ञान स्थविर ।

प्रश्न 21 :– जंबूद्वीप में तीन कर्मभूमियाँ कौनसी है ?

उत्तर :– (1) भरत क्षेत्र (2) ऐरावत क्षेत्र (3) महाविदेह क्षेत्र ।

प्रश्न 22 :– तीन प्रकार के आहार कौनसे है ?

उत्तर :– (1) ओजाहार (2) लोमाहार (3) कवलाहार ।

प्रश्न 23 :– एकेन्द्रिय में गति त्रस कौन से हैं ?

उत्तर :– (1) तेउकाय और (2) वायुकाय ।

प्रश्न 24 :– मनुष्य क्षेत्र में दो बडे समुद्र कौनसे है ?

उत्तर :– (1) लवण समुद्र (2) कालोदधि समुद्र ।

प्रश्न 25 :– पांचवे आरे में शत्रुंजय का पहला उद्धार किसने कराया ?

उत्तर :– जावडशा ने ।

प्रश्न 26 :– पालीताणा शहर किस आचार्य की याद में बसाया ?

उत्तर :– पादलिप्तसूरि ।

प्रश्न 27 :– पहले आरे में गिरिराज का विस्तार कितना था ?

उत्तर :– 80 योजन ।

प्रश्न 28 :– छठे आरे में गिरिराज की ऊंचाई कितनी रहेगी ?

उत्तर :– सात हाथ ।

प्रश्न 29 :– केवली को कितने गुण स्थान होते हैं ?

उत्तर :– दो (1) सयोगी और (2) अयोगी ।

प्रश्न 30 :– तीर्थंकर नाम कर्म की निकाचना कब होती है और कौन करता है ?

उत्तर :– तीर्थंकर बननेवाली आत्मा अपने पूर्व के तीसरे भव में तीर्थंकर नाम कर्म निकाचित करती है ।

प्रश्न 31 :– तीर्थंकर की माता बारहवें स्वप्न में क्या देखती है ?

उत्तर :– तीर्थंकर की आत्मा का अवतरण देवलोक में से ही तो बारहवें स्वप्न में तीर्थंकर की माता विमान देखती है और तीर्थंकर की आत्मा नरक से आए तो भुवन देखती है ।

प्रश्न 32 :– प्रभु के जन्माभिषेक प्रसंग में 64 इन्द्र कौन से हैं ?

उत्तर :– भवनपति निकाय के 20 इन्द्र ।

व्यंतर निकाय के	16 इन्द्र ।
वाण व्यंतर निकाय के	16 इन्द्र ।
ज्योतिष निकाय के	2 इन्द्र ।
तथा वैमानिक देवलोक के	10 इन्द्र ।
	= 64 इन्द्र

प्रश्न 33 :– लोक और अलोक दोनों मे कौनसा द्रव्य है ?

उत्तर :– आकाशास्तिकाय ।

प्रश्न 34 :– पांचवे आरे के अंत तक रहनेवाला आगम कौनसा है ?

उत्तर :– दशवैकालिक सूत्र ।

प्रश्न 35 :– आने के बाद कभी नहीं जाने वाला सम्यक्त्व कौनसा है ?

उत्तर :– क्षायिक सम्यक्त्व ।

प्रश्न 36 :– किस पर्वत के पार मनुष्य जन्म नहीं लेते है ?

उत्तर :– मानुषोत्तर पर्वत ।

प्रश्न 37 :– सबसे बडा समुद्र कौनसा है ?

उत्तर :– स्वयंभूरमण ।

प्रश्न 38 :– समुद्र में भी मीठा पानी कौन पीता है ?

उत्तर :– शृंगी मत्स्य ।

प्रश्न 39 :– 11-12 व 13 वें गुण स्थानक में किस कर्म प्रकृति का बंध होता है ?

उत्तर :– शाता वेदनीय ।

प्रश्न 40 :– 'राजाने ददते सौख्यम्' वाक्य के आठ लाख अर्थ किसने किए ?

उत्तर :– समय सुंदर उपाध्याय ने ।

प्रश्न 41 :– मोक्ष जाने के लिए कौनसा संघयण जरुरी है ?

उत्तर :– वज्रऋषण नाराच ।

प्रश्न 42 :– कौन से पूर्वधर समकिती ही होते है ?

उत्तर :– 10 और 10 से ऊपर के पूर्वधर समकिती ही होते है ।

प्रश्न 43 :– एक समय में कितने जीव मोक्ष में जा सकते है ?

उत्तर :– 108 ।

प्रश्न 44 :– तीर्थंकर परमात्मा अंतिम भव में कौन से गुणस्थानक का स्पर्श नहीं करते है ?

उत्तर :– पहला, दूसरा, तीसरा, पांचवा तथा ग्यारहवां ।

प्रश्न 45 :– एक समय में कितने जीव उपशम श्रेणी पर चढ सकते हैं ?

उत्तर :– 54 ।

प्रश्न 46 :– नरक व देवगति में उत्कृष्ट से कौनसा गुणस्थानक हो सकते है ?

उत्तर :– चौथा ।

प्रश्न 47 :– तिर्यंच में उत्कृष्ट से कितने गुणस्थान हो सकते है ?

उत्तर :– पांच ।

प्रश्न 48 :– जंबूद्वीप का अधिष्ठायक देव कौन है ?

उत्तर :– अनादृत देव ।

प्रश्न 49 :– जंबूद्वीप के मेरुपर्वत की भूमि पर ऊंचाई कितनी है ?

उत्तर :– 99000 योजन ।

प्रश्न 50 :– वर्ष में पक्खी प्रतिक्रमण कितने होते हैं ?

उत्तर :– 21 बार ।

प्रश्न 51 :– अभव्य को कौनसी तेरह लब्धियाँ प्राप्त नहीं होती है ?

उत्तर :– (1) अरिहंत (2) चक्रवर्ती (3) वासुदेव (4) बलदेव (5) संभिन्न श्रोत (6) चारण (7) पूर्वधर (8) गणधर (9) पुलाक (10) आहारक (11) ऋजुमति (12) विपूलमति (13) केवली ।

प्रश्न 52 :– वर्तमान में विद्यमान आगमों का संकलन किसने किया था ?

उत्तर :– देवर्द्धि गणि क्षमाश्रमण ।

प्रश्न 53 :– केवली समुद्घात में कितने समय लगते हैं ?

उत्तर :– आठ ।

प्रश्न 54 :– महाविदेह में अवस्थित काल कौनसे आरे जैसा हैं ?

उत्तर :– अवसर्पिणी के चौथे आरे जैसा ।

प्रश्न 55 :– पांचवे आरे में मोक्ष में कौन गए ?

उत्तर :– गौतमस्वामी, सुधर्मास्वामी, जंबूस्वामी आदि ।

प्रश्न 56 :– क्या पांचवे आरे में जन्मे-व्यक्ति का मोक्ष हो सकता है ?

उत्तर :– नहीं ! चौथे आरे में जन्मे व्यक्ति का पांचवे आरे में मोक्ष हो सकता है ।

प्रश्न 57 :– मोक्ष के लिए कौनसा संस्थान जरुरी है ?

उत्तर :– छह संस्थानों में मोक्ष हो सकता है । कोई एक जरुरी नहीं है ।

प्रश्न 58 :– सबसे ऊंचा पर्वत कौन सा है ?

उत्तर :– जंबूद्वीप का मेरु पर्वत ।

प्रश्न 59 :– सातवी नरक का जीव कौनसी गति में जाता है ?

उत्तर :– तिर्यंच गति में ।

प्रश्न 60 :– सभी द्वीपों में सबसे छोटा द्वीप कौनसा है ?

उत्तर :– जंबूद्वीप ।

प्रश्न 61 :– तलेटी से रामपोल तक कितनी सीढियां है ?

उत्तर :– 3745 ।

प्रश्न 62 :– प्राचनी काल में शत्रुंजय की तलेटी कौनसी थी ?

उत्तर :– वडनगर (वल्लभीपुर)

प्रश्न 63 :– सिद्धगिरि के ध्यान से माणिकचंद शेठ कौनसे देव बने ?

उत्तर :– माणिभद्र देव ।

प्रश्न 64 :– शत्रुंजय पर वर्तमान में मूलनायक आदिनाथ की प्रतिष्ठा कब हुई थी ?

उत्तर :– वि.सं. 1587 वैशाख वदी-6 ।

प्रश्न 65 :– शत्रुंजय के 16 वें उद्धारक के प्रतिष्ठायक आचार्य कौन थे ?

उत्तर :– आचार्य विद्यामंडनसूरि ।

प्रश्न 66 :– चार प्रकार के पौषध कौन से है ?

उत्तर :– (1) आहार पौषध (2) शरीर सत्कार पौषध (3) ब्रह्मचर्य पौषध (4) अव्यापार पौषध ।

प्रश्न 67 :– स्थूलभद्र के कालधर्म बाद कौनसी चार वस्तुओं का विच्छेद हुआ ?

उत्तर :– (1) अंतिम चार पूर्व (2) महाप्राणायाम ध्यान (3) प्रथम संघयण (4) प्रथम संस्थान ।

प्रश्न 68 :– गोचरी-मांडली के पांच दोष कौन से हैं ?

उत्तर :– (1) अंगार (2) धूम्र (3) संयोजना (4) प्रमाण (5) कारण ।

प्रश्न 69 :– पांच प्रकार के चैत्य कौन से हैं ?

उत्तर :– (1) भक्ति चैत्य (2) मंगल चैत्य (3) निश्राकृत चैत्य (4) अनिश्राकृत चैत्य (5) शाश्वत चैत्य ।

प्रश्न 70 :– ज्योतिष देव के पांच प्रकार कौन से है ?

उत्तर :– (1) सूर्य (2) चंद्र (3) ग्रह (4) नक्षत्र (5) तारा ।

प्रश्न 71 :– पांच अनुत्तर विमान कौन से है ?

उत्तर :– (1) विजय (2) वैजयंत (3) जयंत (4) अपराजित (5) सर्वार्थ सिद्ध विमान ।

प्रश्न 72 :– पांच प्रकार के अनुष्ठान कौन से है ?

उत्तर :– (1) विष अनुष्ठान (2) गरल अनुष्ठान (3) अन् अनुष्ठान (4) तद्हेतु अनुष्ठान (5) अमृत अनुष्ठान ।

प्रश्न 73 :– झूठ बोलने के चार कारण कौन से है ?

उत्तर :– व्यक्ति क्रोध से, लोभ से, भय से और हास्य वृत्ति से झूठ बोलता है ।

प्रश्न 74 :– देवों के चार प्रकार कौन से है ?

उत्तर :–(1) भवनपति (2) व्यंतर (3) ज्योतिष और (4) वैमानिक ।

प्रश्न 75 :– शाश्वत जिनालय में कौन से चार भगवान होते हैं ?

उत्तर :– (1) ऋषभभानन (2) चंद्रानन (3) वारिषेण (4) वर्धमान ।

प्रश्न 76 :– चार प्रकार की बुद्धि कौनसी है ?

उत्तर :– (1) औत्पतिकी (2) वैनयिकी (3) कार्मिकी (4) पारिणामिकी ।

प्रश्न 77 :– किसी भी वस्तु के चार निक्षेप कौन से हैं ?

उत्तर :– (1) नाम (2) स्थापना (3) द्रव्य और (4) भाव ।

प्रश्न 78 :– पुद्गल के चार लक्षण कौन से हैं ?

उत्तर :– (1) वर्ण (2) गंध (3) रस और (4) स्पर्श ।

प्रश्न 79 :– पांचवे आरे के अंत में चतुर्विध संघ में कौन होंगे ?

उत्तर :– (1) दुप्पहसूरि (2) फल्गुश्री (3) नागिल श्रावक (4) सत्यश्री श्राविका ।

प्रश्न 80 :– चार विदिशाएँ कौनसी है ?

उत्तर :– (1) ईशान (2) आग्नेय (3) नैऋत्य और (4) वायव्य ।

प्रश्न 81 :– चैत्य वृक्ष किसे कहते हैं ?

उत्तर :– जिस प्रकार के वृक्ष के नीचे तीर्थंकर प्रभु को केवलज्ञान हुआ हो, वह चैत्य वृक्ष कहलाता है ।

प्रश्न 82 :– कामली काल में अचित्त जल खुले में ले जाए तो वह जल सचित्त हो जाता है ?

उत्तर :– नहीं ! वह जल सचित्त नहीं होता है, परंतु सांपातिक जीवों की विराधना का दोष लगता है ।

प्रश्न 83 :– प्रभु की दृष्टि मार्ग पर गिरती हो तो वहां बीच में पाटिया रखना चाहिए ?

उत्तर :– नहीं ! प्रभु की दृष्टि मार्ग पर जानी चाहिए । इससे उन्नति ही होती है ।

प्रश्न 84 :– खजुर में से बीज निकालने के बाद तुरंत ही बहोरा सकते है ?

उत्तर :– हाँ !

प्रश्न 85 :– कोटाकोटि किसे कहते हैं ?

उत्तर :– एक करोड को एक करोड से गुणा करने पर जो संख्या आती है, उसे कोटाकोटि कहते है ।

प्रश्न 86 :– तीर्थंकरों के वार्षिक दान के छह अतिशय कौन से हैं ?

उत्तर :– (1) प्रभु को ज्यादा श्रम न लगे इसलिए सौधर्म इन्द्र प्रभु के हाथ में दान की सामग्री देते है ।

(2) ईशान इन्द्र सोने की छडी लेकर पास में खडे रहते है, जो दान लेनेवाले को उसके भाग्यानुसार उसके पास मांग कराते है ।

(3) चमरेन्द्र-बलीन्द्र प्रभु की मुट्ठी में रहे धन को दान लेने वाले की इच्छानुसार कम-ज्यादा करते हैं ।

(4) भवनपति देवता याचकों को दान हेतु प्रेरित करते हैं ।

(5) वाण व्यंतर देवता याचकों को अपने स्थान में जाने में मदद करते है ।

(6) ज्योतिष देवता वार्षिक दान का समय बताते हैं ।

प्रश्न 87 :– तप कब नहीं करना चाहिए ?

उत्तर :– (1) तप करने से दुर्ध्यान होता हो ।

(2) तप करने से दूसरे आवश्यक कर्तव्यों की हानि होती हो उदा. तप से इतनी कमजोरी हो कि प्रभु पूजा, जिनवाणी श्रवण, प्रतिक्रमण आदि आराधना न हो सके ।

(3) तप से इन्द्रियों की हानि होती हो ।

प्रश्न 88 :– प्रभु के आगे फलपूजा में कच्चे फल चढा सकते है ?

उत्तर :– नहीं ! पके हुए फल चढाने चाहिए । साधना के अंतिम फल-वीतरागता के पाने के लिए पके हुए फल चढाए जाते है ।

प्रश्न 89 :– अपनी आत्मा के तथाभव्यत्व को पकाने के लिए क्या उपाय है ?

उत्तर :– (1) अरिहंत आदि चार की शरण का स्वीकार ।

(2) इस जीवन में तथा गत भवों में हुए अपने पापों की निंदा ।

(3) जगत् में हो रहे सभी सुकृतों की हृदय से अनुमोदना ।

प्रश्न 90 :– मनुष्य को वैराग्य सुलभ है ?

उत्तर :– अतिसुख, अतिदु:ख व अज्ञानता वैराग्य में बाधक है ।

देवलोक में अतिसुख (भौतिक सुख)

नरक में अति दु:ख और तिर्यंचों में अतिभूख व अज्ञानता होने से वैराग्य दुर्लभ है ।

मनुष्य जीवन में देव जितना सुख, नरक जितना दु:ख व तिर्यंच जितनी भूख या अज्ञानता नहीं है, अत: वैराग्य सुलभ है ।

–रोग वृद्धावस्था व अकाल मृत्यु वैराग्य के प्रबल निमित्त है ।

प्रश्न 91 :– सामायिक में गुरुवंदन कर सकते है ?

उत्तर :– गाथा लेनी हो, वाचना लेनी हो, प्रवचन सुनता हो, पच्चक्खाण लेना हो तो सामायिक में भी गुरुवंदन कर सकते है ।

प्रश्न 92 :– मैथून संज्ञा को जीतने का उपाय क्या ?

उत्तर :– ब्रह्मचर्य की नौ गुप्तियों का पालन, विजातीय संपर्क का त्याग, मर्यादाहीन वेशभूषण का त्याग, रसप्रद आहार का त्याग आदि से मैथून संज्ञा को वश किया जा सकता है ।

प्रश्न 93 :– भवचक्र में आहारक शरीर व उपशम श्रेणी कितनी बार कर सकते है ?

उत्तर :– अधिकतम चार बार ।

प्रश्न 94 :– युगलिक को अवधिज्ञान हो सकता है ?

उत्तर :– नहीं !

प्रश्न 95 :– देवों के शरीर की छाया गिरती है ?

उत्तर :– नहीं ।

प्रश्न 96 :– दूध से दही बनने में बेक्टिरिया जीव उत्पन्न होते है ?

उत्तर :– नहीं ! यदि जीव उत्पन्न होते तो सर्वज्ञ-सर्वदर्शी दही को भक्ष्य विगई में नहीं गिनते ।

प्रश्न 97 :– श्रावक रात्रि में Light में स्वाध्याय कर सकते हैं ?

उत्तर :– रात्रि में इलेक्ट्रिक के प्रकाश में पढने पर उसे प्रायश्चित (आलोचना) के स्वाध्याय में नहीं गिन सकते है ।

प्रश्न 98 :– 'केर' को द्विदल में गिनते है ?

उत्तर :– द्विदल अर्थात् जिसकी दो फाड होती हो, केर की दो फाड नहीं होती है, अतः द्विदल नहीं है ।

प्रश्न 99 :– महावीर प्रभु केवलज्ञान के बाद हाथ में भिक्षा लेते थे या पात्र में ?

उत्तर :– तीर्थंकर परमात्मा केवलज्ञान न हो तब तक कर पात्री होते है, उसके बाद उनकी भिक्षा अन्य मुनि लाते है और पात्र में भोजन करते है ।

भगवान महावीर की भिक्षा प्रायः लोहार्य मुनि लाते थे ।

प्रश्न 100 :– केवलज्ञान बाद प्रभु कौन सा तप करते हैं ?

उत्तर :– एकासना ! प्रतिदिन एक बार आहार लेते है ।

प्रश्न 101 :– प्रभु का प्रक्षाल जल कब तक अचित्त रहता है ?

उत्तर :– दूध-पानी के मिश्रण से 48 मिनिट बाद वह प्रक्षाल अचित्त हो जाता है और पानी के काल प्रमाण अचित्त रहता है ।

प्रश्न 102 :– गुरु के मृत देह को कच्चे जल से स्नान क्यों कराते है ?

उत्तर :– गुरु (साधु) के मृत देह को सर्वविरतिधर साधु स्नान नहीं कराते हैं । वह स्नान तो गृहस्थ कराते है ।

`साधु जीवन में महाव्रतों की प्रतिज्ञा जिंदगी भर की होती है । मृत्यु के बाद वह नियम पूरा हो जाता है ।

मृत्यु के बाद पारिठावणिय की क्रिया करके वह देह गृहस्थों को सौंप दिया जाता है, अतः अब कच्चे जल या सचित्त अग्नि के स्पर्श से मृत साधु महात्मा के महाव्रत खंडित नहीं होते हैं ।

तीर्थंकरों के देह को भी निर्वाण के बाद सचित्त जल से ही देवता स्नान कराते हैं, अतः उसी के अनुकरण रुप यह विधि चली आ रही है ।

प्रश्न 103 :– घर में सामायकि करते समय साधु-साध्वीजी गोचरी के लिए पधारे तो उन्हें सामायिक में गोचरी बहोरा सकते है ?

उत्तर :– घर में बहोराने वाला अन्य कोई न हो तो अपवाद रुप में बहोरा सकते है ।

प्रश्न 104 :– द्विदल से बचने के लिए दही को कितना गर्म करना चाहिए ?

उत्तर :– दही में अंगुली डालने पर अंगुली जले (सहन न हो) उतना गर्म करना चाहिए ।

प्रश्न 105 :– पहले प्रहर में वहोरे हुए आहार-पानी साधु-साध्वी को कब तक चलते हैं ?

उत्तर :– दिन के तीन प्रहर तक चलते है । तीसरे प्रहर बाद कालातीत दोष लगता है ।

प्रश्न 106 :– शाक-फ्रूटस काटकर रखे तो दूसरे दिन चल सकते हैं ?

उत्तर :– नहीं !

प्रश्न 107 :– स्नात्र पूजा में कौन से भगवान चाहिए ?

उत्तर :– वर्तमान में पंचतीर्थी की प्रथा है, परंतु चौबीसी या अन्य भगवान के आगे भी पढा सकते है ।

प्रश्न 108 :– `ग्रंथि-भेद कर सम्यक्त्व की प्राप्ति होती है ।' उसका हमें ख्याल आ सकता है ?

उत्तर :– नहीं ! सम्यक्त्व आदि की प्रथम बार प्राप्ति होने पर अपूर्व आनंद का अनुभव होता है, जो शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता हैं, परंतु `मुझे सम्यक्त्व प्राप्त हुआ !' ऐसी प्रत्यक्ष अनुभति का ख्याल नहीं आता है । विशिष्ट ज्ञानी ही इसे जान सकते है ।

प्रश्न 109 :– द्रव्य व भाव लेश्या में क्या फर्क है ?

उत्तर :– आत्मा के शुभ-अशुभ अध्यवसाय ही लेश्या स्वरुप हैं । उन शुभ-अशुभ परिणामों में सहायक पुद्‌गलों को द्रव्य लेश्या कहते हैं ।

प्रश्न 110 :– चौदहपूर्व और अवधिज्ञान में विशेष बोध किसे होता है ?

उत्तर :– चौदह पूर्वी को श्रुत केवली कहा जाता है । केवली के समान पदार्थों का वर्णन श्रुत केवली कर सकते है । अवधिज्ञान में ज्ञान की एक मर्यादा है । हाँ ! परमावधि ज्ञान में विशेष बोध होता है, उसके बाद अल्प समय में ही केवलज्ञान की प्राप्ति हो जाती है ।

प्रश्न 111 :– प्रभु की आंगी के खोके पर आंगी करते समय मुख कोश बांधना चाहिए ?

उत्तर :– हाँ ! क्योंकि वह खोका प्रभु पर चढने वाला हैं, अत: अपना श्वास व थूंक उस पर न गिरे यह सावधानी जरुरी है ।

प्रश्न 112 :– प्रभु की आंगी में कौनसी वस्तु का उपयोग होना चाहिए ?

उत्तर :– लोक व्यवहार में भी व्यक्ति जितना बडा होता है, उसके मान-सम्मान में ऊंची वस्तु ही दी जाती है । प्रभु तो त्रिभुवन के नायक है, अत: उनके सन्मान में हल्की-मूल्यहीन वस्तु का उपयोग नहीं करना चाहिए । प्रभु भक्ति में बहुमूल्य वस्तु का ही उपयोग होना चाहिए ।

प्रश्न 113 :– तीर्थंकर को केवलज्ञान बाद भूख लगती है ?

उत्तर :– घाति कर्मों के क्षय से केवलज्ञान होता है, परंतु उसके बाद भी अघाति कर्म तो सत्ता में होते ही है। तीर्थंकरों को केवलज्ञान बाद रोग या उपसर्ग जन्य अशाता नहीं होती है, परंतु अशाता वेदनीय सत्ता में होने से भूख तो लगती है। हाँ ! अन्य व्यक्ति को भूख में जो आकुलता-दुर्ध्यान होता है, वह उन्हें नहीं होता हैं।

प्रश्न 114 :– नवकार जाप में नवपद बोले या पांच पद ?

उत्तर :– नवकार के जाप में नौ पद बोलने चाहिए। नवपद में पांच पद स्तवनीय (स्तोतव्य) है तथा चार पद उनकी स्तवना रुप हैं, उससे स्तवनीय की महिमा का ख्याल आता है।

प्रश्न 115 :– रोग उपद्रव के लिए शांतिनाथ का जाप क्यों ?

उत्तर :– यद्यपि सभी तीर्थंकरों का तीर्थंकर नाम कर्म एक समान है, उनमें रोग नाश आदि की ताकत है परंतु शांतिनाथ प्रभु ने कबूतर के जीव के रक्षण (शाता देने के लिए) अपने जीवन के बलिदान की तैयारी बताई थी उससे उपार्जित पुण्य से उनके जन्म समय भी रोग-उपद्रव का नाश हुआ था। अत: उनके इस प्रसंग को ध्यान में रखते हुए रोग-उपद्रव की शांति के लिए शांतिनाथ प्रभु को विशेष याद किया जाता है।

प्रश्न 116 :– समाधि सौभाग्य के लिए पार्श्वनाथ प्रभु को क्यों याद करते हैं ?

उत्तर :– पार्श्वनाथ प्रभु ने पहले, दूसरे, चौथे, छठे, आठवे व दसवे भव में कमठ के उपसर्ग को सहन करने में अपूर्व समता भाव रखा था, अत: उन प्रसंगों की स्मृति में समाधि हेतु पार्श्वनाथ प्रभु को विशेष याद किया जाता है।

अपने पूर्व के देव भव में उन्होंने तीर्थंकरों के 500 कल्याणकों में बढ चढकर भाग लिया था अत: उनका आदेय, यश, सौभाग्य नाम विशिष्ट था, अत: उसकी स्मृति में उनकी विशेष भक्ति की जाती है।

प्रश्न 117 :– नारियल का पानी कब अचित्त बनता है ?

उत्तर :– नारियल में से पानी निकालने के 48 मिनिट बाद अचित होता है ।

प्रश्न 118 :– नारियल का पानी हरी वनस्पति में आता है ?

उत्तर :– हाँ !

प्रश्न 119 :– पक्खी आदि प्रतिक्रमण में 96 मिनिट से ज्यादा समय लगे तो दो सामायिक गिन सकते हैं ?

उत्तर :– नहीं ! सामायिक एक ही गिनना चाहिए ।

प्रश्न 120 :– धन होने पर भी दान का भाव क्यों नहीं आता हैं ?

उत्तर :– धन प्राप्ति के लिए लाभांतराय कर्म का क्षयोपशम जरुरी है तो दान देने के लिए दानांतराय का क्षयोपशम जरुरी है । दोनों कर्म अलग होने से दोनों के कार्य भी अलग है । कभी लाभांतराय का क्षयोपशम न हो तो धन तो मिल जाता है, परंतु दांनातराय का क्षयोपशम नहीं होने से वह थोडा भी दान नहीं कर पाता है ।

प्रश्न 121 :– क्या आयुष्य बांधने के बाद बदल सकते है ?

उत्तर :– आयुष्य कर्म बांधने के बाद बदलता नहीं है, परंतु कम हो सकता है । कृष्ण ने सातवी नरक का आयुष्य बांधा था, गुरु वंदन से वह आयुष्य कम हुआ और तीसरी नरक में गए, इसमें नरक आयुष्य नहीं बदला, नरक का आयुष्य जरुर कम हुआ ।

सभी प्रश्नों के जवाब 'र' की बाराखडी से–

प्रश्न 122 :– आचार्य मंगु का पतन किस कारण हुआ ?

उत्तर :– रसनेन्द्रिय की गुलामी के कारण ।

प्रश्न 123 :– पहली नरक पृथ्वी का क्या नाम है ?

उत्तर :– रत्नप्रभा ।

प्रश्न 124 :– कर्म रज को दूर करनेवाले उपकरण का क्या नाम है ?

उत्तर :– रजोहरण ।

प्रश्न 125 :– चौदह स्वप्न में से एक स्वप्न ?

उत्तर :– रवि / रत्नराशि ।

प्रश्न 126 :– किस अकर्म भूमि में हमेशा अवसर्पिणी के दूसरे आरे जैसे भाव है ?

उत्तर :– रम्यक्क्षेत्र ।

प्रश्न 127 :– रत्नाकर पच्चीसी-संस्कृत स्तुति की रचना किसने की ?

उत्तर :– रत्नाकरसूरिजी म. ने ।

प्रश्न 128 :– धर्मनाथ प्रभु के चार कल्याणक कहाँ हुए ?

उत्तर :– रत्नपुरी ।

प्रश्न 129 :– तीन गौरव में से एक गारव ?

उत्तर :– रस गारव ।

प्रश्न 130 :– नौ ग्रहों में से एक ग्रह ?

उत्तर :– रवि / राहु ।

प्रश्न 131 :– राजस्थान के कौन से सुप्रसिद्ध तीर्थ की प्रतिष्ठा सोमसुंदरसूरिजी ने कराई थी ?

उत्तर :– राणकपूर ।

प्रश्न 132 :– कृष्ण की किस पत्नी को 16 वर्ष पुत्र वियोग रहा ?

उत्तर :– रुक्मिणी ।

प्रश्न 133 :– किस चोर के आगे अभयकुमार का षड्यंत्र निष्फल गया ?

उत्तर :– रोहिणेय चोर ।

प्रश्न 134 :– नेमिनाथ के तीन कल्याणक कहां हुए ?

उत्तर :– रैवतगिरि ।

प्रश्न 135 :– राजीमति ने संयम में किसको स्थिर किया ?

उत्तर :– रथनेमि ।

प्रश्न 136 :– पांच इन्द्रियों में सबसे अधिक बलवान् कौन है ?

उत्तर :– रसनेन्द्रिय ।

प्रश्न 137 :– सुपात्रदान के कारण तीर्थंकर नाम कर्म किसने उपार्जित किया ?

उत्तर :– रेवती श्राविका ।

प्रश्न 138 :– प्रभु महावीर ने 14 चातुर्मास कहाँ किए ?

उत्तर :– राजगृही में ।

प्रश्न 139 :– मंदिर प्रवेश करते समय राजा को कौनसा राजचिह्न छोडना होता है ?

उत्तर :– राजमुकुट ।

प्रश्न 140 :– महावीर प्रभु के शासन के साधुओं को राजा की भिक्षा क्यों नहीं कल्पती है ?

उत्तर :– राजपिंड होने से ।

प्रश्न 141 :– हरिभद्रसूरिजी की गृहस्थावस्था में कौनसी जाति थी ?

उत्तर :– राजपुरोहित ।

प्रश्न 142 :– साधु का छट्ठा व्रत कौनसा है ?

उत्तर :– रात्रि भोजन विरमणव्रत ।

प्रश्न 143 :– राजस्थान-गोडवाड में महावीर प्रभु का प्राचीन तीर्थ कौनसा है ?

उत्तर :– राता महावीरजी ।

प्रश्न 144 :– मुनिसुव्रत स्वामी का जन्म कल्याणक कहाँ हुआ ?

उत्तर :– राजगृही नगरी में ।

प्रश्न 145 :– परमात्मा की सिद्ध अवस्था का चिंतन किसमें होता है ?

उत्तर :– रुपातीत अवस्था चिंतन में ।

`अ' या `आ' से प्रारंभ होनेवाले शब्द से उत्तर दे–

प्रश्न 146 :– अलोक में मात्र एक ही द्रव्य कौनसा है ?

उत्तर :– आकाशास्तिकाय ।

प्रश्न 147 :– गुरु के आगमन पर सबसे पहले क्या करना चाहिए ?

उत्तर :– अभ्युत्थान ।

प्रश्न 148 :– पहले अणुव्रत में एक अतिचार कौनसा है ?

उत्तर :– अतिभार ।

प्रश्न 149 :– एक करोड पूर्व वर्ष से अधिक आयुष्य को क्या कहते हैं ?

उत्तर :– असंख्यात वर्ष ।

प्रश्न 150 :– जिसका प्रारंभ न हो उसे क्या कहते हैं ?

उत्तर :– अनादि ।

प्रश्न 151 :– सिद्धशिला की बीच में मोटाई कितनी है ?

उत्तर :– आठ योजन ।

प्रश्न 152 :– जिसका कभी अंत न हो उसे क्या कहते है ?

उत्तर :– अनंत ।

प्रश्न 153 :– साधारण वनस्पतिकाय में कितने जीव होते है ?

उत्तर :– अनंत ।

प्रश्न 154 :– अजितनाथ से पार्श्वनाथ तक के शासन में उत्कृष्ट तप कितना है ?

उत्तर :– आठ मास ।

प्रश्न 155 :– श्री चंद्र केवली का नाम वर्धमान तप के कारण कितने समय तक अमर रहेगा ?

उत्तर :– आठ सौ चौबीसी तक ।

प्रश्न 156 :– आहार लेकर भी मांगलिक तप कौनसे है ?

उत्तर :– आयंबिल ।

प्रश्न 157 :– विमलशा ने किस तीर्थ का उद्धार कराया ?

उत्तर :– अर्बुदगिरि ।

प्रश्न 158 :– जिन पूजा में पहली शुद्धि कौनसी है ?

उत्तर :– अंगशुद्धि ।

प्रश्न 159 :– प्रभु पूजा में सर्व प्रथम कौन से अंग पर पूजा करते है ?

उत्तर :– अंगुष्ठ पर ।

प्रश्न 160 :– जीव व जड को स्थिरता में सहायक द्रव्य कौन सा है ?

उत्तर :– अधर्मास्तिकाय ।

प्रश्न 161 :– कायोत्सर्ग संबंधी एक सूत्र का क्या नाम है ?

उत्तर :– आगार सूत्र ।

प्रश्न 162 :– श्रावक का अंतिम व्रत कौनसा है ?

उत्तर :– अतिथि संविभाग व्रत ।

प्रश्न 163 :– मध्यलोक में कितने समुद्र है ?

उत्तर :– असंख्य ।

प्रश्न 164 :– साधु का एक पर्यायवाची नाम क्या है ?

उत्तर :– अणगार ।

प्रश्न 165 :– प्रभु मूर्ति देखकर किसे जाति स्मरण ज्ञान हुआ ?

उत्तर :– आर्द्रकुमार ।

प्रश्न 166 :– भवन पति देव किस लोक में है ?

उत्तर :– अधोलोक में ।

प्रश्न 167 :– प्रभु वीर ने किस वृक्ष के नीचे दीक्षा ली ?

उत्तर :– अशोक वृक्ष ।

प्रश्न 168 :– जो चेतना रहित है, वह कौनसा तत्त्व है ?

उत्तर :– अजीव द्रव्य ।

प्रश्न 169 :– श्रावक के प्रथम पांच व्रतों को क्या कहते है ?

उत्तर :– अणुव्रत ।

प्रश्न 170 :– सबसे बडा दान कौनसा है ?

उत्तर :– अभयदान ।

प्रश्न 171 :– श्रावक के तीन गुणव्रतों में से एक का नाम क्या है ?

उत्तर :– अनर्थदंड विरमण व्रत ।

प्रश्न 172 :– वर्षा के जीव कौन से कहलाते है ?

उत्तर :– अप्काय ।

प्रश्न 173 :– श्री कृष्ण किस नाम के तीर्थंकर होंगे ?

उत्तर :– अमम ।

प्रश्न 174 :– राजीमति को छोड किसने दीक्षा ली थी ?
उत्तर :– अरिष्टनेमि ने ।
प्रश्न 175 :– आदिनाथ का पारणा किस दिन हुआ था ?
उत्तर :– अक्षय तृतीया ।
प्रश्न 176 :– त्रिपृष्ट वासुदेव के भाई का क्या नाम था ?
उत्तर :– अचल ।
प्रश्न 177 :– 1000 मुनियों के साथ अष्टापद पर मोक्ष में कौन गए ?
उत्तर :– आदिनाथ ।
प्रश्न 178 :– पौषध में कितने दोष टालने होते है ?
उत्तर :– अठारह ।
प्रश्न 179 :– संभवनाथ का लांछन क्या है ?
उत्तर :– अश्व ।
प्रश्न 180 :– आत्मा का अनंतकाल तक भटकानेवाला क्रोध कौनसा है ?
उत्तर :– अनंतानुबंधी ।
प्रश्न 181 :– द्वादशांगी के कौन से अंग में साधु के आचारों का वर्णन है ?
उत्तर :– आचारांग सूत्र ।
प्रश्न 182 :– अजितनाथ का जन्म किस नगर में हुआ ?
उत्तर :– अयोध्या ।
प्रश्न 183 :– 35 गुणों से युक्त देशना किसकी होती है ?
उत्तर :– अरिहंतों की ।
प्रश्न 184 :– कौनसे एक ही स्तोत्र (स्तवन) में दो भगवान की स्तुति है ?
उत्तर :– अजितशांति ।
प्रश्न 185 :– सुलसा श्राविका की परीक्षा किसने की ?
उत्तर :– अंबड परिव्राजक ने ।

प्रश्न 186 :– 450 धनुष की काया कौन से भगवान की है ?

उत्तर :– अजितनाथ ।

प्रश्न 187 :– किस सती को 22 वर्ष तक पति का वियोग रहा ?

उत्तर :– अंजना महासती ।

प्रश्न 188 :– तीन दिन आहार त्याग को क्या कहते है ?

उत्तर :– अठ्ठम तप ।

प्रश्न 189 :– किसी पर कलंक लगाना कौनसा पाप है ?

उत्तर :– अभ्याख्यान ।

प्रश्न 190 :– किस कर्म के उदय से दान आदि में अंतराय पैदा होता है ?

उत्तर :– अंतराय कर्म ।

प्रश्न 191 :– 'तत्त्व का चिंतन' स्वाध्याय का कौनसा भेद है ?

उत्तर :– अनुप्रेक्षा ।

प्रश्न 192 :– तीस मुहुर्त के काल को क्या कहते है ?

उत्तर :– अहोरात्र ।

प्रश्न 193 :– तीर्थ स्थापना के पूर्व मोक्ष में जानेवाले को क्या कहते है ?

उत्तर :– अतीर्थ सिद्ध ।

प्रश्न 194 :– 1500 तापसों के पारणे हेतु गौतमस्वामी ने कौनसी लब्धि का प्रयोग किया ?

उत्तर :– अक्षीण महानसी ।

प्रश्न 195 :– क्रोध के कारण अनंत संसार किसने बढाया ?

उत्तर :– अग्निशर्मा तापस ने ।

प्रश्न 196 :– शील के कितने भंग होते है ?

उत्तर :– अठारह हजार ।

प्रश्न 197 :– भावना के प्रभाव से जीरणशेठ मरकर कौन से देवलोक में गए ?

उत्तर :– अच्युत ।

प्रश्न 198 :– दोनों हाथ जोडकर किए जानेवाले प्रणाम को क्या कहते है ?

उत्तर :– अंजलिबद्ध प्रणाम ।

प्रश्न 199 :– साधु की कितनी माताएँ है ?

उत्तर :– अष्ट प्रवचन माता ।

प्रश्न 200 :– माँ के गर्भ में बालक पहला कौनसा आहार लेता है ?

उत्तर :– ओजाहार ।

प्रश्न 201 :– कौनसा सर्प वमन किए विष को नहीं चूसता है ?

उत्तर :– अंगधन कुल का सर्प ।

प्रश्न 202 :– बारह भावनाओं में पहली भावना कौनसी है ?

उत्तर :– अनित्य भावना ।

प्रश्न 203 :– तीन प्रहर तक आहार त्याग को क्या कहते है ?

उत्तर :– अवड्ढ ।

प्रश्न 204 :– किसी के दोष बोलने को क्या कहते है ?

उत्तर :– अवर्णवाद (निंदा) ।

प्रश्न 205 :– तीर्थंकर प्रभु देवलोक में से कौनसा ज्ञान साथ में लेकर जन्म लेते है ?

उत्तर :– अवधिज्ञान ।

प्रश्न 206 :– उत्तर और पूर्व के बीच विदिशा का क्या नाम है ?

उत्तर :– ईशाण ।

प्रश्न 207 :– तामली तापस मरकर क्या बना ?

उत्तर :– ईशान इन्द्र ।

प्रश्न 208 :– सुमंगला ने कितने पुत्र युगलों को जन्म दिया ?

उत्तर :– 49 ।

प्रश्न 209 :– राजीमती के पिता का क्या नाम था ?

उत्तर :– उग्रसेन राजा ।

प्रश्न 210 :– वट वृक्ष के नीचे 84 शिष्यों को आचार्य पद किसने दिया था ?

उत्तर :– आचार्य उद्योतनसूरिजी ।

प्रश्न 211 :– मोक्ष में जानेवाले अंतिम राजर्षि कौन हुए ?

उत्तर :– उदायन ।

प्रश्न 212 :– किस आगम में 36 अध्ययन है ?

उत्तर :– उत्तराध्ययन सूत्र में ।

प्रश्न 213 :– पक्खी की आलोचना में क्या आता है ?

उत्तर :– एक उपवास ।

प्रश्न 214 :– सिद्धर्षि ने कौनसा ग्रंथ रचा, जो वैराग्य पोषक है ?

उत्तर :– उपमिति भव प्रपंचा ।

प्रश्न 215 :– पृथ्वीकाय का उत्कृष्ट आयुष्य कितना है ?

उत्तर :– 22000 वर्ष ।

प्रश्न 216 :– उपशम भाव में दो कौनसे भेद आते है ?

उत्तर :– (1) उपशम सम्यक्त्व (2) उपशम चारित्र ।

प्रश्न 217 :– सामग्री होने पर भी उसके उपभोग में अंतराय कौन करता है ?

उत्तर :– उपभोगांतराय कर्म ।

प्रश्न 218 :– घर मंदिर में प्रभु का मुख किस दिशा में होना चाहिए ?

उत्तर :– घर मंदिर में प्रभु का मुख दक्षिण व पश्चिम सन्मुख होना चाहिए । विदिशा अग्नि-नैऋत्य व वायव्य तथा उत्तर में तो नहीं होना चाहिए ।

प्रश्न 219 :– बीस स्थानक यंत्र की पूजा के बाद प्रभुजी की पूजा कर सकते है ?

उत्तर :– नवपद की तरह बीस स्थानक में भी सभी पद गुण स्वरुप होने से उसकी पूजा के बाद भगवान की पूजा कर सकते है ।

प्रश्न 220 :– सामायिक में गर्म पानी पी सकते हैं ?

उत्तर :– सामायिक अल्पकालीन होने से उसमें आहार-पानी का निषेध हैं, जब कि पौषध 4-8 प्रहर का होने से उसमें आहार-पानी की भी छूट है।

प्रश्न 221 :– क्या रात हो जाने से गर्म पानी सचित्त हो जाता है ?

उत्तर :– नहीं ! अचित्त जल की जो काल मर्यादा-गर्मी, सर्दी व चातुर्मास में 5-4 व 3 प्रहर की कही है। उस काल मर्यादा के अनुसार दिन में देरी से या शाम को गर्म किया पानी भी रात्रि में अचित्त रह सकता है।

प्रश्न 222 :– दूज को चंद्र दर्शन क्यों करते हैं ?

उत्तर :– वृद्धवाद की मान्यता है कि दूज के दिन चांद के दो किनारों पर शाश्वत जिन मंदिर होने से उनके दर्शन की भावना से दूज के चांद के दर्शन करते है।

अन्य लौकिक लक्ष्य से दर्शन करने पर लौकिक मिथ्यात्व का दोष लगता है।

प्रश्न 223 :– महावीर प्रभु की अधिष्ठायिका देवी का क्या नाम था ?

उत्तर :– सिद्धायिका।

प्रश्न 224 :– पर्युषण का मुख्य कर्त्तव्य कौनसा है ?

उत्तर :– क्षमापना।

प्रश्न 225 :– अष्टापद पर प्रभु भक्ति से तीर्थंकर नाम कर्म उपार्जित करनेवाला कौन था ?

उत्तर :– रावण।

प्रश्न 226 :– नौ नोकषाय में से एक ?

उत्तर :– रति।

प्रश्न 227 :– श्रावक के वार्षिक 11 कर्त्तव्यों में तीसरा कर्त्तव्य ?

उत्तर :– रथ यात्रा।

प्रश्न 228 :– सिद्धगिरि पर प्राचीन वृक्ष कौनसा है ?

उत्तर :– रायणवृक्ष।

प्रश्न 229 :– किस ध्यान से आत्मा नरक में जाती है ?

उत्तर :– रौद्र ध्यान से ।

प्रश्न 230 :– किस ज्ञान के 340 भेद है ?

उत्तर :– मतिज्ञान के ।

प्रश्न 231 :– श्रेणिक किस देश के राजा थे ?

उत्तर :– मगध देश ।

प्रश्न 232 :– जय जय आरती किसने बनाई ?

उत्तर :– मूलचंद ।

प्रश्न 233 :– स्पर्शनेन्द्रिय से कौनसा आहार लेते है ?

उत्तर :– लोमाहार ।

प्रश्न 234 :– माया से लक्ष्मणा साध्वी ने अपना कितना संसार बढाया ?

उत्तर :– 80 चौबीसी का ।

प्रश्न 235 :– मिथ्यादृष्टि के अवधिज्ञान को क्या कहते है ?

उत्तर :– विभंगज्ञान ।

प्रश्न 236 :– मानुषोत्तर पर्वत का आकार कैसा है ?

उत्तर :– वलयाकार ।

प्रश्न 237 :– दसवे पूर्व का विच्छेद कब हुआ ?

उत्तर :– वज्रस्वामी के बाद ।

प्रश्न 238 :– गोचरी जाते समय चौबीसी तीर्थंकरों की स्तुतियों की रचना किसने की ?

उत्तर :– शोभनमुनि ने ।

प्रश्न 239 :– 100 औषधियों मिलाकर जो तैल तैयार करते हैं उसे क्या कहते है ?

उत्तर :– शतपाक तैल ।

प्रश्न 240 :– आचारांग व सूत्रकृतांग के टीकाकार कौन है ?

उत्तर :– शीलांकाचार्य ।

प्रश्न 241 :– भरत चक्री की माता का क्या नाम था ?

उत्तर :– सुमंगला ।

प्रश्न 242 :– बाहुबली की सगी बहन का क्या नाम था ?

उत्तर :– सुंदरी ।

प्रश्न 243 :– देवियों की उत्पत्ति किस देवलोक तक होती है ?

उत्तर :– ईशान देवलोक तक ।

प्रश्न 244 :– द्रौपदी ने किस भव में धर्मरुचि मुनि को कडवी तुंबडी का शाक बहोराया था ?

उत्तर :– नागश्री के भव में ।

प्रश्न 245 :– अभव्य आत्मा कौन से देवलोक तक जा सकती है ?

उत्तर :– नौवे ग्रैवेयक तक ।

प्रश्न 246 :– उत्सर्पिणी के दूसरे आरे के अंत में कौनसा मेघ बरसेगा ?

उत्तर :– पुष्करावर्त मेघ ।

प्रश्न 247 :– आदिनाथ प्रभु का शासन कितने समय तक चला ?

उत्तर :– 50 लाख करोड सागरोपम ।

प्रश्न 248 :– कौनसी निद्रा चलते चलते भी आती है ?

उत्तर :– प्रचला + प्रचला ।

प्रश्न 249 :– रुक्मिणी के किस पुत्र को 16 वर्ष तक माता-पिता का वियोग रहा ?

उत्तर :– प्रद्युम्नकुमार ।

प्रश्न 250 :– चौबीस में से कितने तीर्थंकरों पर उपसर्ग नहीं हुए ?

उत्तर :– 22 ।

प्रश्न 251 :– मल्लिनाथ प्रभु का प्रसिद्ध तीर्थ कौनसा है ?

उत्तर :– भोयणी ।

प्रश्न 252 :– 4 अभक्ष्य विगई को क्या कहते है ?

उत्तर :– महाविगई ।

प्रश्न 253 :– कौन से कर्म चरम शरीरी को भी अवश्य भुगतने पडते है ?

उत्तर :– भोगावली कर्म ।

प्रश्न 254 :– जाति स्मरण ज्ञान किस ज्ञान को भेद है ?

उत्तर :– मतिज्ञान का ।

प्रश्न 255 :– पांच इन्द्रियों के कुल कितने विषय है ?

उत्तर :– 23 ।

प्रश्न 256 :– मेरु पर्वत कितने लोक को स्पर्श करता है ?

उत्तर :– तीनों लोक को ।

प्रश्न 257 :– महावीर प्रभु के समय कितने पाखंडी थे ?

उत्तर :– 363 ।

प्रश्न 258 :– किस निद्रा के उदयवाला अवश्य नरक में जाता है ?

उत्तर :– थीणाद्धि ।

प्रश्न 259 :– जंबूद्वीप का आकार कैसा है ?

उत्तर :– थाली जैसा गोल ।

प्रश्न 260 :– एक मुहुर्त में कितनी घडी होती है ?

उत्तर :– 2 ।

प्रश्न 261 :– बारहवें अंग का क्या नाम है ? (आगम)

उत्तर :– दृष्टिवाद ।

प्रश्न 262 :– अंतिम समय में प्रभुवीर ने गौतम स्वामी को कहां भेजा था ?

उत्तर :– देवशर्मा ब्राह्मण को प्रतिबोध के लिए ।

प्रश्न 263 :– राणकपूर मंदिर किसने बनाया ?

उत्तर :– धरणाशा पोरवाल ने ।

प्रश्न 264 :– वज्रस्वामी को भिक्षा में बहोरानेवाले महात्मा कौन थे ?

उत्तर :– धनगिरि मुनि ।

प्रश्न 265 :– प्रभु वीर के समय छट्ठ के पारणे जीवन पर्यंत आयंबिल करनेवाले कौन थे ?

उत्तर :– धन्ना काकंदी ।

प्रश्न 266 :– तिलकमंजरी ग्रंथ की रचना किसने की ?

उत्तर :– धनपाल कवि ने ।

प्रश्न 267 :– इस अवसर्पिणी में नरक में जानेवाले चक्रवर्ती कौन थे ?

उत्तर :– दो (1) सुभूम (2) ब्रह्मदत्त ।

प्रश्न 268 :– एक कालचक्र में कितना समय होता है ?

उत्तर :– बीस कोडाकोडि सागरोपम ।

प्रश्न 269 :– खटमल के कितनी इन्द्रियाँ होती है ?

उत्तर :– तीन इन्द्रियाँ ।

प्रश्न 270 :– कौन से आचार्य के 500 शिष्यों को घाणी में पीला गया था ?

उत्तर :– स्कंदिलाचार्य ।

प्रश्न 271 :– थोडा भी गर्भ रहा हो, वह स्त्री दीक्षा के लिए योग्य है ?

उत्तर :– नहीं ।

प्रश्न 272 :– गौतम स्वामी को केवलज्ञान कहाँ हुआ था ?

उत्तर :– गुणियाजी में ।

प्रश्न 273 :– तीर्थंकरों के मुख्य शिष्यों को क्या कहते हैं ?

उत्तर :– गणधर ।

प्रश्न 274 :– गोशाला के पिता का क्या नाम था ?

उत्तर :– मंखली ।

प्रश्न 275 :– सास्वादन गुण स्थान का काल कितना है ?

उत्तर :– छह आवलिका ।

प्रश्न 276 :– बडी दीक्षा समय कौनसा चारित्र आता है ?

उत्तर :– छेदोपस्थापनीय ।

प्रश्न 277 :– तीर्थंकर के लांछन शरीर में कहाँ होते है ?

उत्तर :– जंघा पर ।

प्रश्न 278 :– जंबूद्वीप में कितने सूर्य-चंद्र है ?

उत्तर :– दो-दो ।

प्रश्न 279 :– बाहुबली किस नगरी के राजा थे ?

उत्तर :– तक्षशिला ।

प्रश्न 280 :– पंचेन्द्रिय तिर्यंच का उत्कृष्ट आयुष्य कितना होता है ?

उत्तर :– तीन पल्योपम ।

प्रश्न 281 :– वीर्याचार के कितने भेद है ?

उत्तर :– तीन ।

प्रश्न 282 :– उदर के बल पर चलनेवाले पंचेन्द्रिय जीवों को क्या कहते है ?

उत्तर :– उर परिसर्प ।

प्रश्न 283 :– विनयरत्न ने किस राजा की हत्या की थी ?

उत्तर :– उदायी राजा की ।

प्रश्न 284 :– वस्त्रों का पडिलेहन किस आसन में किया जाता है ?

उत्तर :– उत्कटिकासन में ।

प्रश्न 285 :– नेमिनाथ के साथ कितने व्यक्तियों ने दीक्षा ली थी ?

उत्तर :– 1000 ।

प्रश्न 286 :– छ'री पालक संघ में कम से कम कौनसा तप करना चाहिए ?

उत्तर :– एकासना ।

प्रश्न 287 :– शांतिनाथ प्रभु का दीक्षा बाद छद्मस्थ काल कितना है ?

उत्तर :– एक वर्ष ।

प्रश्न 288 :– छठी नरक में कितने नरकावास है ?

उत्तर :– 99995 ।

प्रश्न 289 :– राजीमती को दीक्षा के बाद कब केवलज्ञान हुआ ?

उत्तर :– एक वर्ष बाद ।

प्रश्न 290 :– जमाली मरकर कौनसा देव हुआ ?

उत्तर :– किल्बिषिक ।

प्रश्न 291 :– नारक जीवों का जन्म कहाँ होता है ?

उत्तर :– कुंभि में ।

प्रश्न 292 :– संप्रति राजा के पिता का क्या नाम था ?

उत्तर :– कुणाल ।

प्रश्न 293 :– मोहनीय कर्म के मुख्य दो भेद कौनसे है ?

उत्तर :– (1) दर्शनमोहनीय और (2) चारित्र मोहनीय ।

प्रश्न 294 :– सुमतिनाथ भगवान का लांछन कौनसा है ?

उत्तर :– क्रौंच पक्षी ।

प्रश्नों के जवाब संख्या में दे :–

प्रश्न 295 :– वीर प्रभु ने अपने निर्वाण के पूर्व कितने प्रहर देशना दी ?

उत्तर :– 16 ।

प्रश्न 296 :– नेमिनाथ के कितने वर्ष बाद पार्श्वनाथ हुए ?

उत्तर :– 83750 वर्ष ।

प्रश्न 297 :– तीर्थंकरों का जघन्य आयुष्य कितना होता है ?

उत्तर :– 72 वर्ष ।

प्रश्न 298 :– स्वयंभूरमण समुद्र में कितने योजन की मछलियाँ होती है ?

उत्तर :– 1000 योजन ।

प्रश्न 299 :– शांतिनाथ के कितने गणधर थे ?

उत्तर :– 36 ।

प्रश्न 300 :– वासुदेव के कितनी पत्नियाँ होती है ?

उत्तर :– 32000 ।

प्रश्न 301 :– एक पूर्व में कितने वर्ष होते है ?

उत्तर :– 7,056 अरब वर्ष ।

प्रश्न 302 :– चक्रवर्ती कितने देशों का राजा होता है ?

उत्तर :– 32000 ।

प्रश्न 303 :– संप्रति ने कितने बिंब भरवाएँ ?

उत्तर :– सवा करोड ।

प्रश्न 304 :– परीषह कितने होते हैं ?

उत्तर :– 22 ।

प्रश्न 305 :– कायोत्सर्ग के कितने दोष है ?

उत्तर :– 19 ।

प्रश्न 306 :– अरिहंत के कुल अतिशय कितने होते है ?

उत्तर :– 34 ।

प्रश्न 307 :– जमाली के कितने भव होंगे ?

उत्तर :– जमाली पंद्रह भवों के बाद मोक्ष में जाएंगे ।

प्रश्न 308 :– गौतमस्वामी ने 1500 तापसों को खीर से पारणा कराया था, वह खीर वैक्रिया थी ?

उत्तर :– वह खीर वैक्रिय नहीं थी परंतु अक्षीण महानसी लब्धि के कारण थोडीसी खीर से भी 1500 मुनियों का पारणा हो पाया था ।

प्रश्न 309 :– चौदह पूर्वधर तथा 10 पूर्वधरों की तरह 2-3 पूर्वधर भी होते हैं ?

उत्तर :– एक-दो आदि पूर्वधर भी महात्मा होते है ।

प्रश्न 310 :– साधु-साध्वीजी को दिन में निद्रा कल्पती है ?

उत्तर :– उत्सर्ग मार्ग से साधु को दिन में निद्रा निषिद्ध है परंतु विहार की थकावट, वृद्धावस्था व रोग आदि के कारण दिन में निद्रा की छूट है ।

प्रश्न 311 :– साधु को दिन के प्रथम प्रहर में लाई हुई गोचरी चौथे प्रहर में कल्पती हैं ?

उत्तर :– तीन प्रहर के बाद वह भिक्षा कालातीत होने से चौथे प्रहर में नहीं कल्पती है ।

प्रश्न 312 :– साध्वीजी को दृष्टिवाद पढने की छूट हैं ?

उत्तर :– साध्वीजी को दृष्टिवाद पढने का निषेध है । इतना ही नहीं दृष्टिवाद के अन्तर्गत आए सूत्र 1 नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः तथा नमोस्तु वर्धमानाय व **'विशाल लोचन दल'** आदि सूत्र पढने का भी निषेघ है ।

प्रश्न 313 :– चौदहपूर्वों की रचना किस भाषा में है ?

उत्तर :– संस्कृत में ।

प्रश्न 314 :– साधु के 140 अतिचार कौनसे हैं ?

उत्तर :– चरण सित्तरी संबंधी 70 और करणसित्तरी संबंधी 70, इस प्रकार 140 अतिचार है ।

प्रश्न 315 :– साधु भगवंत ने धर्मलाभ दिया हो, वह वस्तु श्रावक अपने उपयोग में ले सकते हैं ?

उत्तर :– साधु-साध्वी के द्वारा धर्मलाभ दी गई वस्तु का उपयोग श्रावक नहीं कर सकते हैं ।

प्रश्न 316 :– साधु को दूसरी पोरिसी का पानी कब लाना चाहिए ?

उत्तर :– पोरिसी का पच्चक्खाण आने के बाद दूसरी पोरिसी का पानी लाना चाहिए ।

प्रश्न 317 :– साधु के दीक्षा पर्याय में छोटे-बडे की गणना कब से होती है ?

उत्तर :– बडी दीक्षा के क्रम से छोटे-बडे का व्यवहार होता है ।

प्रश्न 318 :– जिस गांव में जिन मंदिर न हो तो साधु-साध्वी को मंदिर संबंधी चैत्यवंदन कहाँ करना चाहिए ?

उत्तर :– प्रतिष्ठित स्थापनाचार्य में पंचपरमेष्ठी की स्थापना होती है, अतः मंदिर के अभाव में स्थापनाचार्य के सन्मुख चैत्यवंदन कर सकते है ।

प्रश्न 319 :– M.C. में रही स्त्री के मस्तक पर गुरु भगवंत वासक्षेप डाल सकते है ?

उत्तर :– नहीं डाल सकते है ।

प्रश्न 320 :– जैनी दीक्षा को भागवती-दीक्षा क्यों कहते हैं ?

उत्तर :– भगवान द्वारा आचरित एवं प्ररुपित होने से जैनी दीक्षा को भागवती दीक्षा कहते है ।

प्रश्न 321 :– साधु की 7 मांडली कौनसी हैं ?

उत्तर :– (1) सूत्र मांडली : पहले प्रहर में सभी साधु इकट्ठे होकर सूत्रों का स्वाध्याय करे, उसे सूत्र मांडली कहते है ।

(2) अर्थख मांडली : सभी साधु मिलकर सूत्र के अर्थ का वाचन करे या श्रवण करे उसे अर्थ-मांडली कहते है ।

(3) भोजन मांडली : सभी साधु साथ में बैठकर भोजन करे, उसे भोजन मांडली कहते है ।

(4) काल मांडली : सभी साधु मिलकर काल का पवेयणुं-प्रवेदन करे, उसे काल मांडली कहते है ।

(5) आवश्यक मांडली : सभी साधु साथ में मिलकर आवश्यक प्रतिक्रमण, पात्रा पडिलेहण आदि करे, वह आवश्यक मांडली है ।

(6) स्वाध्याय मांडली : सभी साधु मिलकर सज्झाय पठाए, उसे स्वाध्याय मांडली कहते है ।

(7) संथारा मांडली : साधु साथ में मिलकर साथ मे संथारा पोरिसी पढाए, उसे संथारा मांडली कहते है ।

प्रश्न 322 :– नाटक में कोई साधु का पात्र भज सकता है ?

उत्तर :– नहीं ।

तीर्थंकर व साधु का पात्र भजने का किसी को अधिकार नहीं है ।

साधु का वेष पहिनने के बाद उतार नहीं सकते है ।

प्रश्न 323 :– प्रभु का अभिषेक नौ अंगों पर करना चाहिए ?

उत्तर :– नहीं ! प्रभु का अभिषेक मस्तक पर करना चाहिए । मस्तक पर किया अभिषेक पूरे शरीर में फैल जाता है ।

प्रश्न 324 :– स्नात्र पूजा समय त्रिगडे की रचना कैसी होनी चाहिए ?

उत्तर :– प्रभु का अभिषेक मेरुपर्वत पर होता हैं, अतः मेरुपर्वत के प्रतीक के रुप में त्रिगेड की रचना चाहिए ।

प्रश्न 325 :– प्रभु की वासक्षेप पूजा के बाद व वासक्षेप अपने मस्तक पर डाल सकते हैं ?

उत्तर :– नहीं ! शंखेश्वर आदि तीर्थों में कई लोग अज्ञानता के कारण प्रभु की वासक्षेप पूजा कर वह वासक्षेप अपने मस्तक पर लगाते हैं, परंतु वह उचित नहीं है ।

प्रश्न 326 :– जिनमंदिर में पंखा, A.C. रख सकते है ?

उत्तर :– शक्य हो तो जिनमंदिर में Electric Light भी नहीं होनी चाहिए । इतना शक्य न हो तो कम से कम पंखा, A.C. आदि हिंसक सुख के साधनों से तो अवश्य बचना चाहिए ।

मंदिर तो धर्मस्थान है, वहां पुण्यबंध व कर्म निर्जरा की साधना होनी चाहिए । अतः इन साधनों का क्तई उपयोग नहीं करना चाहिए ।

प्रश्न 327 :– मंदिर में पूजारी बनियान आदि पहिनकर पूजा करे तो उचित हैं ?

उत्तर :– पूजा का Dress पूजा करनेवाले सभी को लागू होता है, अतः पूजारी को भी धोती-खेश ही पहिनना चाहिए ।

प्रश्न 328 :– पार्श्वनाथ एवं सुपार्श्वनाथ को कितनी फणाएं होती है ?

उत्तर :– पार्श्वनाथ को 3, 7 व 11 तथा सुपार्श्वनाथ को 1, 5, व 9 फणाएं होती है ।

प्रश्न 329 :– प्रभु को कच्चेफल, पपीता, कच्ची केरी चढा सकते हैं ?

उत्तर :– नहीं ! पका हुआ फल चढाना चाहिए ।

प्रश्न 330 :– प्रभु के जन्म आदि कल्याणक में कौनसे देव आते हैं ?

उत्तर :– बारहवे वैमानिक देवलोक तक के देव आते है । चारों निकाय के देव भवनपति, व्यंतर, ज्योतिष और वैमानिक आते है, सिर्फ कल्पातीत देव नहीं आते है ।

प्रश्न 331 :– आत्मा के सभी आत्म प्रदेशों पर कर्म लगे हुए है ?

उत्तर :– आत्मा के आठ रुचक प्रदेशों को छोडकर सभी प्रदेशों पर कर्म लगे है ।

प्रश्न 332 :– मंदिर की दिवाल पर घडी रखनी चाहिए या नहीं ?

उत्तर :– नहीं ! घडी रखने पर दर्शक का ध्यान बार बार उस ओर जाएगा, जिससे पूजा की क्रिया में जल्दबाजी करने का मन होगा ।

प्रश्न 333 :– वर्तमान में कोई आत्मा तीर्थंकर नाम की निकाचना कर सकती है ?

उत्तर :– तीर्थंकर नाम कर्म की निकाचना के लिए पहला संघयण भी जरुरी है, जो वर्तमान में नहीं है ।

तीर्थंकर नामकर्म का बंध और उसकी निकाचना में फर्क है । तीर्थंकर नाम कर्म का बंध कोई अन्य आत्मा भी कर सकती हैं, परंतु उसकी निकाचना तो तीर्थंकर होनेवाली आत्मा ही कर सकती है ।

प्रश्न 334 :– सभी भव्य जीव मोक्ष में जाएंगें ?

उत्तर :– भव्य अर्थात् जिसमें मोक्ष गमन की योग्यता है । जो भी जीव मोक्ष में गए, वे सब भव्य थे, परंतु जो भी भव्य जीव है, वे सब मोक्ष में जाएंगें, ऐसा नियम नहीं है ।

जयंति श्राविका के प्रश्न

जयंति श्राविका प्रभु के समवसरण में गई । उसने प्रभु को कई प्रश्न पूछे । वे सभी प्रश्नों के उत्तर श्री भगवती सूत्र के बारहवें शतक के दूसरे उद्देशा में **'जयंत-प्रश्नोत्तर'** के रुप में संग्रहित है ।

जयंति श्राविका ने पूछा, **'जीव भारी कर्मी किससे होता हैं ?'** प्रभु ने कहा, **'अठारह पाप स्थानकों के सेवन से...'** ।

प्रश्न 335 :– जीव का भव्यत्व और अभव्यत्व भाव स्वाभाविक है या पारिणामिक ?

उत्तर :– स्वाभाविक है ।

प्रश्न 336 :– जागृतदशा अच्छी या सुप्तदशा ?

उत्तर :– धर्मी जीव जागते भले और अधर्मी जीव सोते भले ।

प्रश्न 337 :– दुर्बलता अच्छा या सबलपना ?

उत्तर :– पापी जीव दुर्बल हो तो अच्छा और धर्मी जीव सबल हो तो अच्छा ।

प्रश्न 338 :– इन्द्रियवश बनने से जीव को क्या नुकसान हैं ?

उत्तर :– इन्द्रियों की पराधीनता से जीव चिकने कर्मों का बंध करता है ।

प्रश्न 339 :– श्रोतेन्द्रिय के वश होने से जीव को क्या नुकसान होता है ?

उत्तर :– वह जीव आयुष्य रहित सात या आयुष्य सहित आठ कर्म प्रकृति का बंध करता है ।

अल्प प्रदेशवाली प्रकृति को बहु प्रदेशवाली करता है । मंद रसवाली प्रकृति को तीव्र रसवाली करता है । अल्पस्थितिवाली प्रकृति को दीर्घ स्थितिवाला करता हैं । इसी प्रकार अन्य इन्द्रियों की पराधीनता के बारे में भी समझ लेना चाहिये ।

प्रश्न 340 :– स्वाध्याय के पांच भेद कौनसे है ?

उत्तर :– स्वाध्याय के पांच भेद वाचना, पृच्छना, परावर्तना, अनुप्रेक्षा और धर्मकथा ।

प्रश्न 341 :– प्रवचन के बीच में सामायिक ले सकते है या नहीं ?

उत्तर :– एक साथ में दो कार्य करने पर दोनों बिगडते है । अतः सामायिक लेनी हो तो प्रवचन के पहले ही ले लेनी चाहिए ।

प्रश्न 342 :– जिनवाणी श्रवण में उत्साह क्यों नहीं आता है ?

उत्तर :– जिनवाणी श्रवण की उत्सुकता भी आत्मा को संसार से पार कराने में सहायक है ।

मुफ्त में प्राप्त जिनवाणी की विशेष कीमत नहीं समझने से धर्मश्रवण में उत्साह नहीं आता है ।

प्रश्न 343 :– पर्युषण, ओली में एक तप के साथ दूसरा तप कर सकते है ?

उत्तर :– तप करने का विरोध नहीं है, परंतु जब ऐसा हो तब दूसरे तप के आयंबिल उपवासादि बाद में पुनः करने चाहिए ।

प्रश्न 344 :– जैन शासन में सबसे अधिक दीक्षाएँ कब हुई है ?

उत्तर :– वर्तमान की अपेक्षा भूतकाल में खूब दीक्षाए हुई है । भगवान ऋषभदेव के शासन में द्राविड-वारिक्खिलजी के साथ 10 करोड की दीक्षा । भगवान महावीर के शासन में जंबूकुमार के साथ 527 दीक्षाएं हुई है ।

प्रश्न 345 :– हीरसूरिजी की निश्रा में कितने साधु थे ?

उत्तर :– 400 वर्ष हुए पू. हीरसूरिजी की निश्रा में 2000 से अधिक साधु थे ।

प्रश्न 346 :– यति किसे कहते है ?

उत्तर :– मोक्ष के लिए जो प्रयत्न करे वह यति । परंतु आज यति शब्द शिथिलाचारी साधुओं में रुढ हो गया है ।

प्रश्न 347 :– श्रावक की व्याख्या क्या है ?

उत्तर :– सच्चा श्रावक वही है, जो सर्व विरति धर्म पाने का इच्छुक हो ।

प्रश्न 348 :– चिंता और चिंतन में क्या भेद है ?

उत्तर :– क्या होगा वह विचार चिंता है । उस समस्या का समाधान पाने के लिए जो होता है, वह चिंतन है । चिता मुर्दे को जलाती है चिंता जीते जी जलाती है ।

प्रश्न 349 :– मोक्ष मात्र जैन धर्म में हो सकता है या अन्य धर्म में भी ?

उत्तर :– जिसने राग-द्वेष को जीत लिया है, उसका मोक्ष हो सकता है चाहे वो कोई भी धर्म में क्यों न हो ।

प्रश्न 350 :– वेष का भी प्रभाव होता है ?

उत्तर :– भाव को पैदा करने में वेष आदि द्रव्य का भी प्रभाव पड़ता है । उदा. उदायन मंत्री को अंतिम अवस्था में वेषधारी साधु के दर्शन से भी समाधि मिली ।

प्रश्न 351 :– अनुकंपा और भक्ति में क्या भेद है ?

उत्तर :– दु:खी को देख मन में कंपन हो, उसका दु:ख देखा न जाए, वह अनुकंपा है । जबकि पूज्य व्यक्ति भक्ति के पात्र है ।

अनुकंपा में लेने वाले को गरज है, भक्ति में देने वाले को गरज है ।

भक्ति के 3 पात्र : 1) अरिहंत-रत्नपात्र है । 2) साधु-साध्वी-स्वर्ण पात्र है, 3) श्रावक-श्राविका-रजत पात्र है । दीन, गरीब, पशु आदि अनुकंपा के पात्र है ।

प्रश्न 352 :– श्रावक के प्रति कैसा भाव रखना चाहिए ?

उत्तर :– मां के जैसा वात्सल्य अपने साधर्मिक के प्रति रखना चाहिए ।

प्रश्न 353 :– खडे खडे भोजन की छूट किसे है ?

उत्तर :– मनुष्य को खडे खडे नहीं खाना चाहिए । मात्र जिनकल्पी साधु, तीर्थंकर आदि विशिष्ट लब्धिधारी महात्मा ही खडे-खडे कर पात्र में वापर सकते है ।

प्रश्न 354 :– जिनालय के गर्भगृह में उच्चारण पूर्व दोहें बोल सकते हैं ?

उत्तर :– नहीं ! स्नान से मात्र बाह्य शरीर स्वच्छ होता है परंतु शरीर में तो गंदगी भरी है, जो श्वासोच्छ्वास आदि से बाहर आती है । परमात्मा को हमारा श्वासोच्छ्वास का स्पर्श न हो इसलिए आठपड से मुखकोष बांधते है ।

प्रश्न 355 :– जिन प्रतिमा में किसकी कल्पना करनी चाहिए ?

उत्तर :– जिनालय में भगवान साक्षात रुप में हाजिर है ऐसा ही मानना है उसे मूर्ति नहीं माननी है ।

अंजन विधि के बाद मूर्ति में भगवद् भाव का आरोपण होता है ।

प्रश्न 356 :– जिनपूजा में मूल्यवान वस्त्र पहिन सकते है ?

उत्तर :– भगवान की पूजा करते समय इन्द्र महाराजा की ऋद्धि का अनुकरण करना है, अत: मूल्यवान वस्त्र एवं मुकुट आदि पहनने चाहिए ।

मंदिर में लोहा और Plastic का उपयोग नहीं होना चाहिए ।

प्रश्न 357 :– साधु को द्रव्यपूजा क्यों नहीं ?

उत्तर :– गृहस्थ घर, संसार में बैठा है, द्रव्य को लेकर बैठा है, अतः उसे अवश्य ही द्रव्य पूजा करनी चाहिए। साधु द्रव्य के त्यागी है, इसलिए उन्हें भाव पूजा करने का ही विधान है।

गृहस्थ को त्रिकाल परमात्मा की द्रव्य पूजा करनी चाहिए। वह भी दिन में सूर्योदय के पहले प्रक्षाल आदि नहीं करना चाहिए और आरती आदि भी सूर्यास्त के बाद नहीं करनी चाहिए।

प्रश्न 358 :– स्वाध्याय अभ्यंतर तप में सर्वश्रेष्ठ क्यों ?

उत्तर :– जो बाहर से दिखे, वह बाह्य तप है, जबकि जिसका बाहर से पता न चले वह अभ्यंतर तप है।

कर्म का बंध, मन, वचन और काया के योगों से होता है। इस दंड के रुप में भी ये ही योग है। इनके द्वारा करण, करावण और अनुमोदन से कर्म का बंध है। स्वाध्याय में मन, वचन और काया की एकाग्रता होती है, अतः अपूर्व कर्म निर्जरा होती है।

प्रश्न 359 :– धर्म क्रिया को छोटी-बडी कह सकते है ?

उत्तर :– जैन शासन में कोई भी क्रिया छोटी या बडी नहीं है, भाव की अपेक्षा से तो एक छोटी नवकारशी भी केवलज्ञान प्रदान करने में समर्थ है।

प्रश्न 360 :– तप का उद्देश्य क्या है ?

उत्तर :– शरीर की ममता को तोड़ने के लिए बाह्य तप है और मन की चंचलता को बांधने के लिए अभ्यंतर तप है। भूल सुधारने के लिए प्रायश्चित है।

स्वाध्याय के समान अन्य कोई तप नहीं है। यह तप बार बार और सतत किया जा सकता है।

साधुओं के लिए दिन में 5 प्रहर स्वाध्याय करने की आज्ञा है।

प्रश्न 361 :– साधु जीवन में नींद की छूट है ?

उत्तर :– 24 घंटे अप्रमत्त रुप से साधना करने की शक्ति हमारे पास में नहीं है, इसलिए साधु जीवन में भी 2 प्रहर निद्रा की छूट है।

प्रश्न 362 :– साधु और श्रावक को निद्रा त्याग कब करना चाहिए ?

उत्तर :– शरीर के लिए निद्रा जरुरी है, फिर भी वह मर्यादित होनी चाहिए। साधुओं को सूर्योदय के एक प्रहर पहले और श्रावकों को सूर्योदय के 4 घडी पहले जगना है। जो सूर्योदय के समय तक सोता रहता है, उसके बल, बुद्धि और आयुष्य का क्षय होता है।

प्रश्न 363 :– स्वाध्याय का क्या अर्थ है ?

उत्तर :– स्व-आत्मा, अध्याय-उसका ज्ञान प्राप्त करना। जो आत्मा की जानकारी प्रदान कर आत्म हित में प्रवृत्ति करावे, वह स्वाध्याय है।

प्रश्न 364 :– श्रावक को स्वाध्याय जरुरी है ?

उत्तर :– प्रत्येक श्रावक को कम से कम एक घंटे का स्वाध्याय अवश्य करना चाहिए। एक घंटे जितना स्वाध्याय करने पर एक एकासने का लाभ मिलता है।

जिसके जीवन में स्वाध्याय है, उसके जीवन में समाधि है।

प्रश्न 365 :– बिजली के प्रकाश में शाम का प्रतिक्रमण कर सकते है ?

उत्तर :– नहीं, पाप से पीछे हटने के लिए प्रतिक्रमण, है, जबकि Light चालू रखने में जीवो की विराधना है अत: विराधना के साथ आराधना योग्य नहीं है। वर्तमान में पैदा होने वाली Electricity में जलचर आदि जीवों की खूब-खूब हिंसा है।

प्रश्न 366 :– मृत शरीर के पास में नवकार आदि बोल सकते है ?

उत्तर :– मृत शरीर, जब घोषित हो जाए तब कोई भी सूत्रोच्चार नही करना चाहिए। अशुद्ध बस्ती में सूत्रों का उच्चारण करने से ज्ञान की आशातना का पाप लगता है।

व्यक्ति जीवित हो और समाधि का प्रश्न हो तो नवकार आदि सुना सकते है, परंतु मृतक के सामने नहीं।

प्रश्न 367 :– 100 वर्ष प्राचीन जिनालय को क्या कहते है ?

उत्तर :– उसे तीर्थ कहते है । आत्मा को जो भव सागर से तिराने का कार्य करे वह तीर्थ है ।

साधु-साध्वी जंगम तीर्थ है, तो शाश्वत जिनालय, कल्याणक भूमि आदि स्थावर तीर्थ है ।

प्रश्न 368 :– शासन के प्रति हमारा क्या कर्तव्य है ?

उत्तर :– शक्ति हो तो परमात्म शासन की ज्योत मे घी डालते हुए आत्म बलिदान देना चाहिए, वह न हो तो शान्त रहना चाहिए परंतु फूंक मारने का काम तो कभी नहीं करना चाहिए ।

प्रश्न 369 :– पौषध में वासक्षेप पूजा कर सकते है ?

उत्तर :– नहीं ! पौषध और सामायिक में श्रावक भी साधुवत् निष्परिग्रही होता है । अतः पूजा नहीं कर सकते । वासक्षेप डलवाने का निषेध नहीं है । वासक्षेप डलवाना गुरु का आशीर्वाद है ।

प्रश्न 370 :– 'नमोऽस्तु' आदि जोर से क्यों बोलते है ?

उत्तर :– छह आवश्यक की पूर्णाहूति के आनंद को व्यक्त करने के लिए शासन पति की स्तुति सबको साथ में करनी चाहिए ।

प्रश्न 371 :– कुसुमिण दुसुमिण के कायोत्सर्ग का प्रमाण कितना है ?

उत्तर :– रात्रि में काया सो जाती है, परंतु मन सोता नहीं है । इसलिए रात्रि में सोते समय शुभ भावना से भावित होना चाहिए । फिर भी यदि हिंसा आदि के दुस्वप्न एवं मैथुन संबंधी कुस्वप्न का दोष लगा हो तो यह काउसग्ग किया जाता है ।

कुस्वप्न के प्रसंग में 108 श्वासोश्वास प्रमाण काउस्सग करना है, इसलिए सागरवर गंभीरा तक करें । दुस्वप्न के प्रसंग में 100 श्वा. प्रमाण कायोत्सर्ग करना चाहिए । इसलिए चंदेसु निम्मलयरा तक करना है ।

प्रश्न 372 :– पोरिसी कब आती है ?

उत्तर :– उपवास आदि के पच्चक्खाण एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक है । नवकार सहियं, पोरिसी आदि काल पच्चक्खाण है ।

ये पच्चक्खाण सूर्योदय से शुरु होते है । नवकार सहियं-सूर्योदय के 48 मिनिट के बाद । पोरिसी-एक प्रहर बाद ।

प्रश्न 373 :– प्रभुजी की प्रतिष्ठा किस मुद्रा में होनी चाहिए ?

उत्तर :– तीर्थंकर परमात्मा कायोत्सर्ग या पर्यंकासन मुद्रा में निर्वाण प्राप्त करते हैं, अतः उनकी प्रतिमा इन्हीं दो मुद्राओं में स्थापित कगी जाती है ।

प्रश्न 374 :– मूलनायक की अपेक्षा अन्य भगवान की गादी ऊंची हो सकती है ?

उत्तर :– भगवान की स्थापना में दृष्टिमेल देखा जाता है, अतः मूलनायक भगवान छोटी Size के हो तो गादी ऊंची भी कर सकते है ।

प्रश्न 375 :– प्रभुजी की अंगुली खंडित हो गई हो तो क्या उस प्रतिमा का विसर्जन कर देना चाहिए ?

उत्तर :– मुख्य अंग हृदय, मस्तक आदि खंडित हो गए हो तो उनका विसर्जन किया जाता है । अंगुली आदि खंडित होने पर लेप कर सकते हैं ।

प्रश्न 376 :– क्या गणधर या केवली भगवंत, भगवान की प्रतिष्ठा करते हैं ?

उत्तर :– जीरावला पार्श्वनाथ की प्रतिष्ठा शुभ गणधर ने की है-कपिल केवली ने भी महावीर प्रभु की प्रतिमा की प्रतिष्ठा की है । इससे सिद्ध होता है कि गणधर केवली भी प्रतिष्ठा कर सकते है ।

प्रश्न 377 :– प्रतिमा में परिकर का क्या प्रयोजन है ?

उत्तर :– अरिहंत परमात्मा की विविध अवस्थाओं के चिंतन के लिए परिकर उपयोगी है ।

परिकर से भावोल्लास बढता है । प्रभु की बाह्य समृद्धि का प्रतीक है ।

प्रश्न 378 :– वासक्षेप पूजा कब कर सकते है ?

उत्तर :– ब्रह्मचर्य पालन किया हो तो श्रावक सामायिक के शुद्ध वस्त्रों में मुख कोश बांधकर प्रभु का स्पर्श किए बिना वासक्षेप पूजा कर सकता है ।

प्रश्न 379 :– प्रभुजी के खोके (चांदी या धातु के कवर) पर अंग पूजा हो सकती है ?

उत्तर :– प्राचीन प्रतिमा की सुरक्षा आदि के लिए प्रतिमा पर चांदी का खोका चढाया जाता है। पूजा करते समय प्रभुजी की ही पूजा का भाव होने से खोके पर की गई पूजा भी सफल है।

प्रश्न 380 :– गुरु भगवंत के सामने गहुंली में सिद्धशिला की रचना कर सकते हैं ?

उत्तर :– हाँ ! कर सकते है।

प्रश्न 381 :– अष्टमी-चतुर्दशी को पके फल से फल पूजा हो सकती है ?

उत्तर :– हाँ ! हो सकती है। अष्टमी-चतुर्दश के दिन फल अभक्ष्य नहीं है, बल्कि आसक्ति का कारण होने से उन महान दिनों में त्याग भाव में वृद्धि के लिए भोजन में उनका त्याग किया जाता है।

प्रश्न 382 :– प्रभुजी की अवस्था (पिंडस्थ, पदस्थ व रुपस्थ) का चिंतन कब करना चाहिये ?

उत्तर :– अष्टप्रकारी द्रव्य पूजा के बाद और भावपूजा (चैत्यवंदन) के पूर्व निसीहि कहकर करना चाहिए।

प्रश्न 383 :– स्नात्रपूजा में शांतिनाथ भगवान ही चाहिए ?

उत्तर :– सामान्यतया स्नात्र पूजा में शांतिनाथ भगवान रखते हैं, उसमें मुख्य कारण शांतिनाथ प्रभु शांति को करने वाले हैं। लघु शांति, संतिकरं, अजितशांति व बृहद्शांति में शांतिनाथ प्रभु की स्तवना है।

शांतिकलश में भी बडी शांति बोली जाती है। शांतिनाथ प्रभु का योग न हो तो पार्श्वनाथ आदि अन्य प्रभु पर भी स्नात्र पूजा कर सकते है।

प्रश्न 384 :– ध्वजा फट गई हो तो दूसरी ध्वजा चढा सकता हैं ?

उत्तर :– हाँ ! फटी हुई ध्वजा को उतारकर शुभ मुहुर्त में नई ध्वजा चढ़ा सकते है। बीच में ध्वजा बदलने पर भी वार्षिक ध्वजा का दिन तो प्रतिष्ठा दिन ही कहलाएगा।

प्रश्न 385 :– संतिकरं की 14वीं गाथा क्यों नहीं बोलते हैं ?

उत्तर :– अंतिम गाथा प्रक्षिप्त है । संतिकरं कल्प में भी 13 गाथाओं का निर्देश है ।

प्रश्न 386 :– घर मंदिर में कितने इंच की प्रतिमा रख सकते हैं ?

उत्तर :– उत्कृष्ट से 11 इंच ! अंक एकी संख्या में होने चाहिए ।

प्रश्न 387 :– घर मंदिर में प्रभुजी को परिकर (अष्ट प्रातिहार्य) जरुरी है ?

उत्तर :– हाँ ! परिकरवाले भगवान विराजमान करने चाहिए ।

प्रश्न 388 :– प्रभुजी व परिकर का रंग कैसा होना चाहिए ?

उत्तर :– प्रभुजी पाषाण के हो तो परिकर भी पाषाण का व प्रभुजी पंच धातु आदि के हो तो परिकर भी धातु का बनाना चाहिए ।

प्रभुजी व परिकर का रंग एक ही होना चाहिए ।

प्रश्न 389 :– गृह मंदिर के भंडार की रकम का क्या करना चाहिए ?

उत्तर :– (1) संघ मंदिर की पेढी में जमा कराए अर्थात् किसी मंदिर में जीर्णोद्धार आदि में दे ।

(2) जीर्णोद्धार में देते समय तख्ती में अपना नाम नहीं लिखाना चाहिए ।

(3) घर मंदिर के भंडार से अपने प्रभुजी के आभूषण-आंगी नहीं बनाना चाहिए ।

प्रश्न 390 :– प्रक्षाल जल कहां डालना चाहिए ?

उत्तर :– प्रक्षाल का जल गटर में न जाए, उसका ध्यान रखना चाहिए ।

जहां किसी का पैर न आए व जीव विराधना न हो, ऐसी जगह में परठना चाहिए ।

प्रश्न 391 :– गृह मंदिर में कौनसी मूर्ति नहीं रखनी चाहिए ?

उत्तर :– मार्बल पाउडर, प्लास्टर ऑफ पेरिस तथा प्लास्तिक की मूर्ति नहीं रखनी चाहिए ।

प्रश्न 392 :– घर के कंपाउंड में जिनालय हो तो वह गृह जिनालय कहलाता है ?

उत्तर :– नहीं ।

प्रश्न 393 :– घर मंदिर में पाषाण की प्रतिमा रख सकते हैं ?

उत्तर :– नहीं ! प्राय: कर पंच धातु या स्वर्ण-रजत आदि की प्रतिमा रखनी चाहिए ।

घर मंदिर में चल प्रतिष्ठा होती हैं–पाषाण की प्रतिमा इधर-उधर करने से खंडित होने की संभावना रहती है, अत: पंच धातु की प्रतिमा उचित है ।

प्रश्न 394 :– गृहमंदिर में कुलदेवी की स्थापना कर सकते है ?

उत्तर :– नहीं ! वीतराग परमात्मा के साथ कुलदेवी की स्थापना नहीं करनी चाहिए ।

प्रश्न 395 :– घर मंदिर में कौनसे भगवान रखने चाहिए ?

उत्तर :– प्रतिष्ठा कल्प के अनुसार नेमिनाथ, मल्लिनाथ व महावीर प्रभु सिवाय राशि मेल के अनुसार किसी भी भगवान की प्रतिष्ठा कर सकते है । संघ मंदिर में इन भगवान का निषेध नहीं है ।

प्रश्न 396 :– गृह मंदिर में कितने भगवान रखने चाहिए ?

उत्तर :– एक संख्या में 1, 3, 5 आदि रख सकते है ।

प्रश्न 397 :– मंदिर के शुद्धिकरण में वेक्युम क्लीनर का उपयोग कर सकते है ?

उत्तर :– नहीं ! उसमें जयणा का पालन नहीं होता है ।

प्रश्न 398 :– प्रभुजी के गर्भगृह में खिडकी या वेंटिलेटर रख सकते हैं ?

उत्तर :– नहीं ।

प्रश्न 399 :– माणेकस्तंभ कहां रखना चाहिए ?

उत्तर :– मंदिर के बाहर प्रभुजी के दाहिने हाथ की ओर रखना चाहिए ।

प्रश्न 400 :– सूरिमंत्र के वासक्षेप से प्रभुजी की वासक्षेप-पूजा कर सकते हैं ?

उत्तर :– नहीं !

प्रश्न 401 :– प्रभुजी की वासक्षेप पूजा के वासक्षेप का क्या करना चाहिए ?

उत्तर :– वह निर्माल्य होने से निर्जीव भूमि में परठ लेना चाहिए ।

प्रश्न 402 :– दूध न मिले तो बादम से अभिषेक कर सकते है ?

उत्तर :– दूध न मिले तो शुद्ध अथवा सर्वौषधि आदि उत्तम औषधियों के जल से अभिषेक कर सकते है ।

प्रश्न 403 :– प्रभु की अष्ट प्रकारी पूजा कब करनी चाहिए ?

उत्तर :– मुख्यतया मध्याह्न में और अनिवार्य कारण हो तो सूर्योदय बाद और सूर्यास्त पूर्व कर सकते है ।

प्रश्न 404 :– पहले मूलनायक प्रभु की ही पहले पूजा करनी चाहिए ?

उत्तर :– सामान्य से तो सर्व प्रथम मूलनायक की करनी चाहिए, कारण विशेष में दूसरे भगवान की भी कर सकते है ।

प्रश्न 405 :– छोड पर से चूंटने के बाद 48 मिनिट बाद ही फूल चढाने चाहिए या पहले भी चढा सकता है ?

उत्तर :– पुष्प में जीव जंतु हो तो उन्हें यतना पूर्वक दूर कर तुरंत भी चढा सकते है ।

प्रश्न 406 :– आरती कैसे करनी चाहिए ?

उत्तर :– आरती प्रदक्षिणा क्रम से घुमानी चाहिए । नाभि से नीचे व नासिका से ऊपर नहीं घुमानी चाहिए ।

प्रश्न 407 :– पार्श्वयक्ष व गणेश की प्रतिमा समान दिखती है, क्या फर्क है ?

उत्तर :– हाथी की सुंढ, बडा पेटा, बडे कान आदि से दोनों प्रतिमाएं समान दिखती है ।

परंतु गणेश की प्रतिमा में हाथ में लड्डू का थाल, चूंहे का वाहन व रिद्धि-सिद्धि दो पत्नियाँ होती है ।

पार्श्वयक्ष के हाथ में नेवला, सर्प व बिजोरा होता है तथा कछुए का वाहन तथा मस्तक पर फणाएं होती है ।

प्रश्न 408 :– प्रभुजी के पबासन के नीचे कौनसी देवी होती है ?

उत्तर :– प्रासाद देवी ।

प्रश्न 409 :– आयंबिल, एकासना आदि में नवकारसी में आहार-पानी कर सकते हैं ?

उत्तर :– हाँ ।

प्रश्न 410 :– भक्तामर स्तोत्र कब गिन सकते हैं ?

उत्तर :– दिन में कभी भी गिन सकते है ।

प्रश्न 411 :– मुनिसुव्रत स्वामी के पिता का क्या नाम था ?

उत्तर :– सुमित्र ।

प्रश्न 412 :– मुनिसुव्रत स्वामी की माता का क्या नाम था ?

उत्तर :– पद्मावती रानी ।

प्रश्न 413 :– मुनिसुव्रत स्वामी ने किस भव में तीर्थंकर नाम कर्म का उपार्जन किया ?

उत्तर :– सुरश्रेष्ठ राजा के भव में ।

प्रश्न 414 :– मुनिसुव्रत स्वामी के पूर्व भव में नगरी का नाम क्या था ?

उत्तर :– चंपा नगरी ।

प्रश्न 415 :– मुनिसुव्रत स्वामी का किस देवलोक से च्यवन हुआ ?

उत्तर :– अपराजित ।

प्रश्न 416 :– मुनिसुव्रतस्वामी का च्यवन किस तिथि को हुआ ?

उत्तर :– श्रावण सुद-15 ।

प्रश्न 417 :– मुनिसुव्रतस्वामी का च्यवन कल्याणक नगर कौनसा था ?

उत्तर :– राजगृही ।

प्रश्न 418 :– मुनिसुव्रतस्वामी का गर्भकाल कितना था ?

उत्तर :– 9 मास 8 दिन ।

प्रश्न 419 :– मुनिसुव्रत स्वामी का जन्म किस तिथि को हुआ ?

उत्तर :– जेठ वदी-8 ।

प्रश्न 420 :– मुनिसुव्रत स्वामी का वर्ण कौनसा था ?

उत्तर :– श्याम ।

प्रश्न 421 :– मुनिसुव्रतस्वामी का लांछन कौनसा है ?

उत्तर :– कछुआ ।

प्रश्न 422 :– मुनिसुव्रतस्वामी नाम का कारण क्या था ?

उत्तर :– जब प्रभु गर्भ में थे तब माता ने मुनि जैसा त्याग किया था ।

प्रश्न 423 :– मुनिसुव्रतस्वामी का शरीर कितना ऊंचा था ?

उत्तर :– 20 धनुष ।

प्रश्न 424 :– मुनिसुव्रतस्वामी की माता किस गति में गई ?

उत्तर :– चौथे देवलोक ।

प्रश्न 425 :– मुनिसुव्रतस्वामी के पिता किस गति में गए ?

उत्तर :– चौथे देवलोक ।

प्रश्न 426 :– मुनिसुव्रतस्वामी की कुमार अवस्था कितनी थी ?

उत्तर :– 7500 वर्ष ।

प्रश्न 427 :– मुनिसुव्रतस्वामी को कौनसा पद था ?

उत्तर :– तीर्थंकर और राजा ।

प्रश्न 428 :– मुनिसुव्रतस्वामी की राज्य अवस्था कितनी थी ?

उत्तर :– 15 हजार वर्ष ।

प्रश्न 429 :– मुनिसुव्रतस्वामी के पुत्र-पुत्रियों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर :– 19 ।

प्रश्न 430 :– सम्यक्त्व पाने के बाद मुनिसुव्रतस्वामी के कितने भव हुए ?

उत्तर :– 3 ।

प्रश्न 431 :– मुनिसुव्रतस्वामी की दीक्षा तिथि कौनसी थी ?

उत्तर :– फाल्गुण सुदी-12 ।

प्रश्न 432 :– मुनिसुव्रतस्वामी की दीक्षा नगरी कौनसी थी ?

उत्तर :– राजगृही ।

प्रश्न 433 :– मुनिसुव्रतस्वामी की दीक्षा शिबिका का नाम क्या था ?

उत्तर :– अपराजिता ।

प्रश्न 434 :– मुनिसुव्रतस्वामी की दीक्षा कहाँ हुई थी ?

उत्तर :– नीलगृहोद्यान में ।

प्रश्न 435 :– मुनिसुव्रतस्वामी ने कितने व्यक्तियों के साथ दीक्षा ली थी ?

उत्तर :– 1000 ।

प्रश्न 436 :– मुनिसुव्रतस्वामी ने दीक्षा के समय कौनसा तप किया था ?

उत्तर :– छट्ठ ।

प्रश्न 437 :– मुनिसुव्रतस्वामी का पहला पारणा किस नगरी में हुआ ?

उत्तर :– राजगृही ।

प्रश्न 438 :– मुनिसुव्रतस्वामी का पहला पारणा किस द्रव्य से हुआ ?

उत्तर :– क्षीर ।

प्रश्न 439 :– मुनिसुव्रतस्वामी का छद्मस्थ काल कितना था ?

उत्तर :– ग्यारह मास ।

प्रश्न 440 :– मुनिसुव्रतस्वामी को केवलज्ञान किस तिथि को हुआ ?

उत्तर :– फागण वदी 12 ।

प्रश्न 441 :– मुनिसुव्रतस्वामी को केवलज्ञान कौनसे नगर में हुआ ?

उत्तर :– राजगृही ।

प्रश्न 442 :– मुनिसुव्रतस्वामी को केवलज्ञान किस वन में हुआ ?

उत्तर :– राजगृही के उद्यान ।

प्रश्न 443 :– मुनिसुव्रतस्वामी को केवलज्ञान किस वृक्ष के नीचे हुआ ?

उत्तर :– चंपक ।

प्रश्न 444 :– मुनिसुव्रतस्वामी को केवलज्ञान वृक्ष की ऊँचाई कितनी थी ?

उत्तर :– 240 धनुष ।

प्रश्न 445 :– मुनिसुव्रतस्वामी को केवलज्ञान के समय कौनसा तप था ?

उत्तर :– दो उपवास ।

प्रश्न 446 :– मुनिसुव्रतस्वामी के प्रथम गणधर का नाम क्या था ?

उत्तर :– मल्लि ।

प्रश्न 447 :– मुनिसुव्रतस्वामी के गणधरों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर :– 18 ।

प्रश्न 448 :– मुनिसुव्रतस्वामी के प्रमुख भक्त राजा का नाम क्या था ?

उत्तर :– जितशत्रु राजा ।

प्रश्न 449 :– मुनिसुव्रतस्वामी के साधुओं की संख्या कितनी थी ?

उत्तर :– 30,000 साधु ।

प्रश्न 450 :– मुनिसुव्रतस्वामी के साध्वियों की संख्या कितनी थी ?

उत्तर :– 50,000 साध्वी ।

प्रश्न 451 :– मुनिसुव्रतस्वामी के केवलज्ञानी मुनि कितने थे ?

उत्तर :– 1800 ।

प्रश्न 452 :– मुनिसुव्रतस्वामी के श्रावक कितने थे ?

उत्तर :– 1,72,000 श्रावक ।

प्रश्न 453 :– मुनिसुव्रतस्वामी की श्राविकाएं कितनी थी ?

उत्तर :– 3,50,000 श्राविका ।

प्रश्न 454 :– मुनिसुव्रतस्वामी के शासन में कितने महाव्रत थे ?

उत्तर :– 4 महाव्रत ।

प्रश्न 455 :– मुनिसुव्रतस्वामी का दीक्षा काल कितना था ?

उत्तर :– 7500 वर्ष ।

प्रश्न 456 :– मुनिसुव्रतस्वामी का केवलज्ञान काल कितना था ?

उत्तर :– 7499 वर्ष ।

प्रश्न 457 :– मुनिसुव्रतस्वामी का आयुष्य कितना था ?

उत्तर :– 30,000 वर्ष ।

प्रश्न 458 :– मुनिसुव्रतस्वामी का मोक्ष कल्याणक किस तिथि को हुआ ?

उत्तर :– जेठ वदी-9 ।

प्रश्न 459 :– मुनिसुव्रतस्वामी का मोक्ष कल्याणक कहाँ पर हुआ ?

उत्तर :– सम्मेतशिखर ।

प्रश्न 460 :– मुनिसुव्रतस्वामी का मोक्ष कल्याणक आसन कौनसा था ?

उत्तर :– काउसग्ग मुद्रा ।

प्रश्न 461 :– मुनिसुव्रतस्वामी कितने साधुओं के साथ मोक्ष में गये ?

उत्तर :– 1,000 ।

प्रश्न 462 :– मुनिसुव्रतस्वामी के यक्ष का क्या नाम है ?

उत्तर :– वरुण ।

प्रश्न 463 :– मुनिसुव्रतस्वामी की यक्षिणी का क्या नाम है ?

उत्तर :– अच्छुप्ता ।

प्रश्न 464 :– मुनिसुव्रतस्वामी ने एक घोडे को प्रतिबोध करने के लिये कितना विहार किया था ?

उत्तर :– 60 योजन ।

प्रश्न 465 :– मुनिसुव्रतस्वामी ने एक घोडे को प्रतिबोध करने के लिए विहार कब किया था ?

उत्तर :– रात्रि में ।

प्रश्न 466 :– मुनिसुव्रतस्वामी का जन्म रात्रि के किस समय में हुआ ?

उत्तर :– मध्य रात्रि ।

प्रश्न 467 :– मुनिसुव्रतस्वामी की रत्नों की प्रतिमा कहाँ पर है ?

उत्तर :– अष्टापद ।

प्रश्न 468 :– मुनिसुव्रतस्वामी के जन्म के समय अभिषेक के लिये किस समुद्र से जल लाया ?

उत्तर :– क्षीर समुद्र ।

प्रश्न 469 :– मुनिसुव्रतस्वामी का जन्म कौनसे आरे में हुआ ?

उत्तर :– चौथे आरे में ।

प्रश्न 470 :– मुनिसुव्रतस्वामी के जन्म के समय कितनी नरकों में प्रकाश हुआ ?

उत्तर :– 7 नरक में ।

प्रश्न 471 :– मुनिसुव्रतस्वामी ने दीक्षा के पहले कितने समय दान दिया था ?

उत्तर :– 1 वर्ष तक ।

प्रश्न 472 :– मुनिसुव्रतस्वामी एक दिन में कितना दान देते थे ?

उत्तर :– 1 करोड आठ लाख सोना मोहर ।

प्रश्न 473 :– मुनिसुव्रतस्वामी के जन्म के साथ देवताओं ने कितने हजार कलशों से अभिषेक किया ?

उत्तर :– 64 हजार ।

प्रश्न 474 :– मुनिसुव्रतस्वामी को केवलज्ञान होने के बाद कौनसी भाषा में देशना देते थे ?

उत्तर :– प्राकृत / अर्धमागधी ।

प्रश्न 475 :– देवताओं द्वारा बनाए हुए तीन गढ़ किसके होते है ?

उत्तर :– चांदी, सोना और रत्न के ।

प्रश्न 476 :– मुनिसुव्रतस्वामी ने दीक्षा ली तब कितनी मुष्टि लोच किया था ?

उत्तर :– पंच मुष्टि लोच ।

प्रश्न 477 :– सामायिक में गुरुवंदन कर सकते है या नहीं ?

उत्तर :– जिनवाणी श्रवण के लिये करना चाहिये अन्यथा नहीं ।

प्रश्न 478 :– 100 वर्ष प्राचीन जिनालय को क्या कहते है ?

उत्तर :– उसे तीर्थ कहते है आत्मा को भवसागर से तिराने का कार्य करे वह तीर्थ हैं ।

साधु-साध्वी जंगम तीर्थ है तो शाश्वत जिनालय, जिनालय, कल्याणक भूमि आदि स्थावर तीर्थ है ।

जिनालय जीर्ण हो जाय तो अवश्य जीर्णोद्धार कराना चाहिये ।

आजकल लोगों के घर महल जैसे है और भगवान का मंदिर सामान्य होता है ।

पेथडशाह महामंत्री ने सोने के मंदिर बनाने की भावना की थी । हमें भी ऐसी उत्कृष्ट भावना भानी चाहिये ।

शक्ति हो तो परमात्म शासन की ज्योत में घी डालते हुए आत्म बलिदान देना चाहिए । ऐसा नही कर सको तो शान्त रहना चाहिये । परंतु ज्योत में फुंक मारने का कार्य कभी नहीं करना चाहिये ।

प्रश्न 479 :– सबसे ज्यादा व्यक्त और अव्यक्त पीडा कहाँ हैं ?

उत्तर :– सबसे ज्यादा व्यक्त पीडा साँतवी नरक में और सबसे ज्यादा अव्यक्त पीडा निगोद में है । अव्यक्त पीडा में निर्जरा कम है । व्यक्त पीडा में निर्जरा ज्यादा है ।

व्यक्त पीडा वाले जीवों की विराधना में कर्म बंधन ज्यादा है । अव्यक्त पीडा वाले जीवों की विराधना में कर्मबंध भी कम होता है ।

सातवीं नरक का जीव 33 सागरोपम तक मरणांत कष्ट सहन करे तो भी मनुष्य भव की प्राप्ति नहीं हो सकती है ।

प्रश्न 480 :– दीपक या बिजली की ऊजई कब गिनी जाती है ?

उत्तर :– दीपक या इलेक्ट्रिक लाईट का प्रकाश जितने क्षेत्र में फैलता हैं, वह क्षेत्र अग्निकाय मय बन जाता हैं, अत: उन जीवों की रक्षा के लिए कामली का उपयोग किया जाता है ।

दीपक या लाइट का प्रकाश शरीर पर गिरता हैं, तब ऊजई गिनी जाती है । सिर्फ दूर से Light दिखती हो, परंतु उसका प्रकाश शरीर पर नहीं गिरता हो तो ऊजई का दोष नहीं लगता है ।

प्रश्न 481 :– आराधना के काउसग्ग कहां तक करना चाहिए ?

उत्तर :– लोगस्स का काउसग्ग हो तो **``सागरवर गंभीरा''** तक गिनना चाहिए ।

प्रश्न 482 :– चातुर्मास में अन्य क्षेत्र में जाने हेतु मुहपत्ति पडिलेहन कब करना चाहिए ?

उत्तर :– असाढ सुदी एकादशी से चौमासी प्रतिक्रमण के पहले तक करनी चाहिए ।

प्रश्न 483 :– बडी दीक्षा के बाद के सात आयंबिल में बडी दीक्षा के दिन का आयंबिल गिन सकते हैं ?

उत्तर :– हाँ ! गिन सकते है ।

प्रश्न 484 :– सरस्वती देवी कौनसे निकाय की देवी हैं ?

उत्तर :– भगवती सूत्र के अनुसार व्यंतर इन्द्र गीतरति की अग्र महिषी है ।

प्रश्न 485 :– ज्ञान पंचमी की आराधना-तपश्चर्या करनेवाले भादो सुदी-5 के बदले भादो सुदी चौथ को उपवास करे तो चलता है ?

उत्तर :– छट्ठ करने की शक्ति न हो तो पंचमी का उपवास चौथ का कर ले तो भी चलता है ।

प्रश्न 486 :– किस व्रत में अपवाद (छूट) नहीं हैं ?

उत्तर :– चौथे महाव्रत में किसी प्रकार की छूट नहीं है ।

प्रश्न 487 :– पौषध में नहीं रहे श्रावकों को पच्चक्खाण पारने की क्या विधि हैं ?

उत्तर :– दाहिने हाथ की मुट्ठी भूमि पर स्थापित कर तीन नवकार गिनकर पच्चक्खाण पार सकते है ।

प्रश्न 488 :– नवकारसी का पच्चक्खाण कब लेना चाहिए ?

उत्तर :– सूर्योदय के पूर्व नवकारसी का पच्चक्खाण लेना चाहिए। पच्चक्खाण न आता हो तो पच्चक्खाण धारणा चाहिए।

प्रश्न 489 :– किसी ने रात्रि भोजन किया हो तो वह सुबह नवकारसी कर सकता हैं ?

उत्तर :– हाँ ! रात्रि में भोजन करना उचित नहीं हैं, परंतु संयोगवश किया हो तो सुबह नवकारसी आदि पच्चक्खाण कर सकते है।

प्रश्न 490 :– रात्रि में सोते समय किस दिशा में मुंह करना चाहिए ?

उत्तर :– सोते समय मुंह पूर्व दिशा में करे तो विद्या व दक्षिण में करे तो धन का लाभ होता है।

प्रश्न 491 :– एक पूर्व में कितने वर्ष होते है ?

उत्तर :– 70 लाख 56000 करोड वर्ष।

प्रश्न 492 :– अग्नि को सुलगाने व बुझाने में कम दोष किसमें लगता है ?

उत्तर :– आग लगाने में ज्यादा दोष लगता हैं, बुझाने में कम।

प्रश्न 493 :– प्रभु की पूजा अनामिका अंगुली से क्यों ?

उत्तर :– सिद्ध पद को प्राप्त प्रभु अनामी हैं, अत: अनामी पद पाने के लिए अनामिका से पूजा करने की हैं।

प्रश्न 494 :– भूल हो जाने पर क्या करना चाहिए ?

उत्तर :– भूल का स्वीकार करे।

प्रश्न 495 :– पेट का रोगी कौन बनता है ?

उत्तर :– जीभ का रागी।

प्रश्न 496 :– साधना की पहली शर्त क्या है ?

उत्तर :– बाहर से कठोर व भीतर से कोमल बने। अपने प्रति कठोर व दूसरों के प्रति कोमल बने।

प्रश्न 497 :– पानी व जिनवाणी में क्या फर्क है ?

उत्तर :– पानी बाहर की शुद्धि व जिनवाणी भीतर की शुद्धि करता है।

प्रश्न 498 :– क्या बांटना चाहिए ?

उत्तर :– पुण्य से प्राप्त सुख (सुख के साधन) बांटना चाहिए ।

प्रश्न 499 :– खुश रहने का उपाय क्या ?

उत्तर :– अपनी आवश्यकताएं (इच्छाएं) कम करे ।

प्रश्न 500 :– तन-मन की स्वस्थता का राज क्या ?

उत्तर :– तन घुमता रहे तथा मन स्थिर रहे ।

प्रश्न 501 :– सुखी होने का उपाय क्या है ?

उत्तर :– कम खाना, गम खाना, कम सोना और नम जाना ।

प्रश्न 502 :– व्यवहार व निश्चय धर्म न मानने से क्या नुकसान है ?

उत्तर :– व्यवहार धर्म न माने तो तीर्थ का उच्छेद व निश्चय धर्म न माने तो तत्त्व का विच्छेद होता है ।

प्रश्न 503 :– पेथडशाह ने गिरनार तीर्थ के लिए 56 धडी सोने का चढावा बोला था । उसमें धडी का माप क्या हैं ?

उत्तर :– 1 धडी अर्थात् ढाई किलो ।

56 धडी अर्थात् 40 किलो ।

प्रश्न 504 :– श्रावक के मनोरथ कैसे होने चाहिए ?

उत्तर :– ठाणांग सूत्र में श्रावक के तीन मनोरथ बताए है–

(1) मैं परिग्रह का त्याग कब करुंगा ?

(2) मैं संसार का त्याग कर कब दीक्षा लूंगा ?

(3) मैं संलेखना द्वारा मृत्यु को महोत्सव कब बनाऊंगा ?

प्रश्न 505 :– गणधर भगवंतों को पंच परमेष्ठी में से किस पद से नमस्कार करते हैं ?

उत्तर :– मोक्ष में गए गणधरों को सिद्धपद से तथा विद्यमान गणधरों को आचार्य पद से नमस्कार करते हैं ।

प्रश्न 506 :– आयंबिल में होमियोपेथी गोली ले सकते हैं ?

उत्तर :– होमियोपेथी गोलिया मीठी होने से आयंबिल में नहीं ले सकते है ।

प्रश्न 507 :– चालू व्याख्यान में प्रश्न पूछ सकते है ?

उत्तर :– गुरु भगवंत की अनुमति लेकर हाथ जोडकर बहुमानपूर्वक विषय के अनुरुप प्रश्न पूछ सकते है ।

प्रश्न 508 :– आज के दिन सुधारा हुआ (चिरा हुआ) फल दूसरे दिन चलता हैं ?

उत्तर :– नहीं ! छाल व बीज से अलग किया हुआ फल दूसरे दिन नहीं चलता है अर्थात् वह फल अभक्ष्य हो जाता है ।

प्रश्न 509 :– ज्ञान पंचमी की आराधना करनेवाले आराधक को 51 स्वस्तिक बनाते समय, क्या प्रत्येक स्वस्तिक के ऊपर तीन ढेरी व सिद्धशिला बनानी चाहिए ?

उत्तर :– नहीं, सिर्फ मुख्य स्वस्तिक के ऊपर तीन ढेरी व सिद्धशिला बनानी चाहिए ।

प्रश्न 510 :– एक बार अव्यवहार राशि में से बाहर निकली आत्मा पुनः अव्यवहार राशि में जाती हैं ?

उत्तर :– नहीं, अव्यवहार राशि में से एक बार जो आत्मा बाहर निकल गई, वह आत्मा सदाकाल के लिए व्यवहार राशि की ही कहलाती है । भले ही मरकर वह सूक्ष्म या बादर निगोद में चली जाय ।

प्रश्न 511 :– चैत्र मास में अचित्तरज उड्डावणी का कायोत्सर्ग कब करना चाहिए ?

उत्तर :– चैत्र सुदी-11 से तीन दिन तक निरंतर करना चाहिए । पहले दिन भूल गए हो तो दूसरे दिन से निरंतर तीन दिन तक और वह भी भूल जाय तो अंतिम तीन दिन तक निरंतर करना चाहिए ।

ओली के अंतिम पांच दिनों में तीन दिन तक निरंतर करना चाहिए ।

प्रश्न 512 :– सामायिक में गर्म पानी पी सकते हैं ?

उत्तर :– नहीं ।

प्रश्न 513 :– 'भातपानी तो लाभ देजोजी' में भात शब्द का क्या अर्थ है ?

उत्तर :– गुजराती में पकाए हुए चावल को **'भात'** कहते है । वह अर्थ यहां नहीं लेना है । भात अर्थात् भक्त भोजन ।

गुरु भगवंत से भात पानी के द्वारा आहार-पानी तथा उपलक्षण से वस्त्र, पात्र, औषधि आदि की विनती की जाती हैं ।

प्रश्न 514 :– क्या आत्मा के सभी आत्म प्रदेशों पर कर्म लगे होते हैं ?

उत्तर :– आत्मा के आठ रुचक प्रदेशों को छोड सभी आत्म प्रदेशों पर कर्म लगे होते है । सभी संसारी आत्माओं के आठ रुचक प्रदेश सदैव निर्मल रहते है ।

प्रश्न 515 :– सुपार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा पर कितनी फणाएं होती है ?

उत्तर :– सुपार्श्व प्रभु जब माँ के गर्भ में थे तब माता ने एक पांच व नौ फणावाली नाग शय्या के दर्शन किए थे उसके प्रतीक के रुप में सुपार्श्वनाथ की प्रतिमा पर एक, पांच या नौ फणाएँ होती है ।

पार्श्वप्रभु के छद्मस्थ काल में कमठ के उपसर्ग समय धरणेन्द्र ने भक्ति से फणाएं की थी उसके प्रतीक के रुप मे पार्श्वप्रभु की प्रतिमा पर पांच, सात या ग्यारह अथवा सहस्त्रफणाएं भी होती है ।

प्रश्न 516 :– उपदेशमाला के कर्ता धर्मदास गणी चौदह पूर्वी थे ?

उत्तर :– वे अवधिज्ञानी के साथ में चौदह पूर्वधर भी थे !

प्रश्न 517 :– शाम को पौषध लिया हो तो पौषध उच्चरने के बाद पानी पी सकते है ?

उत्तर :– नहीं ।

प्रश्न 518 :– पौषध में रही श्राविकाओं को सज्झाय किस मुद्रा में करनी चाहिए ?

उत्तर :– उन्हें सज्झाय खडे खडे बोलनी चाहिए ।

प्रश्न 519 :– उपधान में बहनों को वाचना खडे खडे लेनी चाहिए ?

उत्तर :– हाँ ! बहनों को खडे खडे और भाइयों को योगमुद्रा में लेनी चाहिए ।

प्रश्न 520 :– श्रावकों को कौन से 'पयन्ना' पढने की छूट है ?

उत्तर :– (1) भक्त परिज्ञा (2) चतु:शरण (3) आउर पच्चक्खाण और (4) संथारा पयन्ना की छूट है ।

प्रश्न 521 :– पौषध में मांडले की दिशा का क्या क्रम है ?

उत्तर :– सर्वप्रथम अपने सामने की दिशा, फिर पीछे की दिशा, उसके बाद अपनी बाई ओर की दिशा और अंत में दाहिने हाथ की दिशा में मांडला करने चाहिए ।

प्रश्न 522 :– दूसरी बार के वांदणा सूत्र में 'आवस्सिआए' पद क्यों नहीं बोलते हैं ?

उत्तर :– दूसरी बार का वांदणा सूत्र गुरु के अवग्रह में रहकर ही बोला जाता हैं, अत: आवस्सिआए बोलने की जरुर नहीं रहती है ।

प्रश्न 523 :– पच्चक्खाण पारते समय मुट्ठी बंद क्यों रखते है ?

उत्तर :– नवकारसी आदि पच्चक्खाण मुट्ठि सहित का लिया है, अत: पारते समय मुट्ठि बंद रखी जाती है ।

प्रश्न 524 :– देवताओं को शारीरिक रोग होता है ?

उत्तर :– देवताओं का शरीर वैक्रिय होता है । उनमें सात धातुएं नहीं होती है । सातावेदनीय का ही उदय होने से उनको शारीरिक रोग नहीं होते है ।

प्रश्न 525 :– एक इन्द्र अपने जीवन में कितने प्रभु का जन्माभिषेक करते है ?

उत्तर :– इन्द्र का आयुष्य असंख्य वर्ष का होता है । वे अपने जीवन में असंख्य तीर्थंकरों का जन्माभिषेक करते है ।

प्रश्न 526 :– देवताओं को कवलाहार होता है ?

उत्तर :– नहीं ! देवताओं तो लोमाहार होता है ।

प्रश्न 527 :– 63 शलाकापुरुष भव्य ही होते हैं या अभव्य भी ?

उत्तर :– 63 शलाकापुरुष भव्य ही होते है और अवश्य सम्यक्त्व पाए हुए होते है ।

प्रश्न 528 :– तीर्थंकर पद के साथ चक्रवर्ती का स्त्रीरत्न भी मरकर नरक में ही जाता हैं ?

उत्तर :– हाँ !

प्रश्न 529 :– देवताओं को अपनी मृत्यु का बोध किससे होता है ?

उत्तर :– गले में पहनी हुई माला मुर्झाने लगती है, कल्पवृक्ष कंपित होते है, वस्त्र मलिन होते है शरीर के अंग कमजोर होते हैं, आलस आता है शरीर कंपता है, इत्यादि लक्षणों से देवताओं को अपनी मृत्यु का बोध होता है।

प्रश्न 530 :– पक्खी, चौमासी प्रतिक्रमण 12 व 20 लोगस्स का कायोत्सर्ग करते है, ऊपर नवकार नहीं गिनते है, जबकि संवत्सरी प्रतिक्रमण में 40 लोगस्स के ऊपर एक नवकार क्यों गिनते है ?

उत्तर :– पक्खी प्रतिक्रमण में 300 व चौमासी प्रतिक्रमण में 500 श्वासोच्छ्वास प्रमाण का कायोत्सर्ग है, जो **'चंदेसु निम्मलयरा'** तक 12-20 लोगस्स गिनने से हो जाता है।

परंतु संवत्सरी को 1008 श्वासोच्छ्वास प्रमाण का कायोत्सर्ग करना है, अत: 40 लोगस्स (चंदेसु निम्मलयरा) में 1000 श्वासोच्छ्वास का ही कायोत्सर्ग होता है, अत: ऊपर 1 नवकार गिनने से 1008 प्रमाण होता है।

प्रश्न 531 :– पांचवे आरे में अवधिज्ञान हो सकता है ?

उत्तर :– अवधिज्ञान का निषेध नहीं है अर्थात् हो सकता है।

प्रश्न 532 :– नारक के जीव आगामी भव के आयुष्य का बंध कब करते है ?

उत्तर :– छ मास का आयुष्य बाकी हो तब आगामी भव के आयुष्य का बंध करते है।

प्रश्न 533 :– किन-किन जीवों के आयुष्य पर उपक्रम नहीं लगता है ?

उत्तर :– असंख्य वर्ष के आयुष्यवाले तिर्यंच तथा मनुष्य, चरम शरीरी, देव, नारक शलाकापुरुष निरुपक्रम आयुष्य वाले होते है।

प्रश्न 534 :– रावण कितने भव बाद मोक्ष में जाएंगे ?

उत्तर :– रावण चौदहवे भव में तीर्थंकर बनकर मोक्ष में जाएगा।

प्रश्न 535 :– दशविध चक्रवाल समाचारी में चक्रवाल का क्या अर्थ हैं ?

उत्तर :– चक्रवाल अर्थात् नित्य कर्म ।

प्रश्न 536 :– जिनकल्प के लिए कितना ज्ञान जरुरी है ?

उत्तर :– कम से कम नौवे पूर्व की तीसरी वस्तु का ज्ञान तथा अधिकतम कुछ न्युन दश पूर्व ।

प्रश्न 537 :– 10 पूर्वधर जिनकल्प का स्वीकार क्यों नहीं करते है ?

उत्तर :– 10 पूर्वधर को वचनसिद्धि प्राप्त होती है । उनकी देशना निष्फल नहीं जाती है । जिसके प्रभाव से वे अनेक को धर्मबोध देकर जिनशासन की प्रभावना सकते है ।

प्रश्न 538 :– पाप की प्रवृत्ति समान होने पर भी मिथ्यादृष्टि को अधिक पापबंध और सम्यग्दृष्टि को अल्प पापबंध क्यों होता हैं ?

उत्तर :– इसका जवाब वंदित्तुसूत्र की गाथा में दिया है ।

सम्मद्दिट्ठी जीवों, जइ वि हु पावं समायरे किंचि ।
अप्पोसि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ।।36।।

सम्यग्दृष्टि को पुण्य-पाप का सत्यबोध होने से, जिनेश्वर भगवंत के वचनों पर पूर्ण श्रद्धा होने से, पाप प्रवृत्ति में क्रूर परिणाम नहीं होते है ।

जबकि मिथ्यादृष्टि आत्मा को पाप में हेय बुद्धि नहीं होती है, इस कारण उसके परिणाम भी अति कठोर क्रूर होते हैं, अतः वह पाप का तीव्र बंध करता है ।

प्रश्न 539 :– श्रावक अपने घर में आगम शास्त्र रख सकता है ?

उत्तर :– श्रावक के घर में गृह मंदिर की भांति रत्नत्रयी का भी मंदिर होता है ।

वहां ज्ञान-दर्शन व चारित्र की सामग्री होती है । श्रावक को आगम पढने का अधिकार नहीं है, परंतु आगमों का आदर बहुमान करने का, उसकी देखभाल करने का तथा श्रवण करने का तो अधिकार है ही ।

प्रश्न 540 :– क्या संयम में सुख है ?

उत्तर :– संसार में जो भी सुख हैं, वह पर-पीडा रुप है। दूसरे जीवों को पीडा पहुँचाए बिना संसार के सुख का अनुभव नहीं कर सकते है।

स्वादिष्ट भोजन में मजा आती हैं, परंतु उस भोजन को बनाने में कितनी विराधना होती हैं ?

छह काय के जीवों की विराधना के बिना भोजन तैयार नहीं होता है।

हिंसा से बने हुए भोजन की प्रशंसा करने से हिंसा की ही अनुमोदना होती है।

पाप की अनुमोदना, यह भावी दु:ख को ही आमंत्रण है।

अब्रह्म सेवन-मैथुन सेवन में भी असंख्य जीवों की विराधना है।

संयम में जो सुख हैं, वह परपीडा के परिहार रुप है संयम जीवन में किसी भी जीव को डायरेक्ट हिंसा नहीं हैं, अत: संयम में जो सुख हैं, उसकी तुलना संसार के भौतिक सुखों से नहीं कर सकते हैं।

प्रश्न 541 :– पुण्य के उदय से जो सुख मिला हैं, उसे छोड देने में कौनसी बुद्धिमत्ता है ?

उत्तर :– संसार का भौतिक सुख भी पुण्य के उदय बिना प्राप्त नहीं होता है, परंतु उस सुख को भोगने की इच्छा करना और उस सुख को भोगना पाप बंध का ही कारण है।

प्राय: करके सुख भोगते समय मन में राग भाव पैदा हुए बिना नहीं रहता है–यह रागभाव ही सबसे बडा पाप है।

प्रश्न 542 :– विषयों के भोग में सुख नहीं हैं ?

उत्तर :– विषयों के भोग में सुख की कल्पना करना, मुर्खता ही है।

सच्चा सुख तो वह हैं, जिसमें तृप्ति का अनुभव होता है विषयों का भोग तो ऐसा हैं कि ज्यों-ज्यों भोग करते है त्यों-त्यों उसकी भूख बढती जाती है।

आग में घी डालने से आग शांत नहीं होती हैं, बल्कि आग

बढती ही है, उसी प्रकार विषयों का ज्यों-ज्यों भोग किया जाय त्यों-त्यों तृप्ति नही होती है, बल्कि उसकी भूख बढती ही जाती है ।

आग को शांत करना है तो पानी ही डालना पडता है अथवा ईंधन को दूर करना पडता है ।

सच्चा सुख पाना है तो विषयों का भोग नहीं, बल्कि विषयों का त्याग ही करना पडता है ।

प्रश्न 543 :– तीर्थंकर परमात्मा की छाती में श्रीवत्स क्या होता है ?

उत्तर :– दक्षिणावर्त रोम से बना हुआ अत्यंत ही मनोहर होता है ।

प्रश्न 544 :– आयंबिल में सुपारी खा सकते है ?

उत्तर :– नहीं !

प्रश्न 545 :– आयंबिल में काली मिर्च एवं सूंठ वापर सकते है ?

उत्तर :– हाँ !

प्रश्न 546 :– कोई भी साधु उपधान की क्रिया करा सकते है ?

उत्तर :– महानिशीथ सूत्र के योगोद्वहन किए हुए साधु भगवंत ही उपधान की क्रिया करा सकते है !

प्रश्न 547 :– संघ के जिनालय में भगवान किसके नाम से देखने चाहिए ?

उत्तर :– गांव की राशि के नाम से देखने चाहिये ।

प्रश्न 548 :– सुपात्रदान में जघन्य, मध्यम और उत्तम कौन है ?

उत्तर :– सुपात्रदान में सम्यग्दृष्टि जघन्य, श्रावक मध्यम और साधु भगवंत उत्तम पात्र है ।

प्रश्न 549 :– देवलोक में विकलेन्द्रिय जीव होते है ?

उत्तर :– पंचेन्द्रिय एकेन्द्रिय जीव तीनों लोक में होते है । विकलेन्द्रिय तिर्च्छालोक में ही होते है । बादर अग्नि मनुष्यलोक में ही होती है ।

प्रश्न 550 :— नरक के जीव सम्यक्त्व प्राप्त कर सकते है ?

उत्तर :— सभी नरकों के जीव सम्यक्त्व प्राप्त कर सकते है ।

प्रश्न 551 :— चिता और चिंता में क्या फर्क है ?

उत्तर :— चिता शरीर को एक बार जलाती है, जबकि चिंता मनुष्य को रोज जलाती है ।

प्रश्न 552 :— चौदह पूर्वी कितने भवों को जान सकते है ?

उत्तर :— असंख्य भवों को जान सकते है ।

प्रश्न 553 :— निर्जरा और मोक्ष में क्या फर्क हैं ?

उत्तर :— आंशिक कर्मक्षय को निर्जरा कहते है और संपूर्ण कर्मक्षय को मोक्ष कहते है ।

प्रश्न 554 :— वर्तमान में आत्मा की ऊर्ध्वगति कौन से देवलोक तक है ?

उत्तर :— चौथे वैमानिक देवलोक तक है ।

प्रश्न 555 :— माणिभद्र देव सम्यग्दृष्टि है ?

उत्तर :— हाँ !

प्रश्न 556 :— माणिभद्र देव कौनसे देवलोक में है ?

उत्तर :— माणिभद्र देव व्यंतर निकाय में यक्ष जाति के देवों के इन्द्र है और तपागच्छ के अधिष्ठायक है ।

प्रश्न 557 :— कल्याण मित्र किसे कहते हैं ?

उत्तर :— थाणा जिले में आए कल्याण में रहनेवाले **'कल्याण मित्र'** यह अर्थ नहीं है ।

—आपत्ति में सहायता करे, उसे मित्र कहते है और जो आत्महित में सहाय करे, उसे कल्याण मित्र कहते है । कल्याण मित्र कोई भी बन सकता है ।

—पति को सन्मार्ग में जोडनेवाली पत्नी भी कल्याण मित्र हो सकती है ।

—कल्याण मित्रता में 'आत्महित' का विचार है ।

–मृत्यु की अंतिम क्षणों में आर्त्तध्यान में डूबे अपने पति **'युगबाहु'** को प्रेरणा देकर समाधिभाव में स्थिर करनेवाली मदनरेखा-महासती भी अपने पति के लिए कल्याण मित्र ही थी ।

–मित्र इस भव में उपकारी होता है, जबकि कल्याण मित्र परलोक को सुधारने की प्रेरणा देने से महाउपकारी होता है ।

प्रश्न 558 :– उपधान की नीवी में कच्ची विगई का त्याग क्यों होता हैं ?

उत्तर :– उपधान की आराधना प्रभु व प्रभुशासन के साथ संबंध जोडने के लिए है ।

–प्रभु व प्रभु के शासन से संबंध जोडने में विकार-वासना बाधित है ।

–विकार-वासना आत्मिक संबंधों में विकृति लाती है ।

–दूध, दही, घी मिष्टान्न आदि शरीर के लिए पुष्टिकारक हैं, परंतु अधिक प्रमाण में उनके सेवन से मन में कामवासना व विकार पैदा होते है, अत: उपधान जैसी पवित्र साधना में मन विकार ग्रस्त न बने, इसलिए मूल विधि में तो उपवास व आयंबिल का ही तप है, जो मन को निर्मल बनाते है ।

परंतु निरंतर उपवास और आयंबिल करने की जिनमें शक्ति नहीं है, वे भी इस आराधना में जुड सके, इसके लिए ज्ञानियों ने उपधान में आयंबिल व उपवास के साथ नीवी अर्थात् निर्विगइ तप भी जोडा है ।

–उपवास द्वारा शरीर में आई अशक्ति को दूर करने के लिए विगई में रही वैकारिक शक्ति को दूरकर उन विगइ के पदार्थों में से निवीयाता बनाया जाता है ।

उदा.– शुद्ध घी में विकार पैदा करने की शक्ति है ।

घी की कढाई में तीन बार पूरी आदि को तलने के बाद जो घी होता है, उसका निवीयाता के रुप में उपयोग कर सकते है ।

उसी प्रकार दूध-दही आदि का भी विधि पूर्वक रुपांतर होने के बाद उसमें से वैकारिक शक्ति नष्ट हो जाती है ।

निवीयाता दूध-दही-घी आदि में भी शरीर के पुष्टिकारक अंश तो होते ही है, परंतु उनमें विकार पैदा करने की शक्ति दूर हो जाती हैं, अतः उपधान की नीवी में निवीयाता की छूट होती है ।

प्रश्न 559 :– व्याख्यान में गुरु के पीछे चंदरवे में प्रभु के या नवपद आदि के चित्र चल सकते हैं ?

उत्तर :– वे चित्र पीठ के ऊपर हो तो बाध नहीं है । पीठ आती हो तो उचित नहीं है ।

प्रश्न 560 :– गुरु वंदन में अब्भुट्ठिओं के बाद पुनः खमासमणा देना चाहिए ?

उत्तर :– हाँ ! अवश्य देना चाहिए ।

प्रश्न 561 :– चालू ट्रेन में एकासना–बियासना कर सकते हैं ?

उत्तर :– चालू ट्रेन में एकासना-बियासना नहीं कर सकते हैं पहले से ही यात्रा इस ढंग से Set करे कि चालू ट्रेन में करना न पडे । अनिवार्य संयोग में करना पडे तो उसकी अवश्य आलोचना लेनी चाहिए ।

प्रश्न 562 :– श्मशान में शांति आदि बोल सकते हैं ?

उत्तर :– नहीं ।

प्रश्न 563 :– दीक्षा बाद पुद्गल वोसिराने की क्रिया करनी पडती है ?

उत्तर :– दीक्षा विधि में यह विधि आ जाती है ।

प्रश्न 564 :– मंदिर से प्रभु की दृष्टि बाहर जानी चाहिए ?

उत्तर :– हाँ ! बीच में पाटिया लगाने की जरुरत नहीं है।

प्रश्न 565 :– दूध के प्रक्षाल बाद पानी का प्रक्षाल जरुरी है ?

उत्तर :– अष्ट प्रकारी पूजा में पहली जल पूजा हैं, उसी में दूध से प्रक्षाल का समावेश हो जाता हैं, क्योंकि अभिषेक के जल में दूध का मिश्रण होता ही है ।

हाँ ! दूध के प्रक्षाल बाद जल से शुद्धि के लिए जल से प्रक्षालन जरुरी है ।

प्रश्न 566 :– कायोत्सर्ग पारते समय 'नमो अरिहंताणं' कब बोलना चाहिए ?

उत्तर :– कायोत्सर्ग मुद्रा में ही **'नमो अरिहंताणं'** बोलकर फिर हाथ ऊंचे करना चाहिए ।

प्रश्न 567 :– सामायिक पारते समय 'सामाइयवय जुत्तो' बोलते समय मुट्ठी बंद रखनी चाहिए ?

उत्तर :– नहीं ! हाथ खुला रखना चाहिए ।

प्रश्न 568 :– रथयात्रा में गुरु के आगे गहुंली कर सकते हैं ?

उत्तर :– प्रभुजी व गुरु दोनों की अलग-अलग दो गहुंली करे तो कर सकते है–सिर्फ एक ही गहुंली हो तो प्रभु के आगे करनी चाहिए ।

प्रश्न 569 :– सुखे खजूर में बीज निकालने के बाद तुरंत अचित्त हो जाते हैं ?

उत्तर :– हाँ ! उसमें 48 मिनिट का व्यवहार नहीं है ।

प्रश्न 570 :– आर्द्रा नक्षत्र बाद आम बंद होते हैं तो वापस कब चालू होते हैं ?

उत्तर :– कार्तिक पूर्णिमा के बाद ।

प्रश्न 571 :– नारियल का पानी वनस्पतिकाय में गिना जाता है ?

उत्तर :– हाँ ।

प्रश्न 572 :– नारियल का पानी कब वापर सकते हैं ?

उत्तर :– 48 मिनिट बाद ।

प्रश्न 573 :– नारियल का सुखा गोला चातुर्मास में चलता हैं ?

उत्तर :– जिस दिन फोडे, उसी दिन चलता हैं ।

प्रश्न 574 :– अंजीर किसमें आता है ?

उत्तर :– अंजीर अनंतकाय नहीं हैं, उसकी गणना बहुबीज में आती है ।

प्रश्न 575 :– सिंगदाने सचित्त या अचित्त ?

उत्तर :– छिलके निकालने के बाद सेके जाय तो अचित्त हो जाते है ।

छिलके सहित तवे पर सेकने में मिश्र की संभावना रहती है ।

प्रश्न 576 :– महावीर प्रभु के अभिग्रह का पारणा कब और कहाँ हुआ था ?

उत्तर :– प्रभु का पारणा कोशांबी नगरी में जेठ सुदी-10 के दिन चंदनबाला के हाथों से हुआ था ।

प्रभु ने यह तप पोष वदी-1 को प्रारम्भ किया था ।

प्रश्न 577 :– 9 ग्रैवेयक और 5 अनुत्तर के देवता कल्पातीत कहलाते हैं तो क्या वे शाश्वत जिनमंदिरों की पूजा आदि करते हैं ?

उत्तर :– ग्रैवेयक और अनुत्तर में जल और वनस्पति भी नहीं हैं ।

वे देवता प्रभु के कल्याणक प्रसंगों में भी नहीं आते हैं, अतः उनका कल्प नहीं होने से वे शाश्वत मंदिरों में भी पूजा नहीं करते हैं ।

प्रश्न 578 :– पूजा के वस्त्रों का सामायिक में उपयोग कर सकते हैं ?

उत्तर :– पूजा भक्ति प्रधान हैं, उसमें देवताओं का अनुसरण किया जाता है, अतः उसमें मूल्यवान और रंगीन वस्त्रों का प्रयोग हो सकता है जब कि सामायिक त्याग की प्रधानता है, अतः उसमें सफेद व सूती वस्त्रों का ही प्रयोग हो सकता है ।

पूजा के वस्त्र रंगीन व मूल्यवान होने से सामायिक में उपयोग में नहीं ले सकते है पूजा के वस्त्र सूती और सफेद हो और निकालने हो तो उनका सामायिक में उपयोग कर सकते हैं, परंतु फिर पूजा में उपयोग नहीं कर सकते है ।

प्रश्न 579 :– अंतराय M.C. वाली बहने कितने दिन बाद प्रभु दर्शन व पूजा कर सकती हैं ?

उत्तर :– अंतराय का ख्याल आने के 72 घंटे बाद स्नान-शुद्धि करके प्रभु दर्शन कर सकती है और छह दिन बाद अर्थात् 144 घंटों बाद प्रभु-पूजा कर सकती है ।

प्रश्न 580 :– कितना ज्ञान हो तो समकित अवश्य होता हैं ?

उत्तर :– 10 पूर्व और उससे अधिक ज्ञानी नियमा सम्यग्दृष्टि होते है ।

प्रश्न 581 :– देशना पूर्णकर प्रभु कहां आराम करते हैं ?

उत्तर :– दूसरे गढ में देवच्छंदा में आराम करते हैं ।

प्रश्न 582 :– जैन दीक्षा को 'भागवती दीक्षा' क्यों कहते है ?

उत्तर :– भगवान द्वारा आचरित व उपदिष्ट होने से **'भागवती दीक्षा'** कहते है ।

भगवान शब्द का स्त्रीलिंग **'भागवती'** होता है ।

प्रश्न 583 :– आचार्य पदवी कब ली जाती है ?

उत्तर :– आचार्य पदवी लेने या मांगने की वस्तु नहीं है गीतार्थ गुरु शिष्य में योग्यता देखकर स्वयं यह पद प्रदान करते है ।

–जो साधु संयमी हो, भवभीरु हो, गीतार्थ हो तथा निःस्पृही हो ऐसी योग्यतावाले को गुरु स्वयं आचार्य पद प्रदान करते है ।

प्रश्न 584 :– दीक्षा के बाद नाम बदलने का क्या प्रयोजन है ?

उत्तर :– पूर्व के संसार की स्मृति को भूलाने के लिए ही नाम बदला जाता है ।

पूर्वकाल में भी नाम बदला जाता था ।

1) मदनरेखा महासती का नाम दीक्षा के बाद **'सुव्रता साध्वी'** रखा गया ।

2) चांगदेव का नाम दीक्षा के बाद **'सोमचंद्र'** व आचार्य पद के बाद **'हेमचन्द्रसूरि'** रखा गया ।

प्रश्न 585 :– क्या धर्म में पुरुष की प्रधानता हैं ?

उत्तर :– हाँ ! धर्म पुरुष प्रधान है उसके निम्न प्रमाण भी है–

1) सुधर्मास्वामी आदि गुरुओं की ही पाटपरंपरा मिलती है साध्वीजी की नहीं ।

2) गृहस्थों में भी पुरुषों की ही वंशपरंपरा मानी जाती है, स्त्रियों की नहीं ।

3) तीर्थंकर पद पुरुष को ही प्राप्त होता हैं, स्त्रियों को नहीं । मल्लिनाथ तीर्थंकर बने है, वह आश्चर्य रुप है ।

4) चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव तथा प्रतिवासुदेव का पद भी पुरुषों को ही प्राप्त होता है ।

5) गणधर पद भी पुरुषों को ही प्राप्त होता है । मल्लिनाथ के भी गणधर, पुरुष ही थे ।

6) स्त्री को आचार्य, उपाध्याय, पंन्यास व गणि पद प्रदान नहीं किया जाता है ।

7) नवकार मंत्र में भी **'नमोलोए साहूणं'** ही है, **'साहूणीणं'** पद नहीं है ।

8) 14 पूर्व पढने का अधिकार भी पुरुषों को ही है ।

9) पुलाक आदि लब्धियाँ पुरुषों को ही प्राप्त होती है ।

10) जंघा चारण व विद्याचारण मुनि भी पुरुष ही होते है ।

11) साध्वियों को आचार्य की आज्ञा के अधीन ही रहने का होता है, स्वतंत्र नहीं ।

12) सभी आगमों के योगोद्वहन का अधिकार साधु को ही है, साध्वी को नहीं ।

वर्तमान में साध्वीजी को आचारांग तक के ही योगोद्वहन कराए जाते है ।

13) श्रावक-श्राविकाओं को उपधान में क्रियाओं के आदेश महानिशीथ योगोद्वहन किए मुनि भगवंत ही देते है, साध्वीजी नहीं ।

14) योगोद्वहन कालग्रहण लेने व काल पवेयणा का अधिकार मुनि भगवंतों को ही है ।

15) लोक व्यवहार में भी पुरुष की ही प्रधानता है—अमेरिका देश में आज तक सभी राष्ट्रपति पुरुष ही हुए है ।

16) लग्न के बाद स्त्री ही अपना घर छोडकर ससुराल जाती है ।

17) लग्न के बाद स्त्री का ही गोत्र बदलता है पुरुष का नहीं ।

18) शादी के बाद स्त्री का परिचय पति के नाम से ही होता है ।

19) युद्ध भूमि में पुरुष ही जाते हैं, कभी जाना पडे तो स्त्री भी पुरुष का ही वेश पहनती है ।

20) बडी संख्या में लोगों की रसोई बनानी हो तो पुरुष ही बनाते है ।

प्रश्न 586 :– साधु-साध्वी को सोने या बैठते समय रजोहरण किस ओर रखना चाहिये ?

उत्तर :– अपने दाहिने हाथ की ओर रखना चाहिये ।

प्रश्न 587 :– साधु-साध्वी मस्तक पर चंदन का तिलक क्यों नहीं करते है ?

उत्तर :– तिलक भी शोभा रुप हैं, अत: साधु-साध्वी को उसका निषेध है ।

प्रश्न 588 :– साधु-साध्वी द्रव्य-पूजा क्यों नहीं करते है ?

उत्तर :– 1) साधु-साध्वी ने द्रव्य का त्याग किया है । वे धन आदि द्रव्य के त्यागी है ।

2) द्रव्य पूजा का फल संयम की प्राप्ति है, वह फल उन्होंने प्राप्त कर लिया है ।

3) द्रव्य पूजा पुण्यबंध का कारण है, पुण्यबंध भी सोने की बेडी रुप है । साधु-साध्वी को पुण्य का भी त्याग करना है ।

4) साधु जीवन में निर्जरा-प्रधान है । अत: पुण्यबंध की क्रिया का निषेध है ।

प्रश्न 589 :– कितने साधु भगवंतों के समूह को गच्छ कहते हैं ?

उत्तर :– एक गच्छ में जघन्य से तीन साधु और उत्कृष्ट से 32000 साधु होते है ।

प्रश्न 590 :– जिस वस्तु का 'धर्मलाभ' दिया हो, वह वस्तु गृहस्थ को वापस दे सकते हैं ?

उत्तर :– नहीं, परंतु अकल्प्य वस्तु गोचरी में आ गई हो तो वह वापस कर सकते है ।

प्रश्न 591 :– साधु के अतिचार कितने हैं ?

उत्तर :– साधु के चरण सित्तरी व करण सित्तरी के 70 +70=140 आचार है, उनमें जो दोष लगा हैं, वे अतिचार भी 140 है ।

प्रश्न 592 :– साधु-साध्वी के कालधर्म के बाद अग्नि संस्कार का रिवाज कब से चालु हुआ ?

उत्तर :– आचार्य आर्यदिन्नसूरिजी से अग्नि संस्कार की प्रथा चालू हुई है ।

प्रश्न 593 :– दूसरी पोरिसी का पानी कब वहोरना चाहिये ?

उत्तर :– पोरिसी पच्चक्खाण आने के बाद वहोरना चाहिए।

प्रश्न 594 :– गर्भवती स्त्री को दीक्षा दे सकते है ?

उत्तर :– नहीं !

प्रश्न 595 :– जमालि के कितने भव होंगें ?

उत्तर :– 15 भव होंगें।

प्रश्न 596 :– निद्रा व प्रमाद में क्या भेद है ?

उत्तर :– निद्रा का उदय दर्शनावरणीय कर्म के उदय से तथा प्रमाद का उदय मोहनीय कर्म के उदय से होता है।

प्रश्न 597 :– गौतम स्वामी ने 1500 नूतन दीक्षित मुनियों को खीर से पारणा कराया तो वह खीर वैक्रिय थी ?

उत्तर :– नहीं, उन्होंने अक्षीण महानसी लब्धि के बल से सब को खीर से पारणा कराया था।

प्रश्न 598 :– शिष्य चारित्र का बराबर पालन न करे तो उसका दोष गुरु को लगता हैं ?

उत्तर :– गुरु यदि मोह के कारण, भूल करनेवाले शिष्य को रोकता या टोकता नहीं है तो शिष्य की भूल का पाप गुरु को भी लगता है।

परंतु बार-बार प्रेरणा करने पर भी शिष्य भूल न सुधारे तो उसका दोष गुरु को नहीं लगता है।

प्रश्न 599 :– साधु को दिन में सोने की छूट हैं ?

उत्तर :– उत्सर्ग मार्ग से नहीं हैं, परंतु विहार आदि से थके हो या ग्लान, वृद्ध आदि हो तो छूट।

प्रश्न 600 :– पहले प्रहर में लाई गई भिक्षा (आहार-पानी) कब तक चलती है ?

उत्तर :– तीसरे प्रहर की समाप्ति तक चलती है।

प्रश्न 601 :— 'वर्तमान जोग' का क्या अर्थ है ?

उत्तर :— आयुष्य का भरोसा नहीं है और परिस्थिति कभी भी बदल सकती है, अत: आहार आदि की विनती करने पर **'हाँ'** या **'ना'** न कहकर **'वर्तमान जोग'** कहते है ।

प्रश्न 602 :— साधु-साध्वी हल्के या निंद्य कुल या मांसाहारी घरों में गोचरी हेतु जा सकते हैं ?

उत्तर :— नहीं ।

प्रश्न 603 :— उपयोग में लेनेवाले वस्त्र काप निकालने के बाद धूप में सूखा सकते है ?

उत्तर :— नहीं ।

प्रश्न 604 :— साधु-साध्वीजी को धर्मानुष्ठान किस दिशा में करना चाहिये ?

उत्तर :— पूर्व अथवा उत्तर दिशा सन्मुख करना चाहिये ।

प्रश्न 605 :— प्रतिक्रमण में पुरुषों को कब-कब उत्तरासन रखना जरुरी हैं ?

उत्तर :— प्रतिक्रमण के प्रारंभ में चार थोय का चैत्यवंदन करते समय तथा नमोऽस्तु वर्धमानाय बोलते समय व बोलने के बाद नमुत्थुणं स्तवन व वरकनक में उत्तरासन जरुरी है ।

प्रतिक्रमण में प्रभु की भक्तिरुप क्रिया करते समय उत्तरासन धारण करना, यह प्रभु का विनय कहलाता है ।

प्रश्न 606 :— आदिनाथ प्रभु के सामने अन्य भगवान का चैत्यवंदन-स्तवन आदि बोल सकते हैं ?

उत्तर :— यदि चैत्यवंदन स्तवन आदि आता हो तो उन्हीं भगवान का बोलना चाहिये, नहीं आता हो तो अन्य प्रभु का आरोपकर स्तवन आदि बोल सकते है । सभी परमात्मा सर्वगुण संपन्न हैं, अत: एक दूसरे के नाम से भी बोल दिया हो तो भी कोई दोष रुप नहीं है ।

परिशिष्ट-1

(प्रवचन-सारोद्धार : हिन्दी अनुवाद से साभार ।)

प्रश्न 607 :– आहार के तीन प्रकार कौनसे हैं ?

उत्तर :– (1) ओजाहार : जीव पूर्व शरीर का त्याग कर जब उत्पत्ति स्थान में आता है । तो वहाँ तैजस् और कार्मण शरीर के द्वारा सर्वप्रथम औदारिकादि शरीर के निर्माण योग्य पुद्गलों को ग्रहण करता है । यह ओज आहार है तथा जब तक शरीर पूरा नहीं बन जाता, तब तक औदारिकमिश्र शरीर के द्वारा शरीर-निर्माण योग्य पुद्गल जीव ग्रहण करता रहता है, यह भी **'ओज आहार'** कहलाता है ।

ओजाहार–तैजस् शरीर द्वारा गृहीत आहार अथवा अपने उत्पत्ति योग्य **'शुक्र मिश्रित शोणित'** के पुद्गलों का ग्रहण करना ओजाहार है । **'ओजस्'** शब्द में **'स्'** का लोप हो जाने के कारण **'ओजाहार'** शब्द बनता है ।

(2) लोम आहार : स्पर्शेन्द्रिय के द्वारा शरीर के उपष्टंभक पुद्गलों का ग्रहण करना । जैसे, सर्दी और वर्षा के समय शीत जलादि के पुद्गलों को रोम-छिद्रों द्वारा ग्रहण करना लोम आहार है ।

शिशिर और वर्षा ऋतु में शीत और जलादि के पुद्गल रोम-छिद्रों के द्वारा प्रवेश करते रहते हैं । यही कारण है कि उस काल में मूत्र अधिक आता है ।

(3) कवलाहार : जो मुँह में ग्रास के रूप में डाला जाता है, इसे प्रक्षेपाहार भी कहते हैं ।

किस अवस्था में कैसा आहार ?

1. ओज आहार – एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय पर्यन्त सभी अपर्याप्त जीवों में ।

2. लोम-आहार – सभी पर्याप्ता जीवों में ।

3. कवलाहार – देवता, नारकी और एकेन्द्रिय के सिवाय सभी जीवों में ।

कवलाहार जीवों के सदा नहीं होता । जब मुँह में कवल डालते

हैं, तभी कवलाहार होता है। जबकि **'लोमाहार'** सदा होता है, कारण रोम-छिद्रों के द्वारा वायु के पुद्गल सदा भीतर प्रवेश पाते रहते हैं। गर्मी से सन्तप्त व्यक्ति को, शीतल वायु से या पानी छाँटने से जो तृप्ति होती है, यह लोम-आहार का सूचक है।

एकेन्द्रिय को कवलाहार मुँह का अभाव होने से नहीं होता।

देवता और नारकी वैक्रिय-शरीरी होने से स्वभावत: ही कवलाहारी नहीं होते।

देवता अपर्याप्ता अवस्था में ओज-आहारी और पर्याप्त अवस्था में मनोभक्षी होते है। मनोभक्षी=विचारमात्र से संप्राप्त तथा सभी इन्द्रियों को आह्लादजनक मनोज्ञ-पुद्गलों को आत्मसात् करते हैं।

नारकी अपर्याप्ता अवस्था में ओज-आहारी और पर्याप्तवास्था में लोमाहारी होते हैं, किन्तु, देवों की तरह मनोभक्षी नहीं होते।

प्रश्न 608 :– देवताओं में आहार व श्वास का क्या कालमान है ?

उत्तर :– जिस देव की आयु जितने सागरोपम की होती है, वह उतने पक्ष के बाद श्वासोच्छ्वास लेता है, तथा उतने हजार वर्षों के बाद उसे आहार की अभिलाषा होती है। उदाहरण के तौर पर एक सागर की आयुष्य वाला देव एक पक्ष के बाद श्वासोच्छ्वास लेता है और एक हजार वर्ष के बाद आहार ग्रहण करता है।

जैसे-जैसे आयुष्य बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे आहार और श्वासोच्छ्वास का अन्तर बढ़ता जाता है। देव जितनी अधिक आयु वाले होते हैं, वे उतने अधिक सुखी होते हैं। जबकि उच्छ्वास और आहार क्रिया क्रमश: दु:ख, अतिदु:ख रुप है। अत: अधिक आयु वाले देवों के उच्छ्वास और आहार का विरह काल अधिक, अधिकतर होता है। आहार और उच्छ्वास सिवाय के समय में देवता बाधा रहित और स्मितवदन रहते हैं।

प्रश्न 609 :– 28 लब्धियाँ कौनसी है ?

उत्तर :– (1) आमर्षौषधि लब्धि – आमर्ष अर्थात् स्पर्श। जिस लब्धि के प्रभाव से लब्धि-विशिष्ट आत्मा के कर आदि का स्पर्श होने पर स्व और पर के रोग शान्त हो जाते है वह आमर्षौषधि लब्धि कहलाती है।

(2) विप्रुडौषधि लब्धि – 'विप्रुड्' का अर्थ है अवयव अर्थात् मूत्र व पुरीष (विष्ठा) के अवयव विप्रुड् कहलाते हैं । जिस लब्धि के प्रभाव से मूत्र-पुरीष के अवयव सुगन्धित तथा स्व-पर का रोग शमन करने में समर्थ होते हैं वह विप्रुडौषधि लब्धि है । सूत्र सूचक होने से यहां खेल, जल्ल, केश, नखादि के अवयवों का भी ग्रहण होता है ।

(3) खेलौषधि लब्धि – जिस लब्धि के प्रभाव से व्यक्ति का श्लेष्म सुगंधित एवं रोगनाशक होता है ।

(4) जल्लौषधि लब्धि – जिस लब्धि के प्रभाव से व्यक्ति के कान, नाक, आँख, जीभ एवं शरीर का मैल सुगंधित एवं रोगनाशक होता है ।

(5) सर्वौषधि लब्धि – जिस लब्धि के प्रभाव से व्यक्ति के मल-मूत्र, श्लेष्म, नाक, कान आदि का मैल, केश और नख सभी सुगन्धित एवं रोगापहारी होते हैं ।

(6) संभिन्नश्रोतो लब्धि – जिस लब्धि के प्रभाव से शरीर के सभी प्रदेशों में श्रवण-शक्ति उत्पन्न हो जाती है अथवा जिस लब्धि के प्रभाव से पाँच-इन्द्रियों से ग्राह्य-विषय को एक ही इन्द्रिय से ग्रहण करने की शक्ति पैदा हो जाती है, अथवा जिस लब्धि से बारह योजन तक विस्तृत चक्रवर्ती के सैन्य में बजने वाले विविध वाद्यों विविध स्वरों को व्यक्ति एक ही साथ अलग-अलग करके सुन सकता है ।

(7) अवधि लब्धि – जिस लब्धि से इन्द्रियों की सहायता के बिना मात्र आत्मशक्ति से मर्यादा में रहे हुए रूपी द्रव्यों का ज्ञान होता है ।

(8) ऋजुमति लब्धि – यह मनः पर्यवज्ञान का भेद है । मनोगत भाव को सामान्य रूप से ग्रहण करने वाली बुद्धि ऋजुमति है । उदाहरणार्थ–कोई व्यक्ति घड़े के बारे में सोच रहा है, तो ऋजुमति अपने ज्ञान से इतना जान सकता है कि उस व्यक्ति ने घड़े का चिन्तन किया है, किन्तु वह यह नहीं जान सकता कि वह घड़ा कहाँ का है ? किस द्रव्य का है ? किस रंग का है ? इस ज्ञान की विषय सीमा ढाई अंगुल न्यून ढाई द्वीप में रहे हुए संज्ञी पंचेन्द्रिय के मनोगत भाव हैं ।

(9) विपुलमति लब्धि – यह भी मनः पर्यवज्ञान को भेद है । यह मनोगत भावों का ग्रहण करता है, किन्तु चिन्तनीय वस्तु को अपनी सभी पर्यायों (विशेषताओं) के साथ ग्रहण करता है, जैसे किसी व्यक्ति ने घड़े का चिंतन किया, तो विपुलमति **'इसने घड़े का चिंतन किया है'** यह जानने के साथ यह भी जानता है कि इसके द्वारा सोचा हुआ घड़ा सोने का है, पाटलिपुत्रनगर का है, आज का बना हुआ है, महान् है, भीतर घर में रखा हुआ है । इस प्रकार अनेक विशेषणों से युक्त **'घट'** को जानता है ।

(10) चारण लब्धि – जिस लब्धि के प्रभाव से मानवीय शक्ति की सीमा से परे के क्षेत्रों में भी लब्धिधारी का गमनागमन होता है ।

(11) आशीविष लब्धि – आशी = दाढ़ विष = जहर अर्थात् जिनकी दाढ़ों में भयंकर जहर होता है वे **'आशीविष'** कहलाते हैं । इसके दो भेद हैं—कर्म आशीविष और जाति आशीविष ।

(12) कर्म आशीविष – पंचेन्द्रिय तिर्यंच, मनुष्य और आठवें सहस्त्रार देवलोक तक के देवता आदि अनेक प्रकार के जीव कर्म आशीविष हैं । ये जीव तप-चारित्र आदि अनुष्ठान के द्वारा अथवा अन्य किसी गुण से आशीविष साँप, बिच्छु, नाग आदि से साध्य-क्रिया करने में समर्थ होते हैं । अर्थात् ये शाप आदि देकर दूसरों का नाश करते हैं ।

देवों में यह लब्धि अपर्याप्त-अवस्था में ही होती है । कोई जीव प्राक्-भव सम्बन्धी लब्धि के संस्कार को लेकर देवता में उत्पन्न होता है उसे अपर्याप्तावस्था में यह लब्धि रहती है । पर्याप्त अवस्था में लब्धि-निवृत्त हो जाती है । जो देवता पर्याप्तावस्था में शापादि प्रदान करते हैं, वह उनकी भव-प्रत्ययिक शक्ति का परिणाम है और ऐसी शक्ति सभी देवों में होती है । जबकि लब्धि वही कहलाती है, जो विशिष्ट साधना एवं आराधना से उत्पन्न होती है ।

(13) गणधर लब्धि – जिस लब्धि के प्रभाव से व्यक्ति द्वादशांगी का प्रणेता तीर्थंकर परमात्मा का प्रधान शिष्य गणधर बनता है ।

(14) पूर्वधर लब्धि – तीर्थंकर परमात्मा द्वादशांगी का मूल आधारभूत जो सर्वप्रथम उपदेश गणधरों को देते हैं, वह पूर्व कहलाता

है। गणधर उस उपदेश को सूत्र रूप में व्यवस्थित करते हैं। पूर्व की संख्या चौदह है, जिन्हें दस से चौदह पूर्व का ज्ञान होता है, वे पूर्वधर कहलाते हैं। जिस लब्धि के प्रभाव से पूर्वों का ज्ञान प्राप्त होता है, वह पूर्वधर लब्धि कहलाती है।

(15) अर्हत् लब्धि – जिस लब्धि के प्रभाव से अर्हत् पद प्राप्त होता है।

(16) चक्रवर्ती लब्धि – जिस लब्धि के प्रभाव से चक्रवर्ती पद की प्राप्ति होती है। चक्रवर्ती चौदह रत्न और छः खण्ड का स्वामी होता है।

(17) बलदेव लब्धि – जिस लब्धि के प्रभाव से बलदेव पद की प्राप्ति होती है।

(18) वासुदेव लब्धि – जिस लब्धि के प्रभाव से वासुदेव पद की प्राप्ति होती है। वासुदेव सात रत्न और त्रिखण्ड का अधिपति होता है।

(19) क्षीरमधुसर्पिराश्रव लब्धि – जिस लब्धि के प्रभाव से वक्ता का वचन, श्रोता को दूध, मधु और घृत के स्वाद की तरह मधुर लगता है जैसे, वज्रस्वामी आदि के वचन सुनने में अति मधुर लगते थे। यहाँ यह तात्पर्य है कि गन्ने का चारा चरने वाली एक लाख गायों का दूध पचास हजार गायों को...उनका दूध...पच्चीस हजार गायों को...इस प्रकार आधा-आधा करके अंत में एक गाय को पिलाने पर उसका दूध एवं उससे बना मंद आंच पर पकाया हुआ, विशिष्ट वर्णादि से युक्त घी कैसा मधुर होता है, उससे अधिक मधुर-वचन, इस लब्धि के प्रभाव से मिलता है। ऐसा दूध और घी मन की संतुष्टि एवं शरीर की पुष्टि करने वाला होता है, वैसे इस लब्धि से संपन्न आत्मा का वचन, श्रोता के तन-मन को आह्लादित करता है। अमृताश्रवी, इक्षुरसाश्रवी आदि लब्धियाँ भी इसी प्रकार समझना। अथवा–जिस लब्धि के प्रभाव से पात्र में आया हुआ स्वादरहित भी आहार, दूध, घी एवं मधु की तरह स्वादिष्ट एवं पुष्टिकर बन जाता है।

(20) कोष्ठक-बुद्धि – कोठी में डाला हुआ अनाज बहुत समय तक सुरक्षित रह सकता है, वैसे जिस लब्धि के प्रभाव से सुना हुआ या पढ़ा हुआ शास्त्रार्थ चिरकाल तक यथावत् याद रहता है ।

(21) पदानुसारी लब्धि – जिस लब्धि के प्रभाव से एक पद सुनकर अनेक पदों का ज्ञान हो जाता है ।

(22) बीज-बुद्धि – जिस लब्धि की शक्ति से बीज-भूत एक अर्थ को सुन कर अश्रुत अनेक अर्थों का ज्ञान होता है । यह लब्धि गणधर-भगवन्तों को होती है । वे तीर्थंकर परमात्मा के मुख से अर्थ-प्रधान उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य रूप त्रिपदी को सुनकर अनन्त अर्थों से भरी हुई द्वादशांगी की रचना करते हैं ।

(23) तेजोलेश्या – जिस लब्धि से, आत्मा क्रुद्ध होकर अपने तैजस्-पुद्गल को ज्वाला के रूप में बाहर निकालकर अपनी अप्रिय वस्तु, व्यक्ति आदि को भस्म कर सकता है ।

(24) शीतलेश्या – जिस लब्धि से आत्मा अपने शीत तेज-पुद्गलों को तेजोलेश्या से जलते हुए आत्मा पर डालकर, उसे भस्म होने से बचा सकता है । भगवान महावीर के समय में कूर्म गाँव में अति करुणाशील वैशंपायन नाम का तपस्वी अज्ञानतप करता था । स्नानादि के अभाव में उसके सिर में अगणित जूएँ पड़ गई थीं । उसे देखकर गोशालक ने **'यूका शय्यातर'** (जुंओं का जाला) कहकर उसका उपहास किया था । इससे अत्यन्त क्रुद्ध होकर उस तपस्वी ने गोशालक को भस्म करने हेतु तेजोलेश्या का प्रयोग किया । तेजोलेश्या से गोशालक की रक्षा करने के लिये अत्यंत करुणाशील भगवान महावीर ने तत्काल शीतलेश्या का प्रयोग किया ।

(25) आहारक लब्धि – प्राणीदया, तीर्थंकर की ऋद्धि एवं अपने संशयों का निराकरण करने के लिये जिस लब्धि से चौदह पूर्वधर साधक अन्य क्षेत्र में जाने योग्य एक हाथ प्रमाण का आहारक शरीर बनाते हैं ।

(26) वैक्रिय लब्धि – जिस लब्धि से मनचाहे रूप बनाने की

शक्ति प्राप्त होती है। यह लब्धि मनुष्य और तिर्यंच को आराधनाजन्य एवं देव-नरक को सहज होती है।

(27) अक्षीणमहानसी लब्धि – जिस लब्धि-शक्ति से छोटे से पात्र में लायी हुई भिक्षा लाखों लोकों को तृप्त कर देती है, फिर भी पात्र भरा रहता है। पात्र तभी खाली होता है, जब लब्धिधारी स्वयं उस भिक्षा का उपयोग करता है।

(28) पुलाक लब्धि – जिस लब्धि के प्रभाव से साधक शासन व संघ की सुरक्षा के लिये चक्रवर्ती की सेना से भी अकेला जूझ सकता है।

प्रश्न 610 :– कल्पवृक्ष के 10 प्रकार कौनसे है ?

उत्तर :– 1. मत्तांगदा या मत्तांगा – मादक पदार्थों को देने वाले मत्तांगदा अथवा मत्त=मद, अंग=कारण अर्थात् मादक पदार्थ जिनमें हैं वे मत्तांग। इन कल्पवृक्षों के फल स्वभावत: विशिष्ट बल-कान्ति को देने वाले रस से युक्त एवं सुगन्धित मद्य से पूर्ण होते हैं। परिपक्व होने के कारण इनसे सतत मद झरता रहता है।

2. भृतांगा :– वस्तुओं को भरने के पात्र, भाजन को देने वाले **'भृतांगा'** कल्पवृक्ष हैं। इन वृक्षों पर सहज स्वाभाविक सोने, चांदी व रत्नमय, थाली, कटोरी, कलश, चम्मच आदि विविध आकार में परिणत, अनेक पात्र फल की तरह शोभायमान लगे रहते हैं। पात्रों के उत्पादक होने से वृक्ष भी भृतांग कहलाते हैं।

3. त्रुटितांगा :– ऐसे वृक्ष जो तत, वितत, घन, शुषिर आदि अनेक प्रकार के वादित्रों से फल की तरह लदे रहते हैं। तत=वीणादि, वितत=पटह आदि, घनं=झालर, शुषिर=ढोल।

4. दीपांग :– सुवर्ण और मणियों से निर्मित दीपक जिस प्रकार प्रकाश फैलाते हैं वैसे **'दीपांग'** कल्पवृक्ष स्वाभाविक प्रकाशमान होते हैं। इनमें **'दीप'** फल की तरह लगे रहते हैं।

5. ज्योतिषांगा :– सूर्य मण्डल की तरह सर्वत्र प्रकाश करने वाले। इनमें फल की तरह **'सूर्य के आकार वाले'** फल लगे रहते हैं।

6. चित्रांगा :– नानावर्णयुक्त कुसुममालाओं से सुशोभित कल्पवृक्ष ।

7. चित्ररसा :– युगलिकों के भोजन योग्य, दाल-भात, मिष्टान्न आदि से भी अति सुस्वादु, इन्द्रियों के पोषक, बलवर्धक विविधरसपूर्ण फलवाले ।

8. मण्यंगा :– स्वाभाविक परिणाम से परिणत मणिमय अनेकविध आभूषण जैसे कहे, कुण्डल, मुकुट, बाजूबन्द, हार आदि से फलों की तरह सुशोभित ।

9. गेहाकार :– इन कल्पवृक्षों का स्वाभाविक परिणमन घरों की तरह होता है । उन्नत प्रकार, सीढियाँ, चित्रशाला बड़े-बड़े गवाक्ष, अनेक गुप्त व प्रकट अन्तर गृह, अत्यन्त स्निग्ध आंगन वाले महलवत् घरों से युक्त ये कल्पवृक्ष होते हैं । जिनमें युगलिक निवास करते हैं ।

10. अनग्ना :– विविध प्रकार के वस्त्रों को देने वाले जिससे निवास करने वाले लोग नग्न नहीं रहते वे **'अनग्ना'** कल्पवृक्ष हैं । इन कल्पवृक्षों में स्वाभाविक रूप से देवदूष्य की तरह सुन्दर, कोमल व मनोहर अनेक प्रकार के वस्त्र पैदा होते हैं ।

प्रश्न 611 :– कर्मोदयजन्य संज्ञा के चार भेद कौनसे है ?

उत्तर :– 1. आहारसंज्ञा – क्षुधा वेदनीय के उदय से तथाविध आहारादि के पुद्‌गलों को ग्रहण करने का अभिलाष आहार संज्ञा है ।

आहारसंज्ञा की उत्पत्ति के चार कारण है–

1) अवमकोष्ठता=खाली पेट 2) क्षुधावेदनीय कर्म का उदय (3) भक्तकथा का श्रवण (4) सतत आहार का चिन्तन ।

2. भयसंज्ञा – भय मोहनीय के उदय से होने वाली अनुभूति भयसंज्ञा है । नेत्र, मुख आदि की विक्रिया तथा रोमांच आदि इसके लक्षण हैं ।

भयसंज्ञा की उत्पत्ति के चार कारण है–

1) हीनसत्त्वता–शौर्य का अभाव 2) भयमोहनीय का उदय 3) भयोत्पादक बात सुनना, दृश्य देखना 4) सात प्रकार के भयों का चिंतन ।

3. परिग्रह संज्ञा – लोभ मोहनीय के उदय से आसक्तिपूर्वक सचित्त व अचित्त द्रव्य को ग्रहण करना परिग्रह संज्ञा है ।

परिग्रह संज्ञा की उत्पत्ति के चार कारण हैं–

1) परिग्रहयुक्तता–त्याग का अभाव 2) लोभवेदनीय का उदय 3) परिग्रहवर्धक बात सुनना या दृश्य देखना 4) परिग्रह का चिंतन ।

4. मैथुन संज्ञा – वेदोदयवश स्त्री या पुरुष को देखना, देखकर प्रसन्न होना, ठहरना, कांपना आदि क्रिया मैथुनसंज्ञा है ।

मैथुन संज्ञा की उत्पत्ति के चार कारण हैं–

1) मांस, शोणित की वृद्धि 2) मोहनीय कर्म का उदय 3) कामकथा का श्रवण 4) मैथुन का चिंतन ।

प्रश्न 612 :– पर्याप्ति के छः भेद कौनसे हैं ?

उत्तर :– 1. आहार पर्याप्ति 2. शरीर पर्याप्ति 3. इन्द्रिय पर्याप्ति 4. भाषा पर्याप्ति 5. श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति 6. मन पर्याप्ति ।

1. आहार पर्याप्ति – आहार के पुद्‌गलों को ग्रहण करके उन्हें खल, रस रूप में परिणत करने की जीव की शक्ति विशेष ।

2. शरीर पर्याप्ति – रस रूप में परिणत आहार के पुद्‌गलों को रस, रक्त, माँस, मेद, हड्डी, मज्जा और वीर्य इन सात धातुओं के रूप में परिणमन करने की जीव की शक्ति विशेष ।

3. इन्द्रिय पर्याप्ति – सात धातु के रूप में परिणत हुए आहार से इन्द्रियों की रचना के योग्य द्रव्य को ग्रहण कर उसे इन्द्रियों के रूप में परिणत करने वाली जीव की शक्ति विशेष ।

4. भाषा पर्याप्ति – भाषावर्गणा के दलिकों को ग्रहण करके उन्हें भाषा के रूप में बदलकर भाषा के आलम्बन द्वारा अर्थात् वचनरूप में उनका प्रयोग करके उन दलिकों का पुनः विसर्जन करने वाली जीव की शक्ति विशेष ।

5. श्वासोच्छ्वास – श्वास योग्य वर्गणा के दलिकों को ग्रहण करके श्वासोच्छ्वास रूप में बदलने वाली तथा उन्हीं पुद्‌गलों का आलंबन कर उन्हें छोड़ने वाली शक्ति विशेष ।

6. मनः पर्याप्ति – मनोवर्गणा के दलिकों को ग्रहण करके उन्हें

मन रूप में परिणत कर उन का आलम्बन लेकर पुनः उन्हें विसर्जन करनेवाली जीव की शक्ति विशेष ।

प्रश्न 613 :– किसको कितनी पर्याप्ति होती है ?

उत्तर :– (1) एकेन्द्रिय=चार पर्याप्ति (आहार पर्याप्ति, शरीर पर्याप्ति, इन्द्रिय पर्याप्ति, श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति)

(2)-(3) विकलेन्द्रिय, असंज्ञी=पांच पर्याप्ति (भाषा पर्याप्ति सहित पूर्वोक्त चार=पांच)

(4) संज्ञी-पंचेन्द्रिय=छः पर्याप्ति (मन पर्याप्ति सहित पूर्वोक्त पांच=छः) ।

जो जीव स्वयोग्य पर्याप्तियों को पूर्ण किये बिना ही मरते हैं, वे भी आहार, शरीर और इन्द्रिय इन तीन पर्याप्तियों को तो पूरा करके ही मरते हैं । ऐसे जीव मरने से पूर्व अन्तर्मुहूर्त में परभव का आयु बाँधते हैं । अन्तर्मुहूर्त का अबाधाकाल भोगते हैं पश्चात् ही मरते हैं । अन्तर्मुहूर्त के अनेक भेद होने से पूर्वोक्त बात संगत है ।

प्रश्न 614 :– जीव अपने योग्य पर्याप्तियों का प्रारम्भ तो उत्पत्ति के समय ही कर देता है, किन्तु उनकी समाप्ति कब होती है ?

उत्तर :– 1. आहार पर्याप्ति = एक समय में ।

2. शरीर पर्याप्ति = अन्तर्मुहूर्त में ।

3. इन्द्रिय पर्याप्ति = अन्तर्मुहूर्त में (शरीर पर्याप्ति के पश्चात् अन्तर्मुहूर्त में पूर्ण होती है)

4. श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति = अन्तर्मुहूर्त में (इन्द्रिय पर्याप्ति के पश्चात् अन्तर्मुहूर्त में पूर्ण होती है)

5. भाषा पर्याप्ति = अन्तर्मुहूर्त में (श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति के पश्चात् अन्तर्मुहूर्त में पूर्ण होती है)

6. मनः पर्याप्ति = अन्तर्मुहूर्त (भाषा पर्याप्ति के पश्चात् अन्तर्मुहूर्त में पूर्ण होती है)

प्रश्न 615 :– समुद्घात कितने प्रकार के होते हैं ?

उत्तर :– 1) वेदनीय समुद्घात–वेदना द्वारा कर्म-दलिकों का हनन वेदनीय समुद्घात है । असह्य वेदना से व्याकुल जीव अपनी

शक्ति द्वारा अनंतानंत कर्मस्कंधों से युक्त अपने आत्म-प्रदेशों को शरीर से बाहर निकालकर उनसे मुख, पेट, कान स्कंध आदि के छिद्रों को भरकर शरीर की लम्बाई और चौड़ाई में आत्म प्रदेशों को व्याप्त कर देता है। इससे जीव बहुत से अशाता वेदनीय कर्म के दलिकों को भोगकर क्षीण कर देता है। यह प्रक्रिया अन्तर्मुहूर्त तक चलती है। तत्पश्चात् जीवात्मा पुनः शरीरस्थ हो जाता है। इस क्रिया का नाम वेदना समुद्घात है।

2) कषाय समुद्घात–कषाय द्वारा कर्म-दलिकों का हनन कषाय समुद्घात है। तीव्र कषाय के उदय से व्याकुल जीव अपनी शक्ति द्वारा अनन्तानन्त कर्म-प्रदेशों से अनुविद्ध अपने आत्म-प्रदेशों को बाहर निकालकर उनसे मुख, पेट, कान, स्कंध आदि के छिद्रों को भरकर शरीर की लम्बाई और चौड़ाई में आत्मप्रदेशों को व्याप्त कर देता है। इससे जीव बहुत से कषाय मोहनीयकर्म के दलिकों को भोगकर क्षीण कर देता है। यह प्रक्रिया अन्तर्मुहूर्त तक चलती है, तत्पश्चात् जीवात्मा पुनः शरीरस्थ हो जाता है। यह क्रिया कषाय समुद्घात है।

3) मरण समुद्घात–मृत्यु के समय जीव के प्रयास द्वारा आयु-कर्म के दलिकों का हनन करना, मरण समुद्घात है। मृत्यु के अंतिम समय में व्याकुल बनी आत्मा अन्तर्मुहूर्त पहले ही अपने आत्म-प्रदेशों को शरीर से बाहर निकालकर उनसे मुख, पेट, कान, स्कंध आदि के छिद्रों को भरकर अपने उत्पत्ति-स्थान तक लम्बा (जघन्य से अंगुल के असंख्यातवें भाग जितना और उत्कृष्ट से असंख्याता योजन लम्बा) और देह-प्रमाण स्थूल दंड की रचना करता है। अन्तर्मुहूर्त तक इसी स्थिति में रहकर आयुष्य-कर्म के बहुत से पुद्गलों को उदीरणा द्वारा उदय में लाकर घात करता है। यह प्रक्रिया मरण समुद्घात है।

4) वैक्रिय समुद्घात–वैक्रिय शरीर के प्रारम्भ काल में पूर्वबद्ध वैक्रिय के स्थूल पुद्गलों का घात करना वैक्रिय समुद्घात है। वैक्रिय लब्धि सम्पन्न आत्मा वैक्रिय शरीर बनाते समय सर्वप्रथम अपने आत्म प्रदेशों को शरीर से बाहर निकालकर उन से स्वदेह प्रमाण स्थूल एवं संख्येय योजन प्रमाण दीर्घ दण्ड बनाता है। उस समय जीव पूर्वबद्ध

वैक्रिय के पुद्गलों को उदीरणा द्वारा उदय में लाकर घात करता है और नये वैक्रिय-पुद्गलों को ग्रहण करते हुए उत्तर-देह की रचना करता है। यह वैक्रिय समुद्घात है।

5) तैजस् समुद्घात–तेजो-लेश्या की लब्धि से सम्पन्न आत्मा जब किसी के प्रति क्रुद्ध बनता है, तो सात-आठ कदम पीछे हटकर अपने आत्म-प्रदेशों को बाहर निकालकर स्वदेह प्रमाण-स्थूल और जिस स्थान में तेजो-लेश्या (शीत-लेश्या) डालनी है, वहाँ तक लम्बा (संख्यात-योजन दीर्घ) दंड बनाता है। इससे उसके क्रोध का लक्ष्य बनी वस्तु या व्यक्ति भस्म हो जाती है। इस प्रकार तैजस् शरीर के बहुत से पुद्गलों का क्षय करता है। इसे तेजस् समुद्घात कहते है।

6) आहारक समुद्घात–आहारक शरीर के प्रारम्भ काल में जो होता है वह आहारक समुद्घात है। आहारक लब्धि-सम्पन्न-आत्मा आहारक शरीर बनाते समय सर्वप्रथम अपने आत्म प्रदेशों को शरीर से बाहर निकालकर उनका स्वदेह-प्रमाण स्थूल एवं संख्येय योजन प्रमाण दीर्घ दंड बनाता है। उससे पूर्वबद्ध आहारक के पुद्गलों को उदीरणा द्वारा उदय में लाकर घात करता है, यह आहारक समुद्घात है। नये आहारक पुद्गलों को ग्रहण कर आहारक शरीर बनाता है। इस शरीर की रचना आहारक लब्धि-सम्पन्न चौदह पूर्वधर मुनि ही करते है।

7) केवली समुद्घात–जिन केवलज्ञानी परमात्मा का आयु मात्र अन्तर्मुहूर्त्त प्रमाण रह गया और नाम गोत्र व वेदनीय कर्म की स्थिति अधिक है उन्हें इन तीनों कर्मों की स्थिति को आयुतुल्य करने के लिये केवली समुद्घात करना पड़ता है। समुद्घात करने वाले केवली सर्वप्रथम अपने आत्म-प्रदेशों को बाहर निकालकर शरीर प्रमाण स्थूल और नीचे से ऊपर चौदहराज प्रमाण दीर्घदंड बनाते हैं। दूसरे समय में स्वदेह प्रमाण मोटा तथा उत्तर-दक्षिण में लोक के अन्त भाग तक लम्बा कपाट बनाते हैं। तीसरे समय में ऐसा ही एक कपाट पूर्व-पश्चिम में लोक के अन्त तक लम्बा बनाते हैं। उस समय आत्म-प्रदेशों की स्थिति मन्थनी की तरह हो जाती है। चौथे समय में मन्थनी के बीच का रिक्त स्थान भरते है। उस समय सम्पूर्ण लोक आत्म-प्रदेशों से व्याप्त

बन जाता है । तत्पश्चात् पाँचवें समय में मन्थनी के अन्तरों में भरे गये आत्म-प्रदेशों का संकोच करते हैं । छट्ठे समय में मन्थनी के आकार का संहरणकर कपाट रूप शेष रखते हैं । सातवें समय में कपाट का भी संहरण कर दंडाकार शेष रखते है । आठवें समय में दंड का भी संहरणकर सभी आत्म प्रदेशों को पुनः शरीरस्थ कर लेते हैं । इस प्रकार आठ समय का केवली समुद्घात करके आयु की अपेक्षा अधिक स्थिति वाले वेदनीय, नाम और गोत्र कर्म की निर्जरा करते हैं ।

समुद्घात का काल प्रमाण—वेदनीय-कषाय, मरण-वैक्रिय तैजस्-आहारक समुद्घात का काल प्रमाण अन्तर्मुहूर्त्त का है ।

केवली समुद्घात आठ समय का है ।

प्रश्न 616 :— जिनमंदिर सम्बन्धी 84 आशातनाएं कौनसी है ?

उत्तर :— आशाताना = आयं + शातना, आय = लाभ, आत्म-कल्याणकारी सम्पत्ति के अमोघकारण भूत ज्ञानादि । शातना = उनका नाश करने वाली आशातना कहलाती है ।

1. कफ थूंकना । 2. क्रीडा करना । 3. कलह करना । 4. कला अभ्यास करना, परेड मैदान की तरह मंदिर में धनुष आदि का अभ्यास करना । 5. कुल्ला करना । 6. तंबोल आदि खाना । 7. पीक थूंकना । 8. गाली गलौच करना । 9. टट्टी-पेशाब करना । 10. स्नानादि करना । 11. केश काटना (मुंडन करना) । 12. नाखून काटना । 13. रक्त आदि डालना । 14. मिठाई आदि खाना । 15. घाव आदि को कुरेदना । 16. दवाई आदि लेकर पित्त निकालना । 17. वमन करना । 18. दाँत आदि फेंकना या साफ करना । 19. मालिश करना । 20. गाय, भैंस, बकरी आदि बाँधना । 21.-28. दाँत, नाक, आँख, कान, नाखून, गाल, सिर और शरीर का मैल डालना । 29. भूत आदि के मंत्र की साधना एवं राजा आदि के कार्य की चर्चा करना । 30. सगाई, विवाह आदि तय करना । 31. हिसाब-किताब करना । 32. धन आदि का बँटवारा करना । 33. निजी सम्पत्ति मंदिर में रखना । 34. अनुचित आसन से बैठना, जैसे पाँव पर पाँव रखकर बैठना । 35.-39. गोबर, वस्त्र, दाल, पापड बडी आदि सुखाना । 40. राजा, भाई, बन्धु व

लेनदार के भय से मंदिर के गुप्तग्रह आदि में छूपना । 41. पुत्र, स्त्री आदि के वियोग में रुदन करना । 42. विकथा करना । 43. गन्ने आदि को साफ करना अथवा धनुष बाण आदि बनाना । 44. गाय, घोड़ा आदि रखना । 45. आग जलाकर तापना । 46. रसोई बनाना । 47. सिक्के आदि का परीक्षण करना । 48. यथाविधि निस्सीहि न करना । 49-52. छत्र, चामर, शस्त्र, उपानह आदि धारण करना । 53. मन को स्थिर न करना । 54. हाथ-पैर आदि दबाना । 55. सचित्त का त्याग न करना । 56. अचित्त, हार, अंगूठी आदि आभूषणों का त्यागकर मंदिर में जाना (इससे लोकापवाद होने की संभावना है) 57. जिनेश्वर को देखते ही नमस्कार न करना । 58. एक वस्त्र का उत्तरासन धारण न करना । 59. मुकुट धारण करना । 60. पुष्प आदि से निर्मित आभरण मस्तक पर धारण करना । 61. साफा, पगड़ी आदि धारण करना । 62. कबूतर, नारियल आदि की शर्त लगाना । 63. गेंद, गोली, कोड़ी इत्यादि खेलना । 64. पितर आदि के निमित्त जिनमंदिर में पिण्डदान करना । 65. भांड की तरह तालियाँ आदि बजाना । 66. तिरस्कार सूचक शब्द बोलना । 67. युद्ध आदि करना । 68. कर्जदार को मंदिर मे बंद करना । 69. केशों को खोलना, सुखाना । 70. पालथी लगाकर बैठना । 71. पाहुडी पहनना (पाहुडी = काष्ठ की पादुका) 72. पैर फैलाना । 73. सीटी, चुटकी, पीपाड़ी आदि बजाना । 74. हाथ पाँव आदि धोकर कीचड़ करना । 75. शरीर, वस्त्र आदि पर लगी हुई धूल झाड़ना । 76. मैथुन सेवन करना । 77. जूं लीख आदि डालना । 78. भोजन करना । 79. गुह्य=नग्न होना अथवा `जुज्झ' ऐसा पाठ हो तो अर्थ होगा कि दृष्टि-युद्ध, बाहु-युद्ध आदि करना । 80. वैद्य कर्म करना । 81. क्रय-विक्रय करना । 82. सोना, लेटना । 83. पीने या पिलाने के लिए जलादि रखना या पीना । 84. स्नान करना, हाथ-पैर आदि धोना ।

पूर्वोक्त आशातनाओं का त्याग करना चाहिये । इनके अतिरिक्त और भी हँसना, कूदना आदि सावद्य चेष्टाएँ आशातना के अन्तर्गत समझनी चाहिये ।

विवेचन

योनि = जहाँ तैजस्-कार्मण शरीर वाले जीवों का औदारिक, वैक्रिय आदि शरीर प्रायोग्य पुद्गल स्कन्धों के साथ मिश्रण होता है वह योनि कहलाती है । अर्थात् जीवों का उत्पत्तिस्थान `योनि' है ।

1. पृथ्विकाय–7 लाख
2. अप्काय–7 लाख
3. तेउकाय–7 लाख
4. वायुकाय–7 लाख
5. प्रत्येक वनस्पति–10 लाख
6. साधारण वनस्पति–14 लाख
7. द्वीन्द्रिय–2 लाख
8. त्रीन्द्रिय–2 लाख
9. चतुरिन्द्रिय–2 लाख
10. नारक–4 लाख
11. देवता–4 लाख
12. तिर्यंच पंचेन्द्रिय–4 लाख
13. मनुष्य–14 लाख

कुल 84 लाख जीवयोनि है ।

प्रश्न 617 :– जीव अनन्त है इसलिये उनके उत्पत्तिस्थान भी अनन्त होने चाहिये, 84 लाख ही कैसे ?

उत्तर :– यद्यपि जीव अनन्त हैं तथापि उनके उत्पत्ति स्थान अनन्त नहीं हो सकते । कारण सभी जीवों का सामान्य आधारभूत लोक असंख्य प्रदेशी है तथा विशेष आधारभूत नरक निष्कुट (नारकों का उत्पत्ति स्थान,) देवशय्या (देवताओं का उत्पत्ति स्थान), साधारण व प्रत्येक जीवों के शरीर भी असंख्याता ही हैं । अतः सभी जीवों के उत्पत्ति स्थान कुल मिलाकर भी अनन्त नहीं हो सकते ।

प्रश्न 618 :– पूर्व कथनानुसार यद्यपि उत्पत्ति स्थान अनन्त नहीं हैं तथापि असंख्याता तो हैं ही । अतः असंख्याता क्यों नहीं कहा ?

उत्तर :– सभी जीवों के उत्पत्ति स्थान (योनि) यद्यपि अलग-अलग है तथापि वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्शादि की साम्यता के कारण कई उत्पत्ति स्थान परस्पर एक माने जाते हैं । अतः ज्ञानियों की दृष्टि में परस्पर वर्णादि की भिन्नता वाले उत्पत्ति स्थान 84 लाख ही होते हैं ।

सामान्यतः समान वर्ण, गंध, रस और स्पर्श वाली लाखों योनियाँ अलग-अलग होने पर भी जातीय दृष्टि से सभी एक मानी जाती हैं ।

प्रश्न 619 :– योनि और कुल में क्या अन्तर है ?

उत्तर :– जीवों का उत्पत्ति स्थान **'योनि'** कहलाती है। गोबर आदि बिच्छु का उत्पत्ति स्थान होने से उसकी योनि है। समान योनि वाले जीवों की अनेक जातियाँ पृथक्-पृथक् कुल है। जैसे गोबर में कृमि, कीट, बिच्छू आदि अनेक जाति वाले जीव उत्पन्न होते हैं, उनकी योनि एक होने पर भी कुल अलग-अलग हैं। कृमिकुल, कीटकुल, बिच्छूकुल आदि।

प्रश्न 620 :– योनि के तीन प्रकार कौनसे है ?

उत्तर :– 1) शीतयोनि 2) उष्णयोनि 3) मिश्रयोनि।

इनमें से नारकों की शीत और उष्णयोनि है।

(क) प्रथम, द्वितीय और तृतीय नरक में उष्णवेदना होने से उनकी **'शीतयोनि'** है।

(ख) चतुर्थ नरक के उष्णवेदना वाले नरकावास की **'शीतयोनि'** है।

(ग) चतुर्थ नरक के शीतवेदना वाले नरकावास की **'उष्णयोनि'** है।

(घ) पञ्चम नरक के शीतवेदना वाले नरकावास की **'उष्णयोनि'** है।

(ङ) पञ्चम नरक के उष्णवेदना वाले नरकावास की **'शीतयोनि'** है।

(च) षष्ठ और सप्तम नरक के शीतवेदना वाले नरकावास की **'उष्णयोनि'** है।

• शीतयोनि वाले नारकों को उष्णवेदना और उष्णयोनि वालों को शीतवेदना अत्यंत कष्टप्रद होती है। पापकर्म की अधिकता के कारण, नरक के जीवों को द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव आदि सभी वस्तुयें प्रतिकूल ही मिलती हैं ताकि उन्हें वेदना अधिक हो, यही कारण है कि योनि भी उन्हें प्रतिकूल ही मिलती है।

(छ) देवता, गर्भज मनुष्य व गर्भज तिर्यंच की **'मिश्रयोनि'** है।

(ज) पृथ्वी, पानी, वायु, वनस्पति, विकलेन्द्रिय, संमूर्च्छिम तिर्यंच व संमूर्च्छिम मनुष्य की शीत, उष्ण व मिश्र तीनों योनियाँ हैं।

(झ) तेउकाय की उष्णयोनि है।

प्रश्न 621 :– पांच प्रकार के व्यवहार कौनसे है ?

उत्तर :– 1. आगमव्यवहार–आगम = पदार्थों का बोध कराने वाला ज्ञान । व्यवहार = प्रवृत्ति व निवृत्ति अर्थात् जीवादि पदार्थों के बोधक ज्ञान के अनुसार प्रवृत्ति व निवृत्ति आगम-व्यवहार है । केवलज्ञानी, मन:पर्यवज्ञानी, अवधिज्ञानी, चौदहपूर्वी, दसपूर्वी और नौपूर्वी आगम व्यवहारी है ।

2. श्रुतव्यवहार–निशीथ, कल्प, व्यवहार, दशाश्रुतस्कन्ध आदि ग्यारह अंग, चौदह-पूर्व, दसपूर्व और नौ पूर्व द्वारा होने वाला व्यवहार ।

यदि केवलज्ञानी उपलब्ध हो तो सर्वप्रथम केवली को ही आलोचना देना चाहिये । केवली के अभाव में मन:पर्यवज्ञानी को आलोचना देना चाहिये । इनके अभाव में अवधिज्ञानी को । इस प्रकार क्रमश: चौदह-पूर्वी, दस-पूर्वी तथा नव-पूर्वी को देना चाहिये ।

3. आज्ञा व्यवहार–जिनका जंघाबल क्षीण हो चुका है और जो एक दूसरे से दूर हैं, ऐसे गीतार्थों को जब आलोचना करनी होती है तो वे अपने गीतार्थ शिष्य को दूरस्थित गीतार्थ के पास भेजते हैं । गीतार्थ शिष्य न हो तो तीव्र धारणा-शक्ति वाले शिष्य को आगम की सांकेतिक भाषा में अतिचार बताकर आचार्य के पास भेजते हैं । आलोचना-दाता आचार्य यदि जाने में समर्थ हो तो स्वयं वहाँ जाकर उन्हें प्रायश्चित्त देते हैं या अपने गीतार्थ शिष्य को भेजकर उन्हें प्रायश्चित्त कराते हैं या जो मुनि आया है उसी के साथ सांकेतिक भाषा में प्रायश्चित्त भेजते हैं ।

4. धारणा व्यवहार–``गीतार्थ आचार्य ने तथाविध अपराध में द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, पुरुष व प्रतिसेवना को ध्यान में रखते हुए एवंविध प्रायश्चित्त दिया था'' उसे याद रखते हुए शिष्य द्वारा तथाविध अपराध में तथा प्रकार का प्रायश्चित्त देना धारणा व्यवहार है अथवा सामान्य योग्यता वाले किन्तु वैयावच्च आदि के द्वारा गच्छ के उपकारी शिष्य को कृपा कर गुरु द्वारा प्रायश्चित्त सम्बन्धी विशेष बातें आगम से उद्धृत कर बताना तथा शिष्य द्वारा उन पदों को उसी प्रकार याद रखना धारणा व्यवहार है ।

5. जीत व्यवहार–पूर्व महर्षियों के द्वारा जिन अपराधों की शुद्धि जिन महान तपों के द्वारा की गई थी उन अपराधों में वैसे तप करने की शक्ति के अभाव में गीतार्थ महापुरुष के द्वारा द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, संहनन, धैर्य आदि को देखकर प्रायश्चित्त देना जीत व्यवहार है ।

अथवा–गच्छ में आचार्य ने किसी विशेष कारण से प्रेरित होकर कोई व्यवहार चलाया हो और बहुत से लोगों ने उसका अनुसरण किया हो तो वह भी जीत व्यवहार कहलाता है ।

प्रश्न 622 :– आगम व्यवहारी ज्ञानी होने से स्वयं आलोचक के दोषों को जानते हैं, अतः वे स्वयं अपराधी को प्रायश्चित्त देते हैं या अपराधी के द्वारा अपने दोष प्रगट करने पर प्रायश्चित्त देते हैं ?

उत्तर :– यद्यपि आगम व्यवहारी ज्ञान के बल से अपने शिष्य के दोषों को जानते है तथापि शिष्य के द्वारा अपने दोष प्रकट किये बिना उसे प्रायश्चित्त नहीं देते । यदि शिष्य अपने दोषों को छुपाता हो तो आगम-व्यवहारी उसे अन्य के पास भेज देते हैं ।

यदि कोई निष्कपट आलोचक विस्मृति के कारण अपने दोषों को पूर्णतया नहीं बता पाया हो तो आगम व्यवहारी उसके विस्मृत दोषों को बताते है कि **``भूले हुए इन दोषों की तुम आलोचना करो ।''** क्योंकि वे जानते हैं कि निष्कपट होने से यह दोषों को स्वीकार अवश्य करेगा । पर जो मायावी है, वह कहने पर भी दोषों को स्वीकार नहीं करता, उसे नहीं बताते ।

प्रश्न 623 :– चौदह-पूर्वी आदि श्रुतज्ञानी होने से परोक्ष ज्ञानी हैं, वे प्रत्यक्ष-ज्ञानी कैसे हो सकते हैं ?

उत्तर :– यद्यपि चौदह-पूर्वी आदि परोक्ष ज्ञानी हैं, तथापि उनका ज्ञान प्रत्यक्ष तुल्य होने से जिसने जैसा दोष-सेवन किया है, उसे वे उसी तरह जानते हैं ।

प्रश्न 624 :– आगम-व्यवहारी आलोचक के सभी दोषों को जानते हैं तो फिर उनके सम्मुख अलग-अलग दोषों को प्रकट करने की क्या आवश्यकता है ? उनके सम्मुख आलोचक ऐसा ही कहे कि–भगवन् ! मेरे दोषों का प्रायश्चित्त दीजिये ।

उत्तर :– अपने मुँह से अपना अपराध स्वीकार करने में महान् लाभ है । इससे गुरु का प्रोत्साहन मिलता है कि **'वत्स ! तुम बड़े भाग्यशाली हो । तुमने अहं का विसर्जन करके आत्म-हित की भावना से अपने दोषों को प्रकट किया है । यह अति कठिन कार्य है ।'** इस प्रकार गुरु के प्रोत्साहन से आलोचक की भाव वृद्धि होती है और वह गुरु के प्रति श्रद्धावान् बनकर यत्किंचित् भी शल्य रखे बिना आलोचना लेता है तथा प्रदत्त आलोचना अच्छी तरह से पूर्ण कर अल्प काल में ही मोक्ष का वरण कर लेता है ।

प्रश्न 625 :– कायस्थिति किसे कहते है ?

उत्तर :– कायस्थिति–पृथ्विकायादि के जीव मरकर जितने समय तक एक काय में पुनः पुनः पैदा हो सकते हैं, वह काल जीव की **'कायस्थिति'** है ।

प्रश्न 626 :– पृथ्वीकाय आदि का कायस्थिति कितनी है ?

उत्तर :– • पृथ्वी, अप्, तेजस् और वायुकाय के जीवों की कायस्थिति, काल की अपेक्षा असंख्याता उत्सर्पिणी अवसर्पिणी है ।

• असंख्यात-लोकाकाश के प्रदेशों में से प्रतिसमय एक-एक प्रदेश का अपहार करने पर जितना समय लगता है इतनी उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल प्रमाण पृथ्वी आदि जीवों की कायस्थिति है ।

• काल की अपेक्षा वनस्पतिकाय की उत्कृष्ट काय-स्थिति अनन्त उत्सर्पिणी अवसर्पिणी है ।

प्रश्न 627 :– सूक्ष्म निरोद जीव के कितने भेद है ?

उत्तर :– • सूक्ष्म निगोद के जीव दो प्रकार के होते हैं–सांव्यवहारिक और असांव्यवहारिक ।

सांव्यवहारिक–सूक्ष्म निगोद से निकलकर जो जीव पृथ्वी आदि में उत्पन्न हो चुके हों अर्थात् जो जीव **'यह पृथ्विकायिक है' 'यह अप्कायिक है'** इत्यादि व्यवहार के योग्य बन चुके हों वे सांव्यवहारिक है । एक बार व्यवहार राशि में आने के बाद पुनः निगोद में चले जाने पर भी वह सांव्यवहारिक कहलाता है ।

असांव्यवहारिक–जो जीव अनादिकाल से सूक्ष्म निगोद में ही

पड़े हैं, अभी तक पृथ्वी आदि व्यवहार दशा में नहीं आये हैं वे असांव्यवहारिक हैं ।

पूर्वोक्त कायस्थिति सांव्यवहारिक जीवों की अपेक्षा से है । असांव्यवहारिक जीवों की अपेक्षा से तो वह अनादि है ।

प्रश्न 628 :– अव्यवहार राशि से निकलकर जीव व्यवहार राशि में कैसे आता है ?

उत्तर :– विशेषणवती ग्रंथ में कहा है–यह प्रकृति का नियम है कि जितने जीव व्यवहार राशि से निकलकर सिद्ध बनते हैं, उतने ही जीव अव्यवहार राशि से निकलकर व्यवहार राशि में आ जाते हैं। जो जीव अनादि सूक्ष्म निगोद से निकलकर अन्य जीवनिकाय अर्थात् पृथ्विकाय आदि में उत्पन्न होते हैं, वे जीव पृथ्वि...अप् आदि विविध व्यवहार के योग्य बन जाने के कारण सांव्यवहारिक कहलाते हैं। किन्तु जो अनादिकाल से सूक्ष्म निगोद में हैं, वे असांव्यवहारिक कहलाते हैं ।

पृथ्वी आदि में उत्पन्न हुए सांव्यवहारिक जीव यद्यपि पुन: निगोद में जा सकते हैं तथापि वहाँ वे जीव संव्यवहार राशि के ही कहलाते हैं, क्योंकि अब वे पृथ्वी अप् इत्यादि विविध व्यवहार के योग्य बन चुके हैं। असांव्यवहारिक जीव तो अनादि अनंतकाल तक पुन:पुन: निगोद में ही जन्म-मरण करते रहते हैं, पर कभी भी त्रसादि भाव को प्राप्त नहीं होते ।

विकलेन्द्रिय की कायस्थिति संख्याता हजार वर्ष की है ।

संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच व संज्ञी पञ्चेन्द्रिय मनुष्य की उत्कृष्ट कायस्थिति सात-आठ भव है ।

यथा–संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच व मनुष्य यदि सात भव तक सतत तिर्यंच व मनुष्य बने तो संख्याता वर्ष की आयु वाले ही बनते हैं । आठवां भव करे तो युगलिक मनुष्य (असंख्याता वर्ष की आयु वाले) का करते हैं । वहाँ से मरकर देवता बनते हैं । आठों भवों का उत्कृष्ट कालमान पूर्वकोटि पृथक्त्व अधिक (दो पूर्व क्रोड़ से नौ पूर्व क्रोड़) तीन पल्योपम है ।

- सभी जीवों की जघन्य कायस्थिति अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है ।

नोट

जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर, मरुधररत्न,
पू.आ. श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.
द्वारा मुख्यतया हिन्दी भाषा में आलेखित 262 पुस्तकों में से उपलब्ध एवं अवश्य पठनीय साहित्य-सूची

Sr. No.	पुस्तक का नाम	मूल्य	Sr. No.	पुस्तक का नाम	मूल्य
1.	पंच-प्रतिक्रमण सूत्र (भाग-1)	210/-	42.	आठ कर्म निवारण पूजाएं	200/-
2.	पंच-प्रतिक्रमण सूत्र (भाग-2)	220/-	43.	तत्त्वार्थ-सूत्र-भाग-1	200/-
3.	पंच-प्रतिक्रमण सूत्र (भाग-3)	125/-	44.	तत्त्वार्थ-सूत्र-भाग-2	200/-
4.	पंच-प्रतिक्रमण सूत्र (भाग-4)	135/-	45.	सज्झायों का स्वाध्याय	100/-
5.	आओ संस्कृत सीखें भाग-1	150/-	46.	सम्यग्दर्शन का सूर्योदय	160/-
6.	आओ संस्कृत सीखें भाग-2	400/-	47.	श्रमण क्रिया के मुख्य सूत्र	200/-
7.	आओ ! प्राकृत सीखें भाग-1	350/-	48.	पर्युषण अष्टाह्निका प्रवचन	120/-
8.	आओ ! प्राकृत सीखें भाग-2	300/-	49.	आओ ! पर्युषण प्रतिक्रमण करें !	150/-
9.	विवेकी बनो	90/-	50.	प्रतिक्रमण उपयोगी संग्रह	80/-
10.	प्रवचन-वर्षा	60/-	51.	मन के जीते जीत है	80/-
11.	आओ श्रावक बनें !	25/-	52.	प्रातः स्मरणीय महापुरुष भाग-1	300/-
12.	व्यसन-मुक्ति	100/-	53.	प्रातः स्मरणीय महापुरुष भाग-2	300/-
13.	श्रावक जीवन दर्शन	250/-	54.	प्रातः स्मरणीय महासतियाँ भाग-1	280/-
14.	सात वासुदेव-प्रतिवासुदेव बलदेव	50/-	55.	प्रातः स्मरणीय महासतियाँ भाग-2	300/-
15.	समाधि मृत्यु	80/-	56.	इन्द्रिय पराजय शतक	150/-
16.	Pearls of Preaching	60/-	57.	संबोह-सित्तरि (वैराग्य का अमृत कुंभ)	160/-
17.	New Message for a New Day	600/-	58.	आनन्दघन चौबीसी विवेचन	200/-
18.	Panch Pratikraman Sootra	100/-	59.	धर्म-बीज	140/-
19.	अमृत रस का प्याला	300/-	60.	45 आगम परिचय	200/-
20.	ध्यान साधना	40/-	61.	नित्य देववंदन	निशुल्क
21.	जीव विचार विवेचन	100/-	62.	श्री भद्रंकर प्रश्नोत्तरी	170/-
22.	नवतत्त्व विवेचन	110/-	63.	अध्यात्मयोगी से प्रश्नोत्तर	160/-
23.	दंडक सूत्र विवेचन	90/-	64.	कोयंबत्तुर-प्रवचन	150/-
24.	लघु संग्रहणी	140/-	65.	दक्षिण भारत प्रवचन	160/-
25.	तीन भाष्य	150/-	66.	महावीर-प्रभु की अंतिम देशना	220/-
26.	पहला कर्मग्रन्थ	160/-	67.	योग की आठ दृष्टियाँ	430/-
27.	दूसरा कर्मग्रन्थ	55/-	68.	साचा माणस बनीए ! (गुजराती)	300/-
28.	तीसरा कर्मग्रन्थ	90/-	69.	शुभ-संदेश	250/-
29.	चौथा कर्मग्रन्थ	140/-	70.	भक्ति से मुक्ति	200/-
30.	पाँचवाँ कर्मग्रन्थ	160/-	71.	सहनशील बनों (22 परीषह)	180/-
31.	छठा-कर्मग्रन्थ	210/-	72.	नवपद आराधना विधि	नवपद आराधना
32.	गणधर-संवाद	80/-	73.	शत्रुंजय की भाव यात्रा	230/-
33.	आओ ! उपधान पौषध करें !	130/-	74.	नवकार-प्रवचन	180/-
34.	विविध देववंदन	100/-	75.	10 श्रमण-धर्म	250/-
35.	भव आलोचना	10/-	76.	श्री सिद्धहेमचन्द्र-शब्दानुशासनम् (भाग:-1)	1170/-
36.	आध्यात्मिक पत्र	60/-	77.	श्री सिद्धहेमचन्द्र-शब्दानुशासनम् (भाग:-2)	1040/-
37.	आत्म-उत्थान का मार्ग-भाग-1	125/-	78.	श्री सिद्धहेमचन्द्र-शब्दानुशासनम् (भाग:-3)	900/-
38.	आत्म-उत्थान का मार्ग-भाग-2	175/-	79.	श्री सिद्धहेमचन्द्र-शब्दानुशासनम् (भाग:-4)	1270/-
39.	आत्म-उत्थान का मार्ग-भाग-3	150/-	80.	समाधि की साधना	300/-
40.	श्री नमस्कार महामंत्र	180/-	81.	शंका समाधान (भाग-5)	160/-
41.	परमेष्ठि-नमस्कार	180/-	82.	प्रवचन का अमृत	200/-

पुस्तक प्राप्ति स्थान : दिव्य सन्देश प्रकाशन C/o. सुरेन्द्र जैन, Office No. 304, 3rd Floor, बे व्यु बिल्डींग, विंग-ईस्ट बे, डॉ. एम.बी. वेलकर स्ट्रीट, कालबादेवी, मुंबई-400 002. M. 84 84 84 84 51 (only whatsapp)

Kamal PRINTER'S
M. 9820530299